झाँसी का गौरव

झाँसी का गौरव

(उपन्यास)

शिक्षा विभाग (पुस्तकालय प्रकोष्ठ)
उत्तर प्रदेश के सौजन्य से.

इन्द्रा 'स्वप्न'

दो शब्द

"मुझे तो केवल आधा सेर चावल की आवश्यकता थी, विधवा-धर्म छोड़कर यह सब करने की मुझे आवश्यकता न थी। पर हिन्दू-धर्म के अभिमान के कारण ये कर्म (युद्ध) करने को तैयार हुई।" ये शब्द हैं उस भारतीय वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के, जिसने भारतीय स्वातन्त्र्य की मशाल हाथ में लेकर महलों के अवगुण्ठन को छोड़ अंग्रेज सरकार के विरुद्ध युद्ध का कण्टकाकीर्ण मार्ग अपनाया। महारानी का चरित्र प्रेरणा-प्रदायक प्रदीप है। इस उपन्यास में सरल भाषा में मैंने उनके जीवन के विविध पक्षों को चित्रित करने का प्रयास किया है। यह उपन्यास मुख्यतः बाल एवं किशोर पाठकों के लिए समर्पित है जिन्हें अपना निर्माण अभी करना है और स्वतन्त्रता एवं देश-प्रेम की बलिवेदी पर अपने को न्योछावर करना है।

महारानी लक्ष्मीबाई के शौर्य, पराक्रम, धार्मिक भावना, दूरदर्शिता, दयाशीलता एवं न्याय-प्रियता के अनेक प्रसंगों को इस कृति में संजोया गया है। महारानी एक वीरांगना के साथ-साथ एक विद्या एवं कला-प्रेमी नारी और आदर्श माता भी थी। इसका रोचक शैली में उल्लेख इस उपन्यास में किया गया है।

सन् सत्तावन की क्रान्ति के वीरों की प्रेरणादायिनी मरदानी अमर महारानी को इतिहास में अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं उच्च स्थान प्राप्त है।

उन्होंने अपनी वीरता, साहस, आत्माभिमान, स्वदेश एवं स्वातन्त्र्य-प्रेम की अमिट छाप इस स्वातन्त्र्य संग्राम के इतिहास पर छोड़ी। अंग्रेज सरकार के अत्याचार और उनके द्वारा भारत का शोषण तथा निरंकुश साम्राज्यवादी शासन जब सीमा से परे होने लगे तो महारानी लक्ष्मीबाई की अदम्य हुंकार से एक ऐसा ज्वार उठा जिससे अन्यायी गोरा प्रशासन क्षुब्ध हो उठा। पर वह चिंगारी अन्ततः शोला बनी और सौ साल तक भड़क कर १९४७ में भारत की स्वाधीनता में परिणत हो गई।

वह प्रातःस्मरणीया महारानी लक्ष्मीबाई 'झाँसी का गौरव' है। यदि पाठकों ने इसे अपनाया और इसकी एक बूंद भी उनके अन्तःकरण को आर्द्र कर सकी तो मैं अपना प्रयास सफल समझूंगी।

इसमें ऐतिहासिक तथ्यों को बिना तोड़े-मरोड़े महारानी के उदात्त चरित्र को प्रस्तुत किया गया है और उनके महान कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। निश्चय ही यह कृति पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक बनकर आनन्द की उपलब्धि करा सकेगी ऐसी मेरी आशा है।

उन साहसी देश-भक्त वीरों को
जिन्होंने आजादी की लड़ाई
में अपनी आहुति दी ।

१

सूर्य अपनी सुनहरी किरणें बिखेरता पृथ्वी-तल का अन्धकार मिटाने आ रहा था। पक्षी चहचहा-चहचहा कर इधर-उधर फुदकते हुए पेट भरने के लिए खाने की सामग्री ढूँढ़ रहे थे।

टप-टप-टपाटप घोड़ों की टापों से चौंककर पक्षी दूर उड़ गए। बाबा साहब और राव साहब घोड़ा दौड़ाते हुए आगे आ रहे थे।

उनके पीछे घोड़े पर सवार उनकी मुंहबोली बहन मनू थी, जिसे प्यार से छबीली कहते थे।

'ठहरो नाना साहब, ठहरो! मैं भी आ रही हूँ।' छबीली ने नाना साहब के समीप अपना घोड़ा लाते हुए कहा, 'आप तो इतनी तेजी से आग बढ़ गए और मैं उधर प्रतीक्षा ही करती रह गई।'

'तू कहती थी, आज मैं आप से आगे निकल कर दिखाऊँगी', नाना साहब ने घोड़े को और भी तेज दौड़ाते हुए कहा, 'जब पीछे रह गई, तब व्यर्थ चिल्ला रही है।'

'नहीं, मैं आप से पीछे नहीं रहूँगी नाना साहब', यह देखो, कहते हुए मनू ने घोड़े को एड़ लगाई, मनू का घोड़ा तेजी से दौड़ता हुआ नाना साहब के घोड़े से आगे निकल गया।

राव साहब तो उससे बहुत पीछे रह गए थे। मनू तेजी से घोड़ा दौड़ाते हुए बहुत आगे निकल गई। तभी उसे जोर से किसी के कराहने का शब्द सुनाई दिया।

मनू ने घोड़े की लगाम खींच ली और घोड़े को मोड़कर वापिस ले आई। नाना साहब (मोरोपंत) घोड़े से गिर गए थे और चोट लगने के कारण कराह रहे थे।

'नाना साहब चोट लग गई।' मनू ने सहारा देकर नाना साहब को उठाते हुए कहा, 'भला इतनी तेजी से क्यों घोड़ा दौड़ाया जो गिर पड़े।'

'तू मुझे हाथ न लगा।' मनू का हाथ झटक कर उठते हुए नाना साहब ने कहा, 'न तू घोड़े को तेज दौड़ाने को कहती, ना ही मेरे चोट लगती।'

'आप ही तो कह रहे थे, मैं आप से आगे अपना घोड़ा नहीं ले जा सकती,' नाना साहब को उठा कर खड़ा करते हुए मनू बोली 'मैं अपने घोड़े पर आपको बैठा कर बाड़े ले चलूंगी।'

'नहीं, मैं आप ही चला जाऊँगा।' नाना साहब ने लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ कर घोड़े की लगाम पकड़ ली।

'साहस तो बहुत है नाना साहब।' मनू मुस्कराते हुए बोली 'पर अभी आप घोड़े पर अकेले बैठ कर न जा सकेंगे।'

'पगली है।' नाना साहब ने मनू की ओर क्रोध से घूरते हुए कहा 'मेरे चोट लगी है और तुझे हँसी आ रही है!'

'क्षमा करना नाना साहब! मुझे आपकी चोट का दुख है···हँसी का कारण और है।' अपने घोड़े की लगाम पकड़ कर नाना साहब को घोड़े पर बैठा कर, दूसरे घोड़े की लगाम भी मनू ने उसके साथ ही पकड़ ली।

और साथ-साथ चलते हुए बोली, 'आप से चोट के कारण भली प्रकार उठा भी नहीं जा रहा था, पर अकड़ के कारण मेरे साथ चलने को तैयारे नहीं थे। आपके रूठने पर मुझे हँसी आ गई।'

'देख मनू, इस समय कोई लड़का ऐसी बात कहता···तो उसे अभी ठीक कर देता, तू लड़की है, इस कारण तुझसे कुछ नहीं कहता।'

'नाना साहब! लड़की क्या लड़कों की सी शक्ति नहीं रखती··· आप मन में क्यों रखते हैं। मैं लड़कों से कम नहीं हूँ।'

मनू घोड़ों की लगाम पकड़ कर धीरे-धीरे बाड़े में बाजीराव (द्वितीय) के निवास स्थान के समीप जा पहुँची।

'क्या है छबीली, (मनू) यह नाना के घोड़े की लगाम तूने क्यों पकड़ रखी है?' बाजीराव ने समीप आते हुए कहा, 'क्या हो गया नाना को,

क्या चोट लग गई ?'

'कुछ नहीं बा साहब,' नाना ने घोड़े से उतर कर धीरे-धीरे चलते हुए कहा, 'थोड़ी चोट लग गई है।'

'क्षमा करें बा साहब ! नाना साहब ने ही कहा था···देखें किसका घोड़ा आगे निकलता है।'

'अच्छा, मैं समझ गया,' बात काट कर हँसते हुए बाजीराव बोले, 'तब तू घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए आगे निकल गई होगी···नाना ने तेजी से घोड़ा दौड़ाया तो गिर पड़ा होगा।'

'यही बात है बा साहब,' राव साहब (पाण्डुरंग) ने आगे आते हुए कहा 'यह मनू बहुत तेज हो गई है, प्रत्येक बात में हमसे आगे निकलना चाहती है।'

'वह तुमसे सभी बातों में आगे है पांडुरंग (रावसाहब) ! छबीली तुमसे अधिक बुद्धिमान है।

'शस्त्र चलाना, भाला चलाना, इसे अभी कहाँ आया है बा साहब।'

'अभी मैं सीख रही हूँ बा साहब,' बाजीराव की ओर देखते हुए मनू बोली, 'तलवार चलाने में रावसाहब से जीती नहीं ··तो हारी भी नहीं हूँ।'

'नाना साहब (धोंडोपन्त) लड़की समझकर तुझे जिता देते हैं। तू समझती है, तू हमसे शक्तिशाली है।' रावसाहब ने मनू को क्रोध से घूरते हुए कहा, 'बहुत डींगें मारना ठीक नहीं।'

'बा साहब ! आप ही बताइए, उस दिन तीर चलाने में मैंने राव साहब को नहीं हराया था।'

छबीली ठीक कह रही है पांडुरंग, अब तुम चलकर कुछ खा-पी लो, इतने समय में मोरोपन्त ताम्बे को भेजकर तुम्हारे गुरु को पढ़ाई के के लिए बुलवाता हूँ।

'कल गुरु जी पढ़ाने नहीं आए थे, बा साहब,' मनू बाजीराव की ओर देखते हुए बोली 'गुरुजी नाना साहब और राव साहब को जो सिखाते हैं, दूर बैठकर मैं भी सब सीखती रहती हूँ।'

'तू बहुत बुद्धिमान है छबीली,' प्यार से मनू के सिर पर हाथ फेरते

हुए बाजीराव मुस्कराए, 'तुझे पढ़ने का चाव है, तू भी पढ़ ले, पढ़ने से तुझे कौन रोक सकता है ?'

'पेशवा साहब ! यह मनू आपकी छबीली बहुत ही जिद्दी (हठी) हो गई है। आपके प्रेम ने इसे सिर पर चढ़ा दिया है। मुझे कुछ समझती नहीं।'

'मोरोपन्त, तुम्हारी छबीली लड़की नहीं' लड़कों से भी बढ़कर है। सभी कार्य लड़कों जैसे सीख रही है। इसकी बुद्धिमानी की बातें सुनकर आश्चर्य में भर जाता हूँ।'

'इसकी माँ जब से स्वर्ग सिधारी, यह बहुत हठीली हो गई है। आपके प्रेम ने इसे माँ की याद भुला दी है। पेशवा साहब, आपने आश्रय देकर हमारा जीवन बचा लिया—।'

'छबीली आप ही अपने अच्छे व्यवहार से सभी का प्रेम पा लेती है।'

'चिमणाजी अप्पा के पश्चात आप ही ने मुझे आश्रय देने की कृपा की। इसकी माँ भागीरथीबाई आपका बड़ा उपकार मानती थी।'

'उस प्रभु की कृपा का आश्रय है मोरोपन्त, मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। अंग्रेजी सरकार ने हमें आठ लाख रुपये पेन्शन देकर, हमारे भाई चिमणाजी अप्पा को पेशवा बनाना चाहा था।'

'श्रीमन्त, चिमणाजी अप्पा को तो नाममात्र के लिए पेशवा बनाना चाहते थे, राज्य के सारे अधिकार तो वह अपने हाथ में रखना चाहते थे।'

'चिमणाजी अप्पा ने तभी अंग्रेज शासकों के हाथों में खिलौना बनना स्वीकार नहीं किया।' बाजीराव ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'उन्होंने साफ मना कर दिया, पेशवा बनना स्वीकार नहीं···।'

'हमें भी उस समय संगति ठीक नहीं मिली थी, कुछ उस समय हम पर किसी और का ही प्रभाव था मोरोपन्त, अच्छी संगत मनुष्य का जीवन सुधार देती है। और बुरी संगत अच्छे मनुष्य का जीवन भी बिगाड़ देती है। समय व्यतीत होने पर अब हमने जाना।'

'चिमणाजी अप्पा को दो लाख रुपयों की वार्षिक पेन्शन अंग्रेजी

सरकार ने नियत की थी। उनके स्वर्गवासी होते ही पेन्शन भी बन्द कर दी। हम सबके लिए तो उनके बिना काशी में रहना कठिन हो गया था पेशवा साहब।'

'हम नाम के पेशवा साहब हैं मोरोपन्त। अपने हाथ से अपना साम्राज्य अंग्रेजी सरकार को सौंप कर ब्रह्मावर्त (बिठूर) में चुपचाप आकर बैठ गए हैं।'

'श्रीमन्त, बीते समय को याद करके दुख के अतिरिक्त इस समय और कुछ नहीं मिल सकता, कम्पनी-सरकार बढ़ते-बढ़ते आपस की फूट से कई प्रान्तों में अंग्रेजी सरकार बन गई है। कई रियासतें इन्हें सहयोग दे रही हैं।'

'श्रीमन्त, कई गुप्तचर आपके लिए विशेष सूचना लाए हैं।' सेवक ने झुककर बाजीराव को प्रणाम करते हुए कहा, 'वह बाहर खड़े हुए आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

'उन्हें हमारे सामने वाले कमरे में बैठाओ।' कहते हुए बाजीराव मोरोपन्त को लेकर उस ओर चल पड़े।

२

चन्द्रमा निकलने में देर थी। हल्की लाली कहीं-कहीं आकाश पर दिखाई दे रही थी। दूर कहीं तारे झिलमिला रहे थे।

मोरोपन्त अपलक आकाश की ओर देखे जा रहा था। मनू मोरोपन्त को कमरे से बाहर बैठा देखकर धीरे-धीरे दबे पाँव उसकी ओर आई और मोरोपन्त के समीप आकर उसकी आँखें अपने हाथों से मींच लीं।

'कौन है? क्यों चुपचाप खड़ा है? बोलता क्यों नहीं?' कहते हुए मोरोपन्त ने झटके से अपनी आँखों से हाथ हटाकर आँखें मींचने वाले की ओर देखा···।

मनू खड़ी हुई मुस्करा रही थी। 'तू बहुत शैतान हो गई है मनू··· भला तूने चुपके से आकर मेरी आँखें क्यों मीचीं···उधर क्या देख

रही है।'

'बा साहब, उस दिन आप कह रहे थे, माँ साब आकाश में तारा बन कर चमक रही हैं। मैं बहुत देर से वहाँ उन्हें देखने का यत्न कर रही थी। मुझे कहीं दिखाई नहीं दीं।'

'आपको दिखाई दे रही थीं, तभी तो आप अपलक उसी ओर देखे जा रहे थे।'

'मैं पूछ रहा हूँ, तूने मेरी आँखें क्यों अपने हाथों से बन्द की···?' मनू की ओर क्रोध से देखते हुए मोरोपन्त बोला, 'तू इधर-उधर की व्यर्थ की बातें करके टाल रही है।'

'लो बा साब, मुझे कह रहे हैं, मैं व्यर्थ की इधर-उधर की बातें कर रही हूँ।' मनू मुस्कराते हुए बोली, 'अकेले-अकेले माँ साब को आकाश में देखे जा रहे हैं, मुझे नहीं दिखाते।'

'वह अब कहाँ दिखाई देगी मनू। मनू को छाती से चिपटा कर मोरोपन्त रो पड़ा। 'भागीरथी तू इस भोली बालिका को असमय छोड़कर चली गई, अब इसकी कौन देखभाल करेगा?'

'बा साहब, आप क्यों रो रहे हैं, मेरी बात बुरी लगी बा साहब, अब मैं माँ साब को देखने के लिए नहीं कहूँगी।' अपने छोटे-छोटे हाथों से मोरोपन्त के आँसू पोंछती हुई मनू बात पलटते हुए बोली, 'बा साहब, अब चुप होकर बताओ; मुझे बढ़िया-सा घोड़ा कब मँगवा कर दोगे?'

'बढ़िया घोड़ा अपनी छबीली को हम मँगा कर देंगे।' बाजीराव मोरोपन्त के समीप आते हुए बोले, 'मोरोपन्त से हमें कुछ काम है··· इतने समय तू बाहर जाकर खेल।'

'जा रही हूँ बा साहब।' कहते हुए मनू उछलती हुई बाहर खेलने चली गई।

बाजीराव ने मोरोपन्त की ओर देखते हुए कहा, 'इस समय यहाँ उदास से कैसे बैठे हो मोरोपन्त···?'

'कोई विशेष बात नहीं पेशवा साहब', बाजीराव को प्रणाम करते हुए मोरोपन्त ने कहा, 'यह आपकी छबीली अपनी माँ को देखना चाहती थी। इसे कैसे समझाऊँ, वह वहाँ चली गई, जहाँ से कोई वापिस लौटकर

नहीं आता।' कहते हुए मोरोपन्त की आँखों में आँसू छलछला आए। मुँह मोड़कर उसने आँसू पोंछ डाले।

'तुम कोई चिन्ता न करो मोरोपन्त, छबीली बुद्धिमान है, थोड़े समय में सब कुछ आप ही आप समझ जाएगी।' बाजीराव ने चारों ओर देखते हुए कहा, 'तुमने यह देखा होगा, अस्त्र-शस्त्र चलाने में वह अब नाना साहब और राव साहब की समानता करने लगी है।'

'यह सब आपका प्रताप है श्रीमन्त। मैं निर्धन इस हठी, महत्त्वाकांक्षिणी लड़की को कैसे सभाल सकता था ?'

'इस समय मैं तुम्हारे पास इस कारण आया था कि तुम बिठूर के गाँवों में जाकर किसानों से वर्ष भर के लिए अनाज का प्रबन्ध कर आओ।' बाजीराव ने मोरोपन्त की ओर देखते हुए कहा, 'घोड़ों के दाने का भी वर्ष भर के लिए प्रबन्ध करना है।'

'मैं रात्रि को जाकर प्रातःकाल तक सभी प्रबन्ध करके वापिस आ जाऊँगा···पेशवा साहब, आप निश्चिन्ति रहें।'

'तुम्हारे ऊपर मुझे इतना विश्वास है मोरोपन्त कि इन दुखदायक घटनाओं से भरे हुए वातावरण में भी हम तुम्हारे भरोसे शान्ति से बैठे हैं।'

'श्रीमन्त, समाचार मिला था कि कई रियासतों में जिनके राजाओं के पुत्र नहीं थे, गोद लिए पुत्रों को अंग्रेजी सरकार ने उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया है। यह तो अन्याय है, हमारे हिन्दू शास्त्रों में दत्तक पुत्र अपने पुत्र के समान समझा जाता है।'

'उसे वही सारे अधिकार दिए जाते हैं जो पुत्र के होते हैं, पर अंग्रेज नीति पृथक है, जो चाहे मनमानी बातें मानने को विवश करते हैं। मोरोपन्त, हमें भी कभी-कभी चिन्ता हो जाती है। हमारे दत्तक पुत्र नाना साहब कहीं अपने उत्तराधिकार से वंचित न रह जाएँ।'

'आपके पूर्वजों ने तो अंग्रेज सरकार को बहुत सहयोग दिया था। क्या उस उपकार के बदले वह आपको इतनी भारी हानि पहुँचाएँगे ?'

'अंग्रेज बड़े भारी नीतिज्ञ हैं मोरोपन्त, इनकी नीति बड़े-बड़े भारतीय नीतिज्ञ नहीं समझ सके। हम जैसे क्या समझेंगे...।'

'श्रीमन्त, अंग्रेज सरकार अपनी राजनीतिक चतुराई से भारत के बड़े भाग पर अधिकार कर चुकी है। हमारी आपस की फूट हमें खाए जा रही है।'

'ठीक कह रहे हो मोरोपन्त, हम आपस में ही युद्ध कर अपनी शक्ति नष्ट कर रहे हैं। और बुद्धिमान विदेशी अंग्रेज, हमारी आपस की ईर्ष्या-द्वेष का लाभ उठाकर, देश में बलपूर्वक सत्ता के दृढ़ पंजे गाड़ रहे हैं।'

'श्रीमन्त, राजपूत क्षत्रियों में अब तो अपनी आन-मान पर बलिदान होने की भावना समाप्त हो गई। अब अंग्रेजों की चापलूसी करके अपनी जमीन-जायदाद, रियासत, जमींदारी की झूठी शान को बचाने के यत्न में ही लगे हुए हैं।'

'ऐसा न हो बा साहब।' मनू ने अन्दर आते हुए कहा 'राणाप्रताप ने मुगलों से अपनी स्वतन्त्रता और मान के लिए जीवन बलिदान कर दिया था। अब भी देशप्रेमी राजपूत क्षत्रिय अपने सुखों को ठुकरा कर स्वतंत्रता के लिए प्राणों की बाजी लगाने को तैयार बैठे हैं।'

'कोई उन्हें उत्साह दिलाकर सच्चे स्वतन्त्रता-पथ पर चलाने वाला तो आगे आए। बा साहब, जब से मैंने उन वीरों की अपने गुरुजी से कहानी सुनी है। इतना हर्ष हुआ, आपको यह सब सुनाने को भागी हुई आई हूँ।'

'पगली है, हम यह सब बातें क्या नहीं जानते।' मोरोपन्त मुस्कराते हुए बोले, 'इतना ज्ञान तो हमें भी है।'

'फिर आप अभी यह कैसे कह रहे थे कि राजपूत अपना कर्त्तव्य भूल गए हैं। वह कर्त्तव्य नहीं भूले, उन्हें मार्गदर्शन देने वाले अच्छे नेता नहीं मिले।'

'मनू, मैं उन देश प्रेमी राजपूतों के लिए ऐसी बातें नहीं कह रहा था, उन क्षत्रिय राजपूतों के विषय में कह रहा था, जिन्होंने क्षणिक सुख-लोभ के वश होकर अपनी जाति भाईयों से विश्वासघात करके उन्हें हानि पहुँचा कर विदेशी राज्य की जड़ें मजबूत कीं।'

'मुसलमान नवाब भी अंग्रेजों के आधीन होकर कुछ गर्व अनुभव करने लगे हैं। कई देशप्रेमी नवाब अब भी अपने ऐश्वर्य-सुख पर ठोकर मार कर देशप्रेमी वीरों को सहयोग देने को तैयार हैं श्रीमन्त।'

'पर दिल्ली के बूढ़े सम्राट, बूढ़े होते हुए भी साहस नहीं हारे बा साहब, वह देशप्रेमियों को सहयोग देने को तैयार हो जाएंगे। अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे।'

'बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने लगी है छबीली।' बाजीराव ने प्यार से मनू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, 'तू बहुत छोटी है, इन बातों को अभी नहीं समझ सकेगी।'

'क्षमा करना बा साहब।' बाजीराव के सामने झुकते हुए नम्रता से मनू ने कहा, 'छोटी अवश्य हूँ, पर कुछ देशप्रेमियों की बातें सुनकर, कुछ पुस्तकों से पढ़कर कुछ-कुछ समझने लगी हूँ।'

'आपके सामने कहने का साहस भी हो जाता है। नाना साहब तो कई बार इतने जोर से डाँटते हैं कि ठीक बात पर भी चुप होना पड़ता है।'

'छबीली, तेरी बातें बहुत गहरी और बुद्धिमानी की हैं।' प्यार से उसकी ओर देख कर बाजीराव मुस्कराए 'बड़ी होकर न जाने तू क्या बनेगी। यदि लड़का होती तो न जाने क्या करती।'

'मैं लड़की नहीं लड़का ही हूँ बा साहब।' बाजीराव की गोद में बैठते हुए मनू बोली 'आप उस दिन कह रहे थे, छबीली लड़की नहीं लड़का है।'

'हाँ, मैं भूल गया।' बाजीराव खिल-खिलाकर हँसते हुए बोले 'सच-मुच तेरी बातें लड़कों जैसी ही हैं, लड़कियों जैसी नहीं हैं।'

'शिवाजी मरहठा जब छोटे थे, तभी उन्होंने शस्त्र चलाना, घुड़-सवारी करना सीख लिया था। मैंने भी सीख ली है बा साहब, मैं भी शत्रुओं से लोहा लूँगी, नहीं-नहीं···लोहा लूँगा···।'

'हा-हा-हा···' हँसते हुए राव साहब ने मनू के समीप आते हुए कहा 'मनू छबीली लड़की है, सभी जानते हैं, अब तो तूने भी अपने मुँह से अभी कहा है।'

'जानते हैं, तो जानने दो, मुझे किसी की परवाह नहीं, लड़की भी लड़कों के समान कार्य कर सकती है, मैं दिखा दूँगी।' कहते हुए मनू अपना तीर कमान लेकर बाहर की ओर चली गई।

पर बाजीराव और मोरोपन्त के कानों में मनू के यह शब्द गूँज कर

हृदय में उथल-पुथल मचाने लगे, 'लड़की लड़कों के समान कार्य कर सकती है।'

३

रघुनाथ हरि नेवालकर बहुत वीर और स्वामिभक्त था। उसकी वीरता से प्रसन्न होकर पेशवा बाजीराव पृथम ने रघुनाथ हरि नेवालकर को झाँसी का सूबेदार नियुक्त कर दिया था।

वह कुशल राजनीतिज्ञ था। उसने बुन्देलखण्ड के छोटे-छोटे शासकों को अपने अधीन कर लिया था। झाँसी और बुन्देलखण्ड की रक्षा के लिए बड़ी भारी सेना रखी थी।

चालीस वर्षों तक झाँसी की सूबेदारी करके बूढ़ा रघुनाथ हरि नेवालकर अपने छोटे भाई शिवराम भाऊ को सूबेदारी सौंप कर काशी निवास करने चला गया था, वहीं उसकी मृत्यु हुई थी।

शिवराम भाऊ भी अपने बड़े भाई रघुनाथ हरि की तरह ही वीर व कुशल शासक था। उसके राज्य में प्रजा सुखी थी।

जिस समय बाजीराव द्वितीय पेशवा पद पर था, उस समय केन्द्रीय शासन शिथिल हो गया था, क्योंकि पेशवा शूरवीर नहीं था। उसका कोई आतंक नहीं मानता था।

बुन्देलखण्ड पर शिवराम भाऊ का बहुत प्रभाव था। यहाँ के अन्य शासक भी शिवराम भाऊ को अपना मुखिया मानते थे। शिवराम भाऊ ने अंग्रेजों से सन्धि कर ली, अंग्रेजों ने उन्हें अपना मित्र माना और एक दूसरे को सहयोग देने का वचन दिया। बुन्देलखण्ड के शासकों ने सुना, शिवराम भाऊ की अंग्रेजों से सन्धि हो गई है, तब सारे बुन्देलखण्ड के शासकों ने अंग्रेजों से सन्धि कर ली। बुन्देलखण्ड अंग्रेजों का हितैषी-मित्र बन गया। बुन्देलखण्ड के छोटे शासक अपने को स्वतन्त्र शासक समझने लगे।

चतुर राजनीतिज्ञ शासक अंग्रेजों ने शिवराम भाऊ से इसी कारण

सन्धि की थी। बुन्देलखण्ड के सभी छोटे शासक उनके अधीन हो गए थे। अंग्रेजों की इस राजनीति को ऐश्वर्य-लोभी छोटे जमींदार राजे नहीं समझ सके थे।

शिवराम के तीन पुत्र थे, कृष्णाराव, रघुनाथराव, गंगाधरराव। कृष्णाराव सबसे बड़ा पुत्र था, उसके रामचन्द्रराव नामक एक पुत्र पैदा हुआ। कृष्णाराव की शीघ्र ही मृत्यु हो गई।

अठारह वर्ष की सूबेदारी करके शिवराम भाऊ ने अपने पोते रामचन्द्रराव को अपने स्थान पर सूबेदार नियुक्त कर दिया और स्वय अपना अन्तिम समय अपने इष्ट के भजन में व्यतीत करने के लिए ब्रह्मावर्त चले गए।

अन्तिम समय में शिवराम भाऊ ने अपना पंलग गंगा जी में रखवाया था और गंगा माता की गोद में प्राण त्यागे थे।

रामचन्द्रराव अभी छोटे थे। उनकी माता सखूबाई और उनके दीवान गोपालराव राज्य व्यवस्था देखा करते थे।

सखूबाई क्रूर स्वभाव की स्वार्थी महिला थी। झाँसी की स्वयं ही स्वामिनी बनी रहना चाहती थी। रामचन्द्रराव जब बड़े हुए तब सखूबाई को चिन्ता हुई। कहीं रामचन्द्रराव झाँसी का स्वयं ही स्वामी न बन जाए।

यह सोचते हुए स्वार्थी सखूबाई अपने पुत्र की ही शत्रु बन गई और उसके जीवन का अन्त करने के उपाय सोचने लगी। झाँसी में लक्ष्मी ताल था। रामचन्द्रराव को तैरने का बड़ा चाव था। वह प्रतिदिन लक्ष्मी ताल में तैरने के लिए जाते थे।

ताल के ऊपर बुर्ज बना हुआ था। रामचन्द्रराव उसके ऊपर से ताल में कूदा करते थे और तैरते थे।

सखूबाई ने लक्ष्मी ताल में पानी के नीचे भाले गड़वा दिए ताकि रामचन्द्रराव जब बुर्ज पर से तैरने के लिए लक्ष्मी ताल में कूदे, तो भाले गड़ कर उसका जीवन समाप्त कर दें।

रामचन्द्रराव का लालू नामक एक स्वामीभक्त सेवक था। उसे इस षड्यन्त्र की किसी प्रकार सूचना मिल गई, तुरन्त ही उसने अपने स्वामी

रामचन्द्रराव को ताल वाले षड्यन्त्र की सूचना दे दी।

रामचन्द्रराव सावधान हो गया। वह ताल पर नहीं गया, पर उसका सरल हृदय यह मानने को तैयार नहीं था कि उसकी माँ सखूबाई उसके प्राण लेने के लिए ऐसे षड्यन्त्र कर रही है।

सखूबाई का षड्यन्त्र लालू ने असफल कर दिया था। सखूबाई ने अपना सारा क्रोध लालू पर निकाला, उसकी चुपचाप हत्या करवा दी।

रामचन्द्रराव ने तब भी अपनी माता सखूबाई से कुछ नहीं कहा। राज्य के दरबारियों को इस षड्यन्त्र की सूचना किसी प्रकार मिल गई। उन्होंने तुरन्त ही सखूबाई को कारागार में डाल दिया।

सखूबाई षड्यन्त्र के कारण, कारागार में बन्दिनी का जीवन व्यतीत करने लगी।

शिवराम भाऊ और अंग्रेजों में जो सन्धि हुई थी, वह स्वतन्त्र शासकों के बीच सन्धि थी। उससे अंग्रेज सन्तुष्ट नहीं थे। अन्य राजाओं की तरह झाँसी के शासक को भी अपने अधीन करने का बहाना ढूँढ़ रहे थे। तेरह जून अठारह सौ सत्तरह (१३ जून १८१७) ईसवी को बाजीराव पेशवा द्वितीय से अंग्रेजों की जो सन्धि हुई, उसके अनुसार बाजीराव ने बुन्देलखण्ड के सभी अधिकार अंग्रेजों को सौंप दिए···।

झाँसी के राजा अब पेशवा नहीं थे। झाँसी के सूबेदार से पुनः हुई नवीन सन्धि के अनुसार झाँसी राज्य अंग्रेजी सरकार का आश्रित राज्य बन गया था। उसने अंग्रेजी सरकार को ७४ हजार रुपये वार्षिक कर देना स्वीकार कर लिया था।

रामचन्द्रराव को झाँसी का राज्य वंश परम्परानुसार प्रदान कर दिया था। मध्य भारत में पिंडारियों ने लूट मार से अशान्ति कर रखी थी। नाना पंडित ने इस अवसर का लाभ उठाकर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध घोषणा करके काल्पी पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजी सरकार ने उसका सामना करने को रामचन्द्रराव से सहायता माँगी। रामचन्द्रराव ने चार सौ घुड़सवार, सौ पैदल सैनिक, दो तोपें झाँसी से अंग्रेजों की सहायता करने के लिए भेजीं। इस सेना ने नाना पंडित को पराजित कर काल्पी से भगा दिया। अंग्रेजों का काल्पी पर फिर से अधिकार हो गया।

अंग्रेज सरकार, रामचन्द्रराव की इस सहायता से बहुत प्रसन्न हुई। उस समय के गवर्नर लार्ड विलियम बेंटिंग रामचन्द्रराव से मिलने आए।

उनके सम्मान में रामचन्द्रराव ने दरबार किया। इस दरबार में रामचन्द्रराव को सहायता के लिए धन्यवाद देते हुए गवर्नर जनरल ने रामचन्द्रराव को छत्र, चामर, मोरछल, नक्कारा आदि राजचिह्न देते हुए रामचन्द्रराव को महाराजाधिराज की पदवी दी। रामचन्द्रराव ने 'यूनियन जैक' अंग्रेजों का ध्वज फहराया।

सन् १९३५ ईसवी में रामचन्द्रराव की मृत्यु हो गई। रामचन्द्रराव की पत्नी ने सागर के मोरेश्वर खरे के पुत्र को गोद ले लिया। और उसका नाम कृष्णराव रखा।

अंग्रेजी सरकार ने गोद लिए पुत्र कृष्णराव को रामचन्द्रराव का उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया और शिवराम भाऊ के दूसरे पुत्र रघुनाथराव को झाँसी की गद्दी पर बैठा दिया।

शिवराम भाऊ के सबसे छोटे पुत्र गंगाधरराव ने इसका विरोध करके सरकार के पास प्रार्थना-पत्र भेजा कि रघुनाथराव कुष्ठ रोग से पीड़ित है। शास्त्र के अनुसार कुष्ठ रोगी राजगद्दी पर बैठने का अधिकारी नहीं होता।

गंगाधरराव का प्रार्थना-पत्र अंग्रेज सरकार ने अस्वीकार कर दिया। रघुनाथराव को झाँसी की गद्दी पर बैठा रहने दिया गया।

रघुनाथराव चरित्रहीन और कायर था। उसकी गजरा नाम की रखैल थी, जिसका पुत्र अली बहादुर था। रघुनाथराव जैसे ही झाँसी की गद्दी पर बैठा, राज्य में अव्यवस्था फैल गई।

शासन संभालने की उसमें योग्यता ही नहीं थी। ना ही राज्य विषयक कार्यों में रुचि थी। अपने रोगी जीवन को विलासिता में डुबा कर वह किसी प्रकार जीवन व्यतीत कर रहा था।

उसके शासन में अव्यवस्था फैलने के कारण शासन शिथिल हो गया था।

राज्य की आय अठारह लाख के लगभग थी। जो घटते-घटते तीन

लाख रह गई। रघुनाथ के विलासी जीवन, आय से अधिक व्यय से रियासत पर ऋण का भार चढ़ गया।

प्रजा अशान्त हो गई, सारे राज्य में गड़बड़ी फैल गई। तीन वर्ष में ही विलासी, कायर रघुनाथ मृत्यु की गोद में सो गया···रघुनाथ की मृत्यु होते ही राज्य के उत्तराधिकारी के लिए फिर झगड़ा आरम्भ हो गया।

इस गद्दी के चार उत्तराधिकारी आपस में झाँसी राज्य की गद्दी के लिए झगड़ने लगे। रघुनाथ का छोटा भाई गंगाधरराव, रामचन्द्र का दत्तक पुत्र कृष्णराव, रघुनाथराव की रखैल (उपपत्नी) गजरा का बड़ा पुत्र अली बहादुर और रघुनाथराव की पत्नी···।

यह सभी अपने को झाँसी राज्य का उत्तराधिकारी मानकर राज्य पर अधिकार करना चाहते थे। विवाद बहुत बढ़ गया, तब गवर्नर जनरल ने झाँसी के उत्तराधिकारी के प्रश्न को हल करने के लिए एक कमीशन नियुक्त किया।

४

बाजीराव प्रथम की वीरता से प्रसन्न होकर छत्रसाल ने जो जागीर दी थी, उसकी वार्षिक आय लगभग एक करोड़ रुपये थी। प्रथम बाजीराव ने इस भू-भाग के तीन भाग कर दिए थे।

सागर, जालौन, गुरसराय। सूबेदार गोविन्द पन्त बुन्देले को गुरसराय के चालीस लाख की आय की जागीर का सूबेदार नियुक्त किया। बाँदा और काल्पी का भाग प्रेमिका मस्तानी के पुत्र शमशेर बहादुर को दिया।

नारोशंकर मोती वाले को बीस लाख की आय के भाग का झाँसी प्रान्त का सूबेदार नियुक्त किया।

उत्तर भारत के यह तीन प्रान्त पेशवा को अपना स्वामी मानते थे और इनके सूबेदार अपने-अपने प्रान्तों का हिसाब प्रत्येक वर्ष पूना दरबार भेजते थे।

सन् १७५६ ईसवी में गुसाइयों के राजा ने विद्रोह कर दिया था और झाँसी पर अधिकार कर लिया था। पेशवा ने अपने वीर सरदार रघुनाथ हरि नेवालकर को झाँसी भेजा।

रघुनाथ हरि नेवालकर ने गुसाईयों की सेना को हराकर झाँसी से भगा दिया और झाँसी पर अधिकार कर लिया।

पेशवा साहब ने रघुनाथहरि नेवालकर की वीरता से प्रसन्न होकर झाँसी का वंश परम्परागत सूबेदारी का पद उन्हें दे दिया।

रघुनाथ हरि ने अपने छोटे भाई शिवराम भाऊ को अन्तिम समय यह सूबेदारी का पद सौंपा, शिवरामभाऊ वीर, कुशल शासक था। बाजीराव द्वितीय के समय पेशवाई पतन की ओर बढ़ने लगी।

केन्द्रीय शासन शिथिल हो गया था। झाँसी के सूबेदार प्रत्येक वर्ष अपना हिसाब पेशवा के पास भेजते थे। पूना दरबार की अव्यवस्था देखकर शिवराम भाऊ ने हिसाब भेजना बन्द कर दिया था।

बाजीराव द्वितीय की शासक के रूप में अयोग्यता व कायरता ने अंग्रेजों को अवसर दे दिया। उन्होंने बाजीराव को आठ लाख रुपये वार्षिक पेन्शन देकर शासन-भार से मुक्त कर दिया।

बाजीराव बीते हुए दिनों की स्मृति में खोए उदास से बैठे थे। पेशवा के वंशज, कानपुर जिले के ब्रह्मावर्त बिठूर में बैठे हुए अपने कर्मचारियों और परिवार वालों का आठ लाख रुपये वार्षिक पेन्शन पर निर्वाह कर रहे हैं।

मोरोपन्त जैसा स्वामीभक्त कर्मचारी न मिलता, तब तो न जाने कितने संकट का सामना करना पड़ता। अब तो यहाँ बैठे हैं। न किसी लड़ाई-झगड़े की चिन्ता, ना ही देश की चिन्ता, शान्ति से बैठे हुए दिन व्यतीत कर रहे हैं।

मोरोपन्त ताम्बे चुपचाप आकर बाजीराव के समीप खड़ा हो गया था और अपने स्वामी की मनोदशा जो उनके मुख पर झलक रही थी, अपलक देख रहा था।

पेशवा के वंशज आज अपने पाँवों पर आप ही कुल्हाड़ी मारकर अपनी स्वतन्त्रता व गौरव खो बैठे हैं। अब अंग्रेजों के हाथों की कठपुतली

बनकर उनके संकेतों पर चल रहे हैं।

थोड़ी देर तक तो खड़ा हुआ मोरोपन्त अपने स्वामी के मनोभावों को पढ़ने की चेष्टा करता रहा, फिर धीरे से बोला, 'श्रीमन्त, किस विचार में खो गए ?'

'क्या बताएँ मोरोपन्त, कभी-कभी हमें अपने पूर्वजों के गौरव का ध्यान आ जाता है, जिसे अपने हाथों हमने धूल में मिला दिया। अपने पूर्वजों की वीरता, स्वतन्त्रता के लिए प्राणों की बाजी लगाने के कार्य, देश प्रेम की लगन का जब ध्यान आता है, तब हृदय में टीस उठने लगती है। हम अपने लिए ही भार बने हुए हैं। दूसरों के लिए क्या कर सकेंगे ?'

'अब भी आपके आश्रय में बहुत से अनाथ पल रहे हैं। हम जैसे निराश्रित आपकी कृपा से ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं पेशवा साहब। हम सब तो रात-दिन यही प्रार्थना करते रहते हैं कि आप का साया हमारे सिर पर बना रहे।'

'मोरोपन्त, वंश की रक्षा के लिए अपने वंश के (धोंडोपन्त) नाना साहब को दत्तक पुत्र बना लिया है। अंग्रेज सरकार उसे हमारा उत्तराधिकारी मानेगी या नहीं ? उसे पेशवा की मान्यता देगी या नहीं, कभी-कभी यह सन्देह भी हमारे हृदय में उथल-पुथल मचा देता है।' 'अंग्रेजी सरकार नाना साहब को उत्तराधिकारी क्यों नहीं मानेगी श्रीमन्त, दत्तक पुत्र को पुत्र की तरह ही सारे अधिकार दिए जाते थे।'

'यह अंग्रेज सरकार हमारी प्राचीन प्रथाओं को क्या जाने···उन्हें तो भारत की धन-सम्पत्ति को अधिकार में करने की लालसा है। वह उन्हें भय से या लोभ से मिल ही जाएगा।'

'एक मामूली पढ़ा-लिखा अंग्रेज, हमारे बड़े-बड़े बुद्धिमान पदाधिकारियों से ऊँचा पद और शुल्क (तनखा) पाता है। अंग्रेजों की दृष्टि में हम काले बुद्धिहीन हैं।'

'कई देशद्रोहियों ने उनसे मिलकर अपने देश से विश्वासघात करके उनके विचार और दृढ़ कर दिए हैं।' मोरोपन्त ने लम्बी सांस लेते हुए कहा, 'अपने ही दीमक की तरह अपने देश को खोखला कर हानि पहुँचाने का यत्न कर रहे हैं। दूसरों को क्या दोष दें।'

'हम यह सब बात सोचकर ही रह जाते हैं। कुछ भी नहीं कर सकते। छबीली की बातें हमारे हृदय को मथती चली गईं। पुरुषों से स्त्रियाँ न्यून नहीं, पर जहाँ पुरुष ही कायर हो जाएँ, वहाँ की स्त्रियाँ क्या करेंगी ? छबीली और नानासाहब में शूरवीरता और देश प्रेम की भावना देखकर थोड़ा सन्तोष आ जाता है। जो कार्य हम नहीं कर सके, उसे हमारी सन्तान कर जाएँगी।'

'इनका साहस, शूरवीरता देखकर तो बड़े-बड़े शूरवीर दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं श्रीमन्त। आपने जो गाँव वालों से वर्ष भर का अन्न और घोड़ों के लिए दाने के प्रबन्ध को कहा था, उसका पूरा प्रबन्ध करके आया हूँ श्रीमन्त।'

'मोरोपन्त, तुम्हारे ऊपर हमें इतना विश्वास है बता नहीं सकते, पर हमने यह देखा है, इस समय सद्मार्ग पर चलने वाला ही कष्ट पा रहा है।'

'कभी पिछले जन्म में अवश्य ऐसा कर्म किया होगा, जिसका भुगतान इस जन्म में करना होगा। मैं तो पिछले जन्म के संस्कार अवश्य मानता हूँ श्रीमन्त।'

'छोटी-सी आयु की छबीली को जब घुड़सवारी और शस्त्र-अभ्यास करते ब्रह्मावर्त के नागरिक देखते हैं तो आश्चर्य से देखते रह जाते हैं। तुम्हारे कोई बड़े पुण्य कर्म थे जो तुम्हारे घर वह उत्पन्न हुई।'

'उससे बड़ी आयु के लड़के घुड़सवारी में उसकी समानता नहीं कर सकते श्रीमन्त। नानासाहब और रावसाहब के साथ आपने उसे शिक्षा दिला कर मेरा बड़ा उपकार किया है।'

'वह कई बार घुड़सवारी में कुँवर साहब रावसाहब को हरा चुकी है।'

'इस तेजस्वी सुन्दर वीर बालिका ने सभी का मन मोह लिया है। सभी छोटे-बड़े उसे प्यार करते हैं।'

'श्रीमन्त, मनू झोंपड़ी में रहकर महलों के स्वप्न देखने लगी है। किस प्रकार इसका निर्वाह होगा, कभी-कभी मुझे इस बात से बड़ी चिन्ता हो जाती है।'

'आयु से बड़ी लगने लगी है। पड़ोस की स्त्रियाँ चर्चा करती हैं, लड़कों के साथ मनू पढ़ती है। लड़कियों को घर का कार्य सीखना चाहिए, यह पुरुषों वाले कार्य शस्त्र चलाना, घुड़सवारी सीख रही है।'

'कहने दो, किसी की जिह्वा नहीं पकड़ी जा सकती। मारने वाले के हाथ रोक सकते हो, कहने वाले की जिह्वा नहीं पकड़ सकते मोरोपन्त।' बाजीराव और मोरोपन्त आपस में बातें कर रहे थे, तभी मनू का जोर से चिल्लाने का शब्द आया।

मोरोपन्त शीघ्रता से बाहर आया। उसने देखा, मनू नानासाहब, रावसाहब के हाथी के पीछे चिल्लाती हुई भागी जा रही है···नानासाहब हाथी रोको, मैं बैठूँगी। रावसाहब हाथी रोको, जरा ठहरिए, मैं आ रही हूँ।

रावसाहब मनू से शस्त्र प्रतियोगिता में पराजित हो गए थे। उन्हें क्रोध आ रहा था। मनू ने सबके सामने मुझे लज्जित कर दिया था। अतः रावसाहब ने महावत को हाथी तेज चलाने को कहा।

महावत ने अंकुश मारकर हाथी की चाल तेज कर दी। मनू ने और जोर से चिल्लाना आरम्भ किया, 'रावसाहब हाथी ठहरा लीजिए, मैं भी बैठूँगी।'

मनू के चीखने-चिल्लाने को सुनकर मोरोपन्त बाहर आया···और क्रोध में भरकर बोला, 'अभागी हाथी पर बैठने के स्वप्न देखती है, हम निर्धन हैं। हाथी रखना हमारे लिए सम्भव नहीं।'

'बा साहब, आप कहते हैं मैं हाथी पर नहीं बैठ सकती···' मोरोपन्त की ओर देखती हुई मनू बोली, 'आप देख लेना, एक हाथी नहीं, मेरे पास कई हाथी होंगे।'

'क्या कह रही है मनू !' आश्चर्य से उस स्वाभिमानी बालिका की ओर मोरोपन्त देखता रह गया। 'ऐसे व्यर्थ के बड़े-बड़े स्वप्न नहीं देखा करते, जिसके पूरे होने की सम्भावना ही न हो।'

'कैसे पूरे नहीं होंगे ?' कहते हुए मनू मोरोपन्त से चिपट गई।

५

झाँसी राज्य के उत्तराधिकारी का जब निर्णय नहीं हुआ तब गर्वनर जनरल ने उत्तराधिकारी के पक्ष को हल करने के लिए कमीशन नियुक्त किया।

कमीशन ने गंगाधरराव के पक्ष में निर्णय दिया। इस समय झाँसी पर बहुत ऋण था। इस कारण उन्होंने झाँसी का शासन अंग्रेज अधिकारियों को सौंप कर जब तक ऋण न उतर जाए, गंगाधरराव को एक लाख रुपया वार्षिक निर्वाह के लिए देना स्वीकार किया। रघुनाथ की विधवा पत्नी को एक हजार रुपये और अली बहादुर खैल के पुत्र को पाँच सौ रुपये वार्षिक देने स्वीकार किए।

गंगाधरराव झाँसी के महाराजा कहलाने लगे और अंग्रेजों को एक लाख रुपया वार्षिक कर के रूप में देने लगे।

अंग्रेज उनके राज्य का प्रबन्ध कर रहे थे, पर रियासत का ऋण उतारने के लिए नागरिकों से बलपूर्वक रुपया वसूल करते थे, जिससे जनता प्रसन्न नहीं थी।

जमींदार, किसान अपनी परिश्रम की कमाई का सुखपूर्वक उपयोग नहीं कर सकते थे। उन्हें यह भय सताता रहता था, अंग्रेजी राज्य के कर्मचारी न जाने किस समय आ जाएँ·····और उनकी परिश्रम की कमाई को बलपूर्वक छीनकर ले जाएँ। गंगाधर राव भी झाँसी रियासत का स्वतन्त्रतापूर्वक प्रबन्ध करना चाहते थे। जिससे जनता में शान्ति रहे और जनता राज्य की उन्नति के लिए सहयोग दे।

बुन्देलखण्ड के विभिन्न नगरों की रक्षा के लिए अंग्रेजी सरकार ने यहाँ एक विशेष सेना रखी थी, जिसका नाम बुन्देलखण्ड सेना रखा गया था।

झाँसी की रक्षा का भार भी उस सेना को सौंपा गया था। उस सेना का खर्च भी बुन्देलखण्ड के शासकों को देना पड़ता था।

इस सेना में एक हजार पैदल, छः घुड़सवारों के दल (प्रत्येक दल में अस्सी घुड़सवार होते थे) और एक तोपखाना था। इस सेना के ऊपर

तीन लाख तिरासी हजार (३,८३०००) रुपए वार्षिक व्यय होते थे।

आधा व्यय झाँसी राज्य देता था। झाँसी पर अभी ऋण बाकी रह गया था। इस कारण अंग्रेजों ने मोठ तहसील, जिसकी वार्षिक आय नब्बे हजार थी, ले ली।

चार वर्ष अंग्रेजी शासन में झाँसी रियासत को रखकर रियासत का सारा ऋण उतारा गया।

गंगाधरराव को सन् १८४३ ईसवी को अंग्रेजी सरकार ने पूर्ण रूप से झाँसी के शासन के अधिकार सौंप दिए और फिर से एक नई सन्धि की।

नई सन्धि के अनुसार राज्य की रक्षा के लिए एक सहायक सेना रखनी होगी, जिसका व्यय गंगाधरराव को देना होगा।

गंगाधरराव ने अनिच्छा से व्यर्थ थोपी गई सन्धि की शर्त स्वीकार कर ली और दो लाख सत्ताइस हजार वार्षिक आय वाले भाग को अंग्रेज शासकों को दे दिया।

गंगाधरराव को झाँसी के राज्य का अधिकारी बना दिया, सुनते ही सखूबाई क्रोध में भर गई, और उसने झाँसी के किले पर अधिकार कर लिया और उसे खाली करने से इन्कार कर दिया।

नारो गोपाल ने सखूबाई की सहायता की। अंग्रेजी सेना ने आकर सखूबाई से बलपूर्वकर किला खाली करवा लिया। सखूबाई इन्दौर चली गई। नारो गोपाल बाँदा चले गए।

किले को खाली करवाने में अंग्रेजों का जितना धन व्यय हुआ था, वह सखूबाई और नारो गोपाल की धन सम्पत्ति जब्त करके वसूल कर लिया गया।

गंगाधरराव ने शासक बनकर शासन का कार्य भली प्रकार संभाल लिया। वह दयालु और धर्म प्रेमी थे और अपनी प्रजा को सुखी देखना चाहते थे।

राज्य के विभिन्न अधिकारियों को प्रजा के सुख और उन्नति के लिए कार्य करने की स्वतन्त्रता दे रखी थी, पर यदि अधिकारी अपने कर्त्तव्य पालन में असावधान हो जाते हैं और उस असावधानी के कारण नागरिकों की जान-माल की हानि हो जाती है, तब उस अपराध का वे

उन अधिकारियों को भी कठोर दण्ड देते थे ।

गंगाधरराव सुचारु रूप में सभी काम निश्चित समय पर करना पसन्द करते थे ।

उनका इतना आतंक था कि बड़े अपराधी भी अपराध करते हुए घबराते थे । प्रबन्ध इतना उत्तम था कि नागरिक दरवाजे खुले छोड़कर सो जाते, चोर चोरी नहीं कर सकता था, क्योंकि जिस जनता की सुरक्षा का उत्तरदायित्व राज कर्मचारियों पर था । यदि उनके इलाके में चोरी हो गई, तो उसका जुर्माना उस इलाके के अधिकारी को देना पड़ता था । यदि चोर चोरी करते पकड़ा जाता, उसके हाथ-पाँव काट दिए जाते थे ।

इस कारण बड़े-बड़े डाकू, बदमाश भी गंगाधरराव के प्रान्त में उपद्रव करते हुए घबराते थे ।

गंगाधरराव स्वयं ही जनता के आपस के झगड़े निबटाते थे । कोई राज्य कर्मचारी भी यदि दोषी पाया जाता, तो उसे भी वही दण्ड मिलता, जो साधारण नागरिक को दिया जाता ।

उनके सुव्यवस्थित शासन, सब के प्रति उदार व्यवहार के कारण बुन्देलखण्ड के सभी छोटे-बड़े राजा गंगाधरराव का मान करते थे ।

गंगाधरराव को हाथी-घोड़े रखने का भी चाव था । हाथियों में सिद्ध-बख्श नाम का हाथी उन्हें बहुत अच्छा लगता था । जिस समय किसी उत्सव में सम्मिलित होने के लिए महाराजा गंगाधरराव जाते तब सिद्ध बख्श को खूब सजाया जाता । सिद्धबख्श की पीठ पर सोने का हौदा रखा जाता । गले में कण्ठा पहनाया जाता । गोटे व फूलों की झालरें उसके दोनों ओर लटकती हुई उसकी शोभा को दुगुनी कर देती थीं ।

विशेष अवसर पर, कभी-कभी भ्रमण की इच्छा से भी गंगाधरराव सिद्धबख्श पर सवारी करते थे ।

और हाथी घोड़ों को तो चाँदी मिश्रित सोने के आभूषण पहनाए जाते थे, किन्तु सिद्धबख्श का हौदा शुद्ध सोने का था ।

राजपरिवार की महिलाओं के लिए महाराजा गंगाधरराव ने विशेष (मियाना) पालकी काशी के कारीगरों से बनवाई थी, जिसमें नक्काशी किए हुए सोने के पतरे जड़े हुए थे ।

दतिया, समथर, ओरछा, चरखारी, पन्ना, छतरपुर के राजा गंगाधर-राव को आदर से काका साहब कह कर पुकारते थे।

गंगाधरराव का राज्य प्रबन्ध बहुत अच्छा था। प्रजा सुखी थी और सभी अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे थे।

राज्य की उन्नति के लिए सभी नागरिक कर्मचारी सहयोग दे रहे थे। महालक्ष्मी के मन्दिर में श्रद्धा से नागरिक राजा के स्वास्थ्य के लिए कामना करते।

'हमारे महाराजा स्वस्थ रहें, उनकी दीर्घ आयु हो।' महालक्ष्मी मन्दिर की पूजा-उत्सव-प्रसाद के लिए दो गावों की आय महाराजा साहब ने नियत कर दी थी।

राज्य-कार्य सुचारु रूप से चल रहा था। गंगाधरराव अपनी प्रजा के सुख और उन्नति के लिए अनेक योजनाएँ बनवा रहे थे।

अचानक ही उनकी प्रिय रानी रमाबाई रोगी हो गई। बड़े-बड़े वैद्य-हकीम बुलाए गए। उन्होंने रोग को दूर करने के लिए औषधि दी।

रानी रमाबाई को कोई औषधि लाभ न पहुँचा सकी और थोड़े दिन पश्चात् ही वह स्वर्ग सिधार गई। महाराजा पुत्र-लाभ से भी वंचित रह गए। गंगाधरराव को इस घटना से गहरा आघात लगा। वह उदास रहने लगे। स्वभाव भी उनका चिड़चिड़ा हो गया। स्वास्थ्य गिरने लगा। दुर्बल तो वह पहले ही थे, अब और भी दुर्बल हो गए। उनके विशेष राज्य कर्मचारी उनकी ऐसी दशा देखकर चिन्ता करने लगे।

राज्य के सभी शुभ-चिन्तक, कर्मचारी झाँसी के प्रसिद्ध ज्योतिषी तात्या दीक्षित से मिले, और महाराजा गंगाधरराव के गिरते स्वास्थ्य के विषय में उन्हें बताया। महाराजा गंगाधरराव के यहाँ पुत्र न होने की बात भी तात्या दीक्षित से छिपी न थी। राज्य कर्मचारी राज्य के उत्तराधिकारी के विषय में भी चिन्तित थे। झाँसी के प्रसिद्ध ज्योतिषी तात्या दीक्षित ने कुछ सोचते हुए तीर्थ यात्रा करने के बहाने एक बड़ा उद्देश्य-पूर्ण कार्य करने का निश्चय किया और गंगाधरराव से चुपचाप परामर्श करके तीर्थ यात्रा करने चल पड़े।

कई प्रान्तों में भ्रमण करते-करते वह कानपुर प्रान्त के बिठूर ब्रह्मावर्त

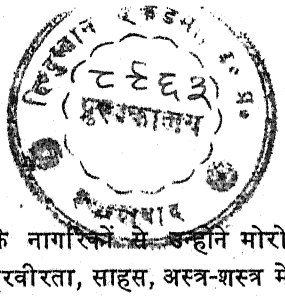

में पहुँचे।

ब्रह्मावर्त के नागरिकों से उन्होंने मोरोपन्त ताम्बे की पुत्री मनू (छबीली) की शूरवीरता, साहस, अस्त्र-शस्त्र में निपुणता की चर्चा सुनी। तात्या दीक्षित ने मन-ही-मन कुछ सोचा और बाजीराव से मिलने उनके निवास-स्थान पर जा पहुँचे।

६

टन-न-न-न-न···घड़ियाल ने दस बजाए···पेशवा बाजीराव के कर्मचारी अपने नित्य कर्म से निबट कर बाजीराव के निवास-स्थल पर पहुँच गए।

बाजीराव भी अपने आवश्यक कार्यों से निबट कर विशिष्टि व्यक्तियों से मिलने के कमरे में आकर बैठ गए।

विशेष कर्मचारियों ने उठकर बाजीराव का अभिवादन किया और अपने-अपने स्थान पर बैठ गए।

मोरोपन्त ने आकर चारों ओर दृष्टि घुमाई, फिर बाजीराव को प्रणाम करके एक ओर बैठ गए।

'कहो, नया कोई समाचार मिला?' बाजीराव ने मोरोपन्त की ओर देखते हुए पूछा, 'झाँसी की निर्णय समीति ने किसके पक्ष में निर्णय दिया।'

'श्रीमन्त, कमीशन ने गंगाधरराव के पक्ष में ही निर्णय दिया है।' एक कर्मचारी ने बाजीराव की ओर देखते हुए कहा, 'उन्हें झाँसी का महाराजा स्वीकार कर लिया गया है।'

'चार उत्तराधिकारियों में से एक का निर्णय होना ही था।' हमें बहुत प्रसन्नता हुई, गंगाधरराव के पक्ष में निर्णय हुआ।

'अब तो वह शासन-कार्य कर रहे हैं, प्रजा की भलाई के लिए उन्होंने अनेक कार्यक्रम बनाए हैं।'

'पर जितने दयालु हैं, उतने ही वह कठोर हैं श्रीमन्त···।' 'कठोर और दयालु यह बात हमारी समझ में नहीं आई।' बाजीराव मुस्कराए,

'हमें समझा कर बताओ।'

'जनता की सुरक्षा और उसकी उन्नति के लिए जिन राज्य कर्मचारियों को वह कार्य सौंप रखे हैं, यदि उन कार्यों में कोई राज्य कर्मचारी असावधान हुआ और उस असावधानी से किसी नागरिक की सम्पत्ति या जीवन की हानि हुई तो उसे बहुत कठोर दण्ड दिया जाता है, चाहे वह कितना बड़ा पदाधिकारी हो।'

'श्रीमन्त, एक बात और भी हृदय दहलाने वाली है। यदि चोर चोरी करते पकड़ा गया तो उसके हाथ-पाँव काट दिए जाते हैं।'

'ओह! सुनते ही कँपकँपी आती है।' बाजीराव ने दूसरे कर्मचारी की ओर देखते हुए कहा, 'ऐसा कठोर दण्ड मिलता है, तब तो अपराधी अपराध करते हुए घबराते होंगे?'

'वहाँ की जनता घर के किवाड़ खोलकर सोती है, श्रीमन्त··· गंगाधरराव का इतना आतंक है।'

'महाराजा गंगाधरराव कहो भाई', तीसरे कर्मचारी ने मुस्कराते हुए कहा, 'सूबेदार उनके पहले वंशज कहलाते थे।'

'महाराजा गंगाधरराव की महारानी का स्वर्गवास हो गया।' चौथे कर्मचारी ने तीसरे कर्मचारी की ओर देखते हुए कहा, 'अभी थोड़ा समय हुआ है, उनके कोई सन्तान भी नहीं है।'

'क्या वह दूसरा विवाह करेंगे?'

'क्यों नहीं करेंगे, जब उनके सन्तान ही नहीं है। हमने सुना है, झाँसी के प्रसिद्ध ज्योतिषी तात्या दीक्षित इधर-उधर भ्रमण करते नगर में पधारे हैं।'

'यह ब्रह्मावर्त निवासियों का सौभाग्य है, इतने प्रसिद्ध ज्योतिषी यहाँ दर्शन देने आए हैं।'

'महाराज! झाँसी के प्रसिद्ध ज्योतिषी तात्या दीक्षित आए हैं।' सेवक ने झुककर प्रणाम करते हुए बाजीराव की ओर देखते हुए कहा, 'वह बाहर खड़े हुए आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

'श्रीमन्त, श्रीमान तात्या दीक्षित को इधर ही बुला लीजिए।' मोरोपन्त ने नम्रता से झुकते हुए बाजीराव की ओर देखते हुए कहा, 'हम सब भी

उनके दर्शन कर लेंगे ।'

'उन्हें सम्मानपूर्वक इधर ही ले आओ ।'

मोरोपन्त आदर से झाँसी के प्रसिद्ध ज्योतिषी तात्या दीक्षित को पेशवा बाजीराव के समीप ले आया ।

'बाजीराव ने बड़े आदर से तात्या दीक्षित को अपने समीप बैठाया और झाँसी का कुशल-क्षेम पूछा ।'

'और तो सब कुशल है श्रीमन्त, पर हमारी महारानी का स्वर्गवास हो गया, जिसके कारण हमारे महाराज के स्वभाव में बहुत परिवर्तन आ गया है ।' तात्या दीक्षित ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'महाराज के कोई सन्तान भी नहीं है ।'

'हम इधर-उधर भ्रमण कर रहे हैं, सम्भव है झाँसी की रानी बनने के योग्य कोई कन्या मिल जाए ।' ज्योतिषी बाजीराव से बातें कर रहा था, तभी मनू वहाँ आई । 'बा साहब, सुना है झाँसी के प्रसिद्ध ज्योतिषी यहाँ पधारे हैं ।' मनू मोरोपन्त के समीप आते हुए बोली, 'हमें भी उनके दर्शन कराओ, रावसाहब ने अभी मुझे बताया था ।'

'यह सामने जो बैठे हैं, यही झाँसी के प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं ।' मोरोपन्त ने मनू को समीप बुलाकर तात्या दीक्षित की ओर संकेत करते हुए कहा, 'इन्हें प्रणाम करो ।'

मनू ने झुककर तात्या दीक्षित को प्रणाम किया । तात्या दीक्षित अपलक उस तेजस्वी बालिका की ओर देखते रह गए । नगरवासियों से उस बालिका के विषय में जो कुछ सुना था, उससे अधिक ही गुण मनू में तात्या दीक्षित को दिखाई दिए । मनू को तात्या दीक्षित देखते हुए बोले, 'क्या नाम है इनका ?'

'यह मेरी कन्या मनू है और श्रीमन्त की लाडली, छबीली नाम से भी पुकारी जाती है ।' मोरोपन्त ने मुस्कराकर मनू का हाथ तात्या दीक्षित के सामने फैलाते हुए कहा, 'जरा इसका हाथ तो देखिए ।'

'क्षमा करना, मैंने पहले आपको नहीं पहचाना था,' मनू ने तात्या-दीक्षित के सामने हाथ फैला कर मुस्कराते हुए कहा, 'आप मेरा हाथ देख कर बताएँगे, भाग्य में क्या लिखा है ?'

'यदि तुम्हें आपत्ति न हो तो मैं हाथ की लकीरें देखना चाहूँगा ।'

'ज्योतिषी जी, हाथ की रेखाओं को पढ़ सकते हो, क्या भाग्य का लिखा भी पढ़कर बता सकते हो ?'

'देखो मनू, मैंने हाथ की रेखाओं के विषय में अध्ययन किया है, उसके विषय में देखकर बता सकता हूँ, भाग्य का लिखा तो धुरन्धर पण्डित भी नहीं बता सकते ।'

मनू की कमल जैसी सुन्दर आँखें, तेजस्वी मुख और सारभरी बातों से तात्या दीक्षित बहुत प्रभावित हुआ । उसने मनू का हाथ देखा और मुस्कराते हुए बोला···

'तुम्हारे हाथ की रेखा कह रही है, राजरानी बनोगी ।' 'राजरानी बनेगी !' समीप खड़े हुए रावसाहब ज्योतिषी और छबीली की बातें सुन रहे थे ।

ज्योतिषी ने जैसे ही कहा, 'तुम राजरानी बनोगी ।' रावसाहब छबीली की ओर देखकर खिलखिला कर हँस पड़े ।

लजाकर छबीली मनू, तात्या दीक्षित से हाथ छुड़ा कर बाहर की ओर भाग गई ।

बाजीराव, ज्योतिषी तात्या दीक्षित के भाव समझकर मुस्कराते हुए बोले, 'हमारी छबीली, लगभग नौ वर्ष की होगी आपको कैसी लगी छबीली ।'

'बहुत बुद्धिमान, तेजस्वी बालिका है ।' ज्योतिषी तात्या दीक्षित मुस्कराते हुए बोले, 'मैं तो इसकी हस्तरेखा देख कर आश्चर्य में भर गया हूँ, पेशवा साहब ।'

'आप अपने महाराजा गंगाधरराव के लिए रानी की खोज में थे । क्या हमारी छबीली को महाराजा साहब स्वीकार कर लेंगे ?' एक विशेष कर्मचारी ने ज्योतिषी तात्या दीक्षित के सामने झुकते हुए कहा, 'आपने इस विषय में कुछ सोचा है ?'

'इतनी बुद्धिमान' चंचल स्वाभिमानी बालिका को हमारे महाराजा अवश्य स्वीकार कर लेंगे ।' तात्या दीक्षित ने कुछ सोचते हुए कहा···।

'पर हमारे महाराजा की आयु में और आपकी छबीली की आयु में

बहुत अन्तर है, इसी कारण इस विषय में मैं कुछ न कह सका। अभी आपकी छबीली नौ वर्ष की है और हमारे महाराजा···।'

'महाराजा साहब की आयु निःसन्देह छबीली से बहुत अधिक है।' ज्योतिषी की बीच में बात काटते हुए बाजीराव बोले, 'पर यदि महाराजा साहब हमारी छबीली को स्वीकार करते हैं, तब हमें कोई आपत्ति नहीं।'

'आप झाँसी पहुँचकर महाराजा साहब के विचार से शीघ्र सूचित करना।' मोरोपन्त मन-ही-मन मुस्कराते हुए बोले, 'हम आपके उत्तर की प्रतीक्षा करेंगे।'

'ज्योतिषी जी, महाराजा साहब से यह भी कहना, 'कन्या के पिता निर्धन हैं, विवाह की तैयारी भी उन्हें ही करनी पड़ेगी।'

'मैं तो समझता हूँ, सभी बातें हमारे महाराजा साहब स्वीकार कर लेंगे। मैं झाँसी पहुँचकर आपको शीघ्र सूचित करूँगा। आशा है महाराजा साहब आपको शीघ्र ही झाँसी बुला लेंगे।' मोरोपन्त की ओर देख कर तात्या दीक्षित मुस्कराया, 'मेरा परिश्रम सफल हो गया, हमें झाँसी की महारानी मिल गईं।'

'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, ज्योतिषी जी, कन्या के विवाह से उऋण हो जाऊँगा, बड़ी भारी चिन्ता मुझे इसके विवाह की थी। अब आप निश्चिंत रहें।' कहते हुए तात्या दीक्षित झाँसी की ओर चल पड़ा।

७

नक़ीरी, शहनाई आदि वाद्यों की गूँज मन में अनूठा उत्साह भर रही थी। झाँसी नगरी दुलहन की तरह सज रही थी। चारों ओर रंग-बिरंगी पताकाएँ, बन्दनवार बन्धे हुए थे।

फूलों की झालरों और केले के खम्बों से मन्दिर के बाहर का आँगन सजाया गया था।

महाराजा गंगाधरराव के साथ, ब्रह्मावर्त की छबीली मनू के

विवाह की तैयारी झाँसी के गणेश मन्दिर में हो रही थी।

झाँसी के नागरिक सुन्दर वस्त्रों में सजे हुए आपस में बातें करते, अपने महाराजा गंगाधरराव के विवाह का समारोह देखने जा रहे थे।

'देखो चारों ओर बड़े-बड़े मशालों और दीपक-कण्डीलों की कतारें हमारे महाराजा के महल को प्रकाश से भर रही हैं।' एक नागरिक बोला।

'ब्रह्मावर्त की छबीली मनू, हमारे महाराजा की महारानी बनने आई है। यहीं मन्दिर में तो विवाह का आयोजन हो रहा है।'

'जी हाँ, उनके पिता मोरोपन्त अपनी कन्या छबीली को लेकर झाँसी आ गए हैं।' तीसरे नागरिक ने अपने साथी की ओर देखते हुए कहा, 'छोटी-सी प्यारी नौ वर्ष की बालिका हमारी महारानी बनेगी।'

'भाग्य इसे ही कहते हैं मेरे भाई, 'चौथे नागरिक ने मुस्कराकर गुन-गुनाते हुए कहा, 'प्यारे भाई, यह भाग्य रेखा, पल में राव से रंक करे··· और पल भर में रंक से राव बनाए।'

'उनके गुणों पर रीझ कर ही ज्योतिषी जी ने हमारे राजा-साहब को उनसे विवाह के लिए तैयार किया है।' युवा नागरिक ने अपने प्रौढ़ साथी की ओर देखते हुए कहा···

'छोटी हैं तो इससे कोई हानि न होगी, शस्त्र चलाने में और घुड़-सवारी में हमारी नई महारानी निपुण हैं।'

'यहाँ की स्त्रियाँ उनसे शिक्षा लेंगी, वह घर की चारदीवारी में ही घुट कर प्रसन्न हो रही हैं। बस रोटी पकाना, बच्चे पालना यही अपना कर्तव्य समझती हैं।'

'यहाँ राजमहल में पर्दे की रीति है, हिरणों की तरह स्वतन्त्र वाता-वरण में घूमने वाली तुम्हारी नई महारानी इसे सहन कर सकेंगी ?' प्रौढ़ नागरिक अपने युवा साथी की ओर देखते हुए बोला, शस्त्र चलाना, घुड़सवारी करना, तैरना या व्यायाम करना, यह तो पुरुषों के कार्य हैं। हमारे महाराजा महारानी को इतनी स्वतन्त्रता नहीं देंगे।

'तुम अभी से क्यों परेशान हो रहे हो मेरे भाई ?' युवा नागरिक ने प्रौढ़ नागरिक को आगे चलने का संकेत करते हुए कहा, 'पहले विवाह

का समारोह देखकर आनन्द लूटें ।'

'महाराजा भी बहुत बुद्धिमान हैं, सोच समझ कर कार्य करते हैं ।' तीसरे नागरिक ने मुस्कराकर आगे बढ़ते हुए कहा, 'वह नफीरी की गूंज महलों के समीप सुनाई दे रही है । चलो उधर ही चलें ।'

'महारानी की डोली महल की ओर जा रही है । चलो उधर चलते हैं । 'आहा ! क्या देवी स्वरूप पाया है हमारी नई महारानी ने··· ।' युवक नागरिक ने मुड़कर अपने साथी को दिखाते हुए कहा, 'डोली के पर्दे को जरा-सा सरका कर वह बाहर का दृश्य देखना चाह रही थीं ।' महारानी की सेविका ने तुरन्त ही पर्दे को खींच दिया ।

'महाराजा साहब अधिक प्रसन्न नहीं दिखाई दे रहे हैं, जितना उन्हें प्रसन्न होना चाहिए ।' हाथी सजा हुआ कैसी प्रसन्नता से झूमता चला जा रहा है ।

'देखो, वह सामने से हमारे राज्य सैनिक कर्मचारी, मित्र विवाह-उत्सव देखकर आ रहे हैं ।' तीसरे कर्मचारी ने आगे बढ़ कर सैनिक कर्मचारी का रास्ता रोकते हुए कहा, 'ऐसे शीघ्र-शीघ्र कहाँ भागे जा रहे हो, जरा हमें विवाह-समारोह की बातें तो सुनाओ···।'

'···बहुत देर से प्रतीक्षा कर रहे हैं । क्या-क्या देखा ?···।' 'देखा तो बहुत कुछ है मित्र मेरे, पर जब पण्डित हमारे महाराजा के पटके से नववधू के दुपट्टे का छोर बाँध कर गठ जोड़ा कर रहे थे, तब···।'

'तब क्या कहा नववधू ने,' राज्य सैनिक कर्मचारी की बात काटते हुए युवा नागरिक बोला, 'बताओ ना क्या कहा नई महारानी ने ?' 'मन ही मन मुस्कराए जा रहे हो, 'बताओ ना, उन्होंने क्या कहा···?'

महारानी ने पुरोहित की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा, 'पण्डित जी जरा कस कर गाँठ बाँधना, कहीं खुल न जाए ।'

'सच ! यह कहा नई महारानी ने, तब महाराजा साहब क्या बोले ?'

'अरे भाई, महाराजा साहब क्या कहते, उस बालिका महारानी के मुख की ओर देख कर महाराजा के मुख पर गंभीरता छा गई ।'

'हम तो प्रसन्न हैं मित्र, सूना राजमहल फिर से भरा-भरा लगने लगा । तुमने और भी कुछ सुना', चौथे नागरिक ने आगे-आगे चलते हुए

कहा, 'महारानी के पिता के लिए भी कन्या की खोज हो रही है।'

'अरे सच, तब तुम अपने सम्बन्धी वासुदेव शिवराम खान वलकर की कन्या चिमणाबाई से उनका विवाह करवा दो।'

'ठीक सुझाव दिया मित्र, एक पंथ दो काज हो जाएँगे···कन्या के विवाह से निश्चित हो जाएँगे और हमारे महाराजा के सम्बन्धी के सम्बन्धी हो जाएँगे।'

'बड़ी दूर की सोचते हो मित्र,' युवक नागरिक खिलखिला कर हँस पड़ा। 'महाराजा को प्रसन्न करने का बहुत अच्छा अवसर है।'

'पर याद रखो; खाली चापलूसी महाराजा साहब पसन्द नहीं करते, चाटुकारों से उन्हें घृणा है। ठोस कार्यकर्ता ही उन्हें पसन्द हैं।'

'हम भी जी जान से उनकी सेवा कर रहे हैं मित्र,' राज्य सैनिक कर्मचारी मुस्कराकर गुनगुनाते हुए बोला, 'तभी आप जैसे घर के दरवाजे खुले छोड़कर सोते हैं, जब हम सारी रात जाग कर खोते हैं।'

'वाह ! वाह ! मेरे मित्र, आज तो तुममें भी कवि के भाव भर गए ···वैसे आज का दिन ही बड़ा रंगीला है।'

'रंगीला क्यों नहीं होगा भाई मेरे, हमारी नई महारानी महल की शोभा बढ़ाने को आ गई हैं।'

'अच्छा मित्र विदा, फिर मिलेंगे।' राज्य सैनिक कर्मचारी ने अपने साथियों की ओर हाथ हिलाकर चलते हुए कहा, 'हमारा कर्तव्य हमें पुकार रहा है।'

'भाई मेरे, तुम्हें राज्य कार्य का कर्तव्य पुकार रहा है, हमें घर के कर्तव्य पुकार रहे हैं। छुट्टी के दिन ही घर-गृहस्थी का सामान लाना होता है।' प्रौढ़ नागरिक ने चलते हुए कहा, 'तुम्हारे सिर पर गृहस्थी का भार नहीं आया है···।'

'तभी बे-नाथे बैल की तरह घूम रहे हो', तीसरे नागरिक ने प्रौढ़ नागरिक की बात काटकर हँसते हुए कहा, 'मित्र, यह बात आज तुम कैसे कहना भूल गए, वरना सबसे पहले यही बात तुम हमें बताते थे ?'

'अरे तुम्हारी भाभी के मँगाए सामान को न भूल जाऊँ, फिर तो विवाह-समारोह का आनन्द उनकी तीखी बातों से किरकिरा हो जाएगा।'

'जाओ भाई, जल्दी जाओ, सचमुच हमारी भामी कहीं बेलन का अस्त्र लेकर तैयार न खड़ी हों, सायंकाल तो क्या, रात्रि ही हो गई है, हमारे लिए तुम्हारे घर आने के द्वार बन्द मिलें।'

'हँस लो मित्र, जब तक बन्धन में नहीं बँधते।' प्रौढ़ नागरिक ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'विवाह होते ही आटे-दाल का भाव मालूम हो जाएगा।'

'भाई मेरे, आटे-दाल का भाव तो हमें हमारी भाभी ने बता दिया, हमें चिन्ता नहीं, चिन्ता इस बात की है कि हमारी पत्नी हमारी भाभी की तरह निरक्षर आ गई, तब हम तो माथे पर हाथ रखकर रोएँगे।'

'देखो मित्र हँसी छोड़ो, मेरी साली सुन्दर है, तुम्हारी भाभी से अधिक बुद्धिमान है, तुम्हारे सारे घर का कार्य संभाल लेगी।'

'अच्छा जी, अभी आपका मन भाभी के ताने और व्यर्थ के कार्यों से नहीं भरा, जो अपनी साली को मेरे साथ बाँध कर अपने रहे-सहे सिर के बाल झड़वाना चाहते हो।'

'मित्र मेरे, खोपड़ी पर दो-चार बाल इधर-उधर खड़े हुए हैं, गँजी चाँद पर ठीक प्रहार बैठता है।' तीसरे नागरिक ने हँसते हुए प्रौढ़ नागरिक की ओर देखा, 'जाओ मित्र, सचमुच ही यह दो-चार बाल भी हमारी बातों में उलझ कर भाभी के हाथों न खो बैठो।'

'बच्चू, हँसी उड़ा लो, वह दिन दूर नहीं, जब मैं तुम्हारा परिहास करूँगा।'

'मेरे मित्र, ऐसी तो बद्दुआ न दो। मैंने सुना है मेरी भावी पत्नी भी शस्त्र चलाने में निपुण है, एक निशाने में ही पगड़ी दूर जा पड़ेगी, फिर सिर के बालों की कहाँ कुशल।'

'महाराजा के विवाह का समारोह देखकर इतने बेसुध क्यों हो गए मेरे भाई, अपने-अपने घर का रास्ता भूल कर फिर महल के समीप आ पहुँचे।'

'तुम्हारी बातों में फँसकर सदैव मेरी दुर्गति होती है।' प्रौढ़ नागरिक लम्बे-लम्बे डग भरता एक गली में मुड़ गया।

युवा नागरिक हँसते हुए सजे हुए बाजारों की शोभा देखने चल पड़े।

उनका राज्य सैनिक-कर्मचारी बन्दूक संभाले महल की ओर लम्बे-लम्बे डग भरता भागा चला जा रहा था।

८

टन-न-न-न करके मन्दिर की घण्टी प्रातःकाल होने की सूचना दे रही थी। शंख-घण्टे-घड़ियाल के शब्द दूर-दूर तक गूँजते हुए भक्तों को संदेश दे रहे थे। नया दिन तुम्हारी उन्नति का संदेश लेकर आया है।

'उठो, व्यर्थ समय न खोकर उसका प्रयोग अच्छे कार्यों में करो।' मोरोपन्त घण्टे-शंख के शब्द से चौंककर उठे और अपने नित्य कर्म से निबटकर अपने इष्ट के ध्यान में बैठ गए।

चिमणाबाई ने जल्दी-जल्दी जलपान तैयार किया और चौकी पर जलपान की सामग्री रखकर मोरोपन्त के समीप की चौकी पर बैठ गई।

मोरोपन्त अपने इष्ट का ध्यान करते-करते व्यतीत हुए दिनों की स्मृति में खो गया। एक मामूली मनुष्य महाराजा का ससुर बन गया और बड़े सरदार का पद पा गया।

कल तक जो जीवन-निर्वाह करने को दूसरों का मुख देखता था, अब दूसरों के जीवन-निर्वाह का सहारा बन गया।

मनू जो एक हाथी पर चढ़ने के लिए छटपटा रही थी, उसके महल के सामने बीसियों हाथी खड़े हुए झूम रहे हैं।

अपने धर्मभाई नाना साहब को भी उसने कई हाथी उपहार में भेजे हैं। कैसे जीवन में नये-नये परिवर्तन आए हैं।

चिमणाबाई समीप चौकी पर बैठी हुई मोरोपन्त के मुख के उतरते-चढ़ते भावों को देख रही थी। मोरोपन्त सोचते-सोचते मुस्कराया, आँखें खोल कर उसने सामने देखा···

चिमणाबाई उसके मुंह की ओर देखे जा रही थी। 'ऐसे ध्यान से क्या देख रही हो, चिमणाबाई।' मुस्कराते हुए मोरोपन्त ने चिमणाबाई की ओर देखा, 'कोई विशेष बात है क्या?'

'यही तो मैं पूछना चाह रही थी। न जाने आप किस ध्यान में खोए हैं।' चिमणाबाई ने मोरोपन्त की ओर देखते हुए कहा, 'किस बात पर मुस्करा रहे थे, क्या याद आ गया?'

'अपने पिछले दिनों की याद आ गई थी चिमणाबाई···मनू ने मेरे नीरस जीवन को सरल बना दिया।'

'तुम्हारी मनू महारानी लक्ष्मीबाई बन गई। महाराजा गंगाधरराव ने तुम्हारी मनू का नाम लक्ष्मीबाई रख दिया है, पर एक बात सुन कर बहुत दुख हुआ।'

'क्या बात सुनी, चुप क्यों हो गई, चिमणाबाई···?'

'क्या बताऊँ, सुना है महाराजा गंगाधरराव और मनू के स्वभाव में आकाश-पाताल का अन्तर है।' चिमणाबाई ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'हमारी मनू का सारा जीवन कैसे व्यतीत होगा?'

'हाँ, विशेष कर्मचारी भी बता रहा था। उसकी पत्नी राजमहल में जाती रहती है, उसी ने अपने पति को बतलाया था। महारानी लक्ष्मीबाई पर्दे के भीतर रहती हैं और चारों ओर से उन्हें स्त्रियाँ घेरे रहती हैं।'

'कहाँ हमारी मनू स्वतन्त्रता से घूमने वाली, कहाँ वह महल के कमरे में बन्दिनी की तरह समय व्यतीत कर रही है।'

'इस समय ऐसी बातें सोचने का समय नहीं है। अब हम कुछ नहीं कर सकते।'

'सुना है, काशीबाई, सुन्दर-मुन्दर को महाराजा गंगाधरराव ने मनू की सेवा के लिए नियुक्त किया था। मनू के अच्छे व्यवहार ने उन्हें मनू की सखियाँ बना दिया है।'

'वैसे हमारी मनू बुद्धिमान है, वह थोड़े समय में गंगाधरराव को प्रसन्न करके अपने मन के अनुसार उनसे कार्य करवा लेगी, मुझे ऐसा विश्वास है चिमणाबाई।'

'विश्वास पर ही जीवन व्यतीत होता है, पर आपने एक खिलते फूल को मुरझाए पुष्प से बाँध दिया।' चिमणाबाई ने मोरोपन्त की ओर देखते

हुए कहा, 'आपने ऐश्वर्य ठाट-बाट देखा, बालिका की किस प्रकार आयु व्यतीत होगी, यह नहीं देखा···।'

'चिमणाबाई जो हो चुका वापिस नहीं आ सकता, उसे भूल जाओ, मेरी बेटी महारानी है, यही सोचकर मैं और सारी बातें भूल जाता हूँ।'

'···तुम भी और सब बातें भूल कर प्रसन्न रहो, अब की बार दरबार में जाऊँगा, तब महाराजा साहब से कहूँगा, लक्ष्मीबाई को चिमणाबाई से मिलने भेज दें। मुझे विश्वास है चिमणाबाई, लक्ष्मीबाई तुमसे मिलकर बहुत प्रसन्न होगी।'

'मैं तो आप ही आ गई बा साहब', कमरे में आकर लक्ष्मीबाई चिमणाबाई से चिपटते हुए बोली, 'थोड़ी देर को आप सबके दर्शन करने आ गई मा साहब, मुझे शीघ्र ही वापिस लौटने की आज्ञा है।'

'तुमसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।' जोर से छाती से चिपटा कर चिमणाबाई बोली, 'बहुत दिनों से तुमसे मिलने की इच्छा थी। सोचती थी, महाराजा साहब तुम्हें हमारे पास भेजेंगे या नहीं। हमसे मिलने की आज्ञा देंगे या नहीं?'

'माँ साहब, महाराजा साहब से झगड़कर मन्दिर में जाने की आज्ञा लेकर आई हूँ, आप से मिलने की भी आज्ञा ले ली थी।' कहते हुए लक्ष्मीबाई की आँखों में आँसू छलछला आए।

मुँह मोड़कर उसने आँसू पोंछ डाले, फिर मोरोपन्त की ओर देखती हुई बोली 'आप सबको एक बार देखने की इच्छा थी, अब चलूँ साहब!'

'जाओ बेटी।' मोरोपन्त ने आँसू पोंछते हुए मनू की ओर देखा। चिमणाबाई ने अपने हाथ से मिठाई खिलाकर लक्ष्मीबाई को डोली में बैठा दिया।

डोली लेकर सेवक महल की ओर चल पड़े, चिमणाबाई एक-टक उसी ओर देखती रही। जब डोली आँखों से ओझल हो गई, तब आँसू पोंछती हुई अपने कमरे में आकर लेट गई।

उसकी आँखों के सामने लक्ष्मीबाई का भोला उदास मुख बार-बार आकर उसके हृदय में उथल-पुथल मचा रहा था।

लक्ष्मीबाई ऐश्वर्य-सुख-भोग में प्रसन्न नहीं है। उसके पिता अपनी पुत्री को रानी बनाकर प्रसन्न हो रहे हैं।

पर जो रानी बनी है, उसकी हृदय की बात भी किसी ने जाननी नहीं चाही। यह स्वार्थी दुनिया है। यहाँ किसी के हृदय की बात समझने वाला कोई सहृदय व्यक्ति ही होगा।

उसके पिता अपने सुख में अपनी पुत्री के हृदय का दुख न देख सके, मैं तो विमाता हूँ, उस भोली बालिका के हृदय की बात कैसे समझ सकूँगी ?

पर नारी-नारी के हृदय की बात समझ सकती है। उसकी हृदय की भावनाओं को समझ कर भी मैं उसके दुख को नहीं बाँट सकती। सोचते हुए चिमणाबाई टकटकी लगाकर उधर ही देखती रही, जिधर से लक्ष्मीबाई की पालकी गई थी।

थोड़ी देर में कई राज्य सैनिक कर्मचारी घुड़सवार मन्दिर की ओर जाते दिखाई दिए।

चिमणाबाई सोचती रह गई कि यह डोली के पीछे-पीछे घुड़सवार महाराजा साहब ने क्यों भेजे, क्या लक्ष्मीबाई को अब इतना भी अधिकार नहीं कि अपने माँ-बाप के पास थोड़ा समय व्यतीत कर ले। घुड़सवार मन्दिर की ओर से होते हुए जिस ओर से आए थे, उसी ओर वापिस लौट गए।

चिमणाबाई ने साड़ी के आँचल से आँसू पोंछ डाले और जलपान की सामग्री लेकर मोरोपन्त के समीप पहुँची। मोरोपन्त तकिए में मुँह छुपाए लेटा था।

चिमणाबाई को देखते ही उसने करवट बदल ली। 'अरे यह क्या, तुम तो रो रहे हो।' अपनी साड़ी से मोरोपन्त के आँसू पोंछती हुई चिमणाबाई बोली, 'अभी तो मुझे समझा रहे थे, अब स्त्रियों की तरह आप भी आँसू बहाने लगे।'

'धन-सम्पत्ति से ही सच्चा सुख नहीं मिलता चिमणाबाई। लक्ष्मीबाई इतना ऐश्वर्य, राज्य-सुख पाकर भी सुखी नहीं।'

'थोड़ी देर की भेंट से ही मुझे यह सब मन ने बता दिया। रोतों को

हँसाने वाली, किसी के सामने व्यर्थ बातों पर न झुकने वाली मनू, लक्ष्मीबाई अब गम्भीरता की मूर्ति बन गई, तुम सच कह रही थीं चिमणाबाई, खिलने से पहले फूल को अनाड़ी माली के हाथों सौंप दिया गया।'

'समय निकल गया, थोड़ी देर पहले आप मुझे समझा रहे थे। अब उस समय को जब हम वापिस नहीं ला सकते, तब अब दुख से क्या लाभ।'

कहते हुए चिमणाबाई ने अपने हाथ से लड्डू का टुकड़ा मोरोपन्त के मुँह में दे दिया।

८

अभी सूर्य निकलने में देर थी। आकाश में हल्की लाली कहीं-कहीं दिखाई दे रही थी।

लक्ष्मीबाई धीरे-धीरे चारों ओर देखती हुई अपने महल से बाहर एक सुनसान कोने में आकर खड़ी हो गई और धीरे से सीटी बजाई।

सीटी का शब्द सुनते ही सुन्दर-मुन्दर उनकी सहयोगी काशीबाई कई महिलाओं के साथ लक्ष्मीबाई के समीप आईं और झुककर सबने महारानी लक्ष्मीबाई का अभिवादन किया।

लक्ष्मीबाई ने मुस्कराते हुए सब के अभिवादन का उत्तर दिया। और काशीबाई की ओर देखती हुई बोली, 'काशीबाई! आज इन सबको पहले तलवार चलाने की शिक्षा देना, फिर और कार्य सिखाए जाएँगे।'

'आज सुन्दर-मुन्दर की घुड़सवारी में प्रतियोगिता होगी।'

'जैसी महारानी की आज्ञा।' कहते हुए काशीबाई सब महिलाओं को लेकर किले के एक बड़े भाग की ओर चली गई।

लक्ष्मीबाई एक ऊँचे स्थान पर खड़ी होकर सुन्दर-मुन्दर की घुड़सवारी की प्रतियोगिता देखने लगी।

मुन्दर से सुन्दर घोड़ा तेज दौड़ा रही थी। घोड़ा दौड़ते हुए सुन्दर-मुन्दर से जैसे ही आगे बढ़ी, तभी बिजली की सी तेजी से मुन्दर घोड़ा दौड़ाती हुई सुन्दर से आगे निकल गई।

और प्रतियोगिता संकेत-चिह्न पर जाकर लगाम खींचकर घोड़े से उतरी।

उसका सांस बहुत तेज चल रहा था। मुँह लाल होकर ओंठ सूख गए थे।

महारानी लक्ष्मीबाई अपने स्थान से उतरी और मुन्दर को छाती से चिपटाते हुए बोली 'मुन्दर, तूने मेरा सारा परिश्रम सफल कर दिया।'

मुन्दर महारानी लक्ष्मीबाई के चरणों में गिर पड़ी और बोली, 'महारानी जी! यह आपका ही प्रताप है, जो सुन्दर से प्रतियोगिता में मैं विजयी हुई। पहले घोड़े की लगाम पकड़ते हुए भी मुझे भय लगता था।'

'अब तो कूद कर घोड़े की पीठ पर चढ़ सकती हूँ।'

'आज तू मुझसे बाजी जीत गई मुन्दर।' सुन्दर घोड़े से उतर कर मुन्दर से बोली, 'कायर कहलाने वाली कैसे बहादुर बन गई?'

'हमारी महरानी की सेविका ही वीर नहीं होंगी तो और कौन वीर बनेगा, वीरों के साथ रहने पर भी वीर न बने तो फिर जीवन व्यर्थ है।'

'सुन्दर-मुन्दर आज से तुम दोनों मेरी अंगरक्षक नियुक्त हुईं।' महारानी लक्ष्मीबाई ने बारी-बारी से दोनों की कमर में अपने हाथ से कटार पेटी में रखी, सिर पर सुनहरी कलगी लगी टोपी पहनाई और दोनों की पीठ थपथपा कर मुस्कराती हुई तैरने के लिए तालाब की ओर चल पड़ी।

कई महिलाएँ वहाँ पर बैठी हुई उनकी प्रतिक्षा कर रही थीं। सभी ने झुककर अपनी महारानी का अभिवादन किया।

दासी ने महारानी को तैरने की पोशाक दी। समीप बैठी हुई महिलाओं ने तैरने के वस्त्र पहने और तैरने के लिए तैयार हो गईं।

महारानी लक्ष्मीबाई के सीटी बजाकर छलांग लगाते ही सब उस तालाब में कूद पड़ीं। बड़ी देर तक महिलाएँ तैरकर एक दूसरे से आगे निकलने का प्रयत्न करती रहीं।

फिर एक दूसरे पर पानी उछाल-उछालकर प्रसन्न होती हुईं, दूर तक तैरती चली गईं।

लक्ष्मीबाई तैरती हुई तालाब के दूसरे किनारे पर जाकर, वापिस आ रही थीं। तभी उन्हें किसी महिला के चिल्लाने का शब्द सुनाई दिया। बचाओ ! बचाओ ! मैं मरी, कोई जन्तु मेरे पाँव से चिपट गया है। लक्ष्मीबाई की सहायिका तैरती हुई उस महिला के पास पहुँची। पानी में उगी हुई कोई जंगली झाड़ी उस महिला के पाँव से उलझ गई थी।

कोई भयंकर जन्तु चिपट गया, यही समझ कर वह महिला चिल्लाई थी। महारानी की सहायिका उस महिला के पाँव को झाड़ी से छुड़ाते हुए खिल-खिलाकर हँस पड़ी।

'बस, इसी बल पर हमारी सेना में भरती हुई हो, यहाँ भीरु का काम नहीं।'

सभी महिलाएँ तालाब से बाहर आईं और उसका भीरुपन सुनकर उसे धिक्कारने लगीं। 'तुमने तो हमारा कार्यक्रम भी गड़बड़ कर दिया। सारे कार्य अधूरे रह गए, भला देख तो लेतीं कौन-सा जीव चिपट गया।'

'यह क्या देखती', लक्ष्मीबाई की सहायिका बोली, 'भय से आँखें मींचे थी। मैं न पहुँचती तो सम्भव है, भय के कारण यह डूब जाती।'

'तुम हमारी सेना के योग्य नहीं हो।' लक्ष्मीबाई ने उस महिला की ओर देखते हुए कहा, 'हमारी सेना में भीरु के लिए कोई स्थान नहीं है।'

'क्षमा करना महारानी', महिला, महारानी लक्ष्मीबाई के सामने हाथ जोड़कर झुकते हुए बोली, 'एक अवसर और दीजिए, आपको फिर कभी मेरे विषय में भीरुपन की शिकायत नहीं मिलेगी।'

काशीबाई अपने साथ उन सारी महिलाओं को लेकर आ गई, जिन्हें अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी जा रही थी। महिलाओं ने आकर महारानी का अभिवादन किया। महारानी ने उन सब महिलाओं को अभिवादन का उत्तर देते हुए उन्हें अपने-अपने घर जाने की आज्ञा दी।

सभी महिलाएँ अपनी महारानी का आदेश पाकर अपने-अपने घर चली गईं। लक्ष्मीबाई ने काशीबाई को अपने समीप बुलाया और उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'आज से तुम इस महिला सेना की सेनानायक बनाई जाती हो।'

'काशीबाई ! हमें आशा है, अपनी महिला सेना को युद्ध विद्या में तुम निपुण कर दोगी।'

'महारानी साहिबा, आप के प्रताप से मैं अपना कर्त्तव्य पूरा करने का यत्न कर रही हूँ। कई महिलाएँ बन्दूक चलाने में निपुण हो गई हैं। आठ-दस महिलाओं को तोप चलाने की शिक्षा निपुण तोपची गौसखाँ से दिलवा रही हूँ।'

'इन कार्यों के प्रति तुम्हारी रुचि देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई काशीबाई, पर यह याद रखना, अभी यह कार्य गुप्त रखा जाए। महाराजा साहब को भी किसी विशेष अवसर पर अपनी महिला सेना का युद्ध कौशल दिखाएँगे।'

'वह हमें अवश्य सहयोग देने को तैयार हो जाएँगे। ऐसा मेरा विश्वास है महारानी साहिबा।'

'अभी उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं। वायु परिवर्तन के लिए हम कहीं दूसरे स्थान पर जाने का विचार कर रहे हैं। तभी आकर अपनी महिला सेना के विषय में महाराजा साहब को बताएँगे।'

'यहाँ से सैनिक शिक्षा लेकर जो महिलाएँ अपने घर जाती हैं, वह अपने पति से यहाँ की बातें नहीं बतलाती होंगी?' सुन्दर ने काशी-बाई के समीप आकर धीरे से कहा, 'आप समझती हैं, आपकी यह योजना गुप्त रहेगी?'

'जिन महिलाओं को हमने अपनी महिला संस्था बनाकर उसमें सम्मिलित किया है। उन्हें एक शपथ लेनी पड़ती है।'

'सच, काशीबाई जी उस शपथ की बात तो हमें भी ज्ञात नहीं।' सुन्दर ने मुस्कराकर काशीबाई की ओर देखते हुए कहा, 'आप क्या शपथ दिलाती हैं, उसके विषय में मुझे भी तो बतलाइए?'

'किसी समय आपको भी वह शपथ बताऊँगी, वैसे बिना शपथ लिए आप बहुत से आवश्यक कार्य गुप्त रूप से कर रही हैं। अब मेरा गृहस्थी संभालने का समय हो गया।' काशीबाई ने मुस्कराकर सुन्दर की ओर देखा, 'बच्चे बैठे हुए मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगें।'

'सच, आपके बच्चे भी हैं', सुन्दर हँसते हुए बोली, 'आपका स्वास्थ्य,

चमकदार रँग, छरहरा बदन देखकर मैं तो आपको कुँवारी समझ रही थी।'

'प्रतिदिन, व्यायाम स्वास्थ्यवर्धक भोजन, अथक परिश्रम ने काशीबाई का ऐसा स्वास्थ्य बनाया है। साथ रहकर भी तुम इस भेद को न जान सकीं।'

लक्ष्मीबाई दूर खड़ी हुई इनकी बातें सुन रही थी, सुन्दर की बातों पर उन्हें हँसी आ गई। वह अपने महल की ओर चल दी। अपनी रानी को महल की ओर जाते हुए देखकर विशेष दासी भी पीछे भागी। उसे आदेश था, जब तक रानी साहिबा व्यायाम करें, महल के द्वार पर बैठी रहो। यदि राजा साहब पधारें, तब तुरन्त सूचना दो।

१०

प्रातःकाल निश्चित स्थल पर सभी महिला संस्था की महिलाएँ आ जाती थीं। आठ बजे तक अपने घर वापिस जाकर गृहस्थी का कार्य संभाल लेती थीं।

पुरुष समझते थे यह महिला संस्था, स्त्रियों के स्वास्थ्य के लिए व्यायाम, तैरने की शिक्षा दे रही है, पर उसका और भी उद्देश्य है, यह उन महिलाओं के पति भी न जान सके थे।

धीरे-धीरे महिलाएँ अस्त्र-शस्त्र चलाने की, युद्ध की शिक्षा ले रही थीं। महाराजा गंगाधरराव को भी अभी तक यह ज्ञात नहीं था। उनकी किशोर रानी युवती होने के साथ अनुभवी सेनापति भी बनती जा रही है।

महारानी लक्ष्मीबाई निश्चित समय पर संकेत स्थल पर न पहुँची तब काशीबाई को चिन्ता हुई। महिला संस्था की सभी महिलाएँ संकेत स्थल पर पहुँचकर प्रतिदिन के कार्यक्रम की प्रतीक्षा कर रही थीं।

महारानी प्रतिदिन समय से पहले ही पहुँच जाती थीं, आज क्या कारण हुआ जो अभी तक नहीं आईं, सोचते हुए काशीबाई महारानी

लक्ष्मीबाई के महल के विशेष कमरे में पहुँची ।

लक्ष्मीबाई पंलग पर लेटी थी । काशीबाई ने समीप पहुँच कर प्रणाम करते हुए लक्ष्मीबाई से कहा, 'महारानी जी, महिला संस्था की महिलाएँ नियत स्थान पर पहुँच चुकी हैं ।'

'अब आपका क्या आदेश है, स्वास्थ्य ठीक नहीं है क्या ?'

'मेरी तबियत आज अधिक खराब है । जी मितला रहा है ।' लक्ष्मीबाई ने काशीबाई की ओर देखते हुए कहा 'मैं उधर न आ सकूंगी, तुम प्रतिदिन का कार्य नियम से करवा लो ।'

'महारानी, आपकी जो इस समय दशा है, मैं उस दशा से गुजर चुकी हूँ, मुझे ज्ञात है, उस दशा में रुचि में बहुत परिवर्तन हो जाता है ।'

'किसी वस्तु के खाने में रुचि नहीं है, वैद्य जो औषधि दे रहे है, उसे तो दूर से देखकर ही जी मितला जाता है ।'

'चिन्ता न करें महारानी, औषधि को दिल नहीं करता, न लें··· आपकी जिस वस्तु में रुचि हो, वही लीजिए । रोग नहीं शुभ लक्षण हैं, हमारे उत्तराधिकारी आने वाले हैं ।'

'अच्छा व्यर्थ बात मत कर, तू जाकर अपनी महिला सेना का निरीक्षण कर ले, मैं विश्राम कर रही हूँ ।' कहते हुए महारानी लक्ष्मीबाई ने करवट बदली । काशीबाई मुस्कराते हुए बाहर चली गई ।

काशीबाई कह रही है शुभ चिह्न हैं । मन-ही-मन सोचते हुए लक्ष्मीबाई ने लम्बी साँस ली । खाने पीने में अरुचि हो गई है । किसी कार्य में मन भी नहीं लगता । महारानी लक्ष्मीबाई अपने विचारों में खोई थी ।

तभी दासी ने आकर सूचना दी, 'महाराजा साहब महल में पधार रहे हैं ।'

आज असमय कैसे महाराजा साहब महल में आ रहे हैं । सोचते हुए लक्ष्मीबाई महाराजा गंगाधरराव के सम्मान के लिए खड़ी हो गई ।

महाराजा गंगाधरराव महारानी लक्ष्मीबाई के कमरे में आए··· लक्ष्मीबाई ने उनके चरण छूकर उन्हें आदर से पलँग पर बैठाया ।

'महारानी सोच रही होंगी, मैं इस समय महल में कैसे आया ?' महा-

राजा गंगाधरराव ने लक्ष्मीबाई की ओर देखते हुए कहा''''बड़ी कठिनाई से समय निकाल कर आया हूँ।'

'मेरा सौभाग्य है, महाराज ने इस समय दर्शन देने की कृपा की।'

'राज कार्यों ने हमें इस तरह घेरा है कि उनसे अवकाश ही नहीं मिलता। अब तीर्थ-यात्रा के लिए हमने अंग्रेज शासकों को लिखकर तीर्थ-यात्रा का प्रबन्ध कराया है।'

'हमारी बहुत दिन से तीर्थ-यात्रा की इच्छा थी, अब पूरी होगी।'

'आपने तीर्थ-यात्रा का बहुत ही अच्छा कार्यक्रम बनाया।' महारानी लक्ष्मीबाई ने महाराजा गंगाधरराव की ओर देखते हुए कहा, 'मैं अपने साथ सुन्दर-मुन्दर और कई दासियों को ले जाना चाहूँगी, क्या आप उन्हें मेरे साथ चलने की आज्ञा देंगे।'

'आप महारानी हैं, जिसे चाहे साथ ले जा सकती हैं।' लक्ष्मीबाई की ओर देखकर महाराजा साहब मुस्करा दिए।

'व्यायाम करके स्वास्थ्य तो खूब बना लिया है। किशोरी से युवती बन गई हो।'

लक्ष्मीबाई ने लजाकर सिर झुका लिया।

'फेरों के समय तो तुम्हें लज्जा नहीं आई,' 'गंगाधरराव ने प्रेम से लक्ष्मीबाई के सिर को ऊपर उठाते हुए कहा, 'पंडित से कहकर गठबन्धन मजबूत बन्धवाया, अब क्यों लजा रही हो?'

'काशी की ओर भी तो हम तीर्थ-यात्रा करने जाएँगे।' महारानी लक्ष्मीबाई ने बात पलटते हुए कहा, 'काशी तो तीर्थों का गढ़ है।'

'काशी तो अवश्य जाएँगे।' 'महाराज गंगाधरराव मुस्कराए, 'तुम्हारी जन्मभूमि देखने को मिलेगी, तुम्हें तो वहाँ पहुँचकर और भी अधिक प्रसन्नता होगी।'

'आपके साथ तीर्थ-यात्रा में आनन्द क्यों नहीं आएगा, ऐसा शुभ अवसर भाग्य से मिलता है।'

'अच्छा अब चलें, कई आवश्यक राज्य कार्य करने हैं। अब तुम चार-पाँच दिन में पूर्णरूप से तीर्थ-यात्रा की तैयारी कर लेना।' कहते हुए महाराजा गंगाधरराव महल से बाहर चले गए।

महाराजा गंगाधरराव के बाहर जाते ही लक्ष्मीबाई ने दासी को बुलाया और सुन्दर-मुन्दर को बुला कर लाने की आज्ञा दी।

दासी तुरन्त ही भागी हुई सुन्दर-मुन्दर के निवास-स्थान पर पहुँची और शीघ्र ही उन्हें साथ लेकर लक्ष्मीबाई के महल की ओर चल पड़ी।

सुन्दर-मुन्दर दोनों को ही चिन्ता हुई, रानी साहिबा ने इस समय हमें अपने महल में क्यों बुलाया, कहीं महिला संस्था का भेद तो नहीं खुल गया।

मन-ही-मन सोचती हुई दोनों लक्ष्मीबाई के महल में पहुँचीं। उनके हृदय धड़क रहे थे, मुँह उतर गया था। लम्बे-लम्बे डग भरती हुई लक्ष्मीबाई के विश्राम के कमरे में पहुँचीं।

और अभिवादन करते हुए बोलीं, 'महारानी साहिबा ने इस समय हमें कैसे याद किया ?'

'सुन्दर, महाराजा साहब तीर्थ-यात्रा पर जाने की तैयारी करने को कह गए हैं। मैं चाहती हूँ, तुम दोनों भी मेरे साथ चलो। तीर्थ-यात्रा भी हो जाएगी, बाहर के कई राज्यों से भी परिचित हो जाएँगे।'

'अभी तो झाँसी की चारदीवारी के अतिरिक्त हमने कुछ नहीं देखा महारानी जी।'

'अब बाहर के प्रान्तों को भी देखो, तब आपको अनुभव होगा, उनकी सैनिक शिक्षा और हमारी सैनिक शिक्षा में कितना अन्तर है। इस तीर्थ-यात्रा में हमें तीर्थधाम के दर्शन करके ही सन्तुष्ट नहीं होना है। राज्यों की गतिविधि पर ध्यान देना है।'

'रानी जी, आप इतना बड़ा उद्देश्य लेकर तीर्थ-यात्रा करने जा रही हैं, हम तो साधारण यात्रा समझ रहे थे। आपकी जन्मभूमि तीर्थों का गढ़ है, उसके भी दर्शन करके नेत्र शीतल करेंगे।'

'अब तुम शीघ्र यात्रा की तैयारी आरम्भ करो। पर याद रखो, हमारे पीछे हमारी महिला संस्था का कार्य भली प्रकार चलता रहे, इसका भी ध्यान रखना। उसे ऐसे हाथों में सौंपना जो कार्य को सुचारु रूप से आगे बढ़ाएँ।'

'महारानी जी, आप चिन्ता न करें।' मुन्दर मुस्कारते हुए बोली,

'आपको तलाब वाली उस दिन की घटना याद होगी···सम्भव है उस महिला को भी भूली नहीं होंगी, जिसे भीरु कहकर आप महिला सेना से निकाल रही थीं।'

'इस समय तुम्हें वह बातें याद दिलाने की क्या आवश्यकता हो गई मुन्दर ! इस समय हम तुम्हें जो बात समझा रहे थे, उस विषय के बाहर क्यों जा रही हो ?'

'महारानी क्षमा करें, मैं आपको याद दिलाने के कारण इस विषय को दुहराने लगी। वह भीरु महिला इस समय हमारी महिला सेना की सेनानायक बन गई है।'

'अस्त्र-शस्त्र चलाने में तो निपुण है ही, तोप चलाना भी हमारे वीर तोपची गौसखाँ से सीख चुकी है।'

'उसी महिला को उसकी सहयोगियों सहित महिला संस्था का भार सौंप दिया गया है।'

'हम महाराजा साहब को कब अपनी वीर महिला सेना के प्रदर्शन दिखाएँगे रानी जी ?'

'अब जाकर तीर्थ-यात्रा की तैयारी करो और हमारी तैयारी में भी सहयोग दो। समय आएगा तब महाराजा साहब तुम्हारी महिला सेना का प्रदर्शन देखकर आश्चर्य में भर जाएँगे।'

'तीर्थ-यात्रा का शुभ अवसर बड़े भाग्य से मिलता है रानी जी। देखना, सबसे पहले मैं ही आपको तीर्थ-यात्रा के लिए पूर्ण रूप से तैयार मिलूंगी।' हँसती हुई सुन्दर-मुन्दर चली गई।

११

झाँसी के किले में आज अनूठी ही चहल-पहल थी। रंग-बिरंगी पताकाओं और केले के खम्बे, फूलों की झालरों से गली, बाजार, चौक सजे हुए थे।

अनेक प्रकार के बाजों के साथ शहनाई की धुन महारानी लक्ष्मीबाई

के महल से गूंजती हुई किले के बाहर भी सुनाई दे रही थी।

अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्रों से सजे हुए नागरिक, राज्य कर्मचारी महाराजा गंगाधरराव के राजमहल की ओर प्रसन्न होते हुए, महाराजा गंगाधरराव को पुत्र-रत्न होने की बधाई देने जा रहे थे। झाँसी का उत्तराधिकारी उत्पन्न हो गया है। चारों ओर प्रसन्नता का सागर लहराता प्रतीत हो रहा था!

महिलाएँ मंगल-गान गाती हुईं महारानी लक्ष्मीबाई के महल की ओर जा रही थीं।

नागरिक राजमहल की ओर एक दूसरे को छेड़ते, प्रसन्न होते, लम्बे-लम्बे डग भरते हुए जा रहे थे।

'जरा ठहरो भाई!' एक नागरिक ने अपने साथी का हाथ पकड़ते हुए कहा, 'तुम तो इतनी तेजी से भागे जा रहे हो, जैसे कुंवर की बधाई का नेग सब से अधिक तुम्हें ही मिलेगा।'

'तुम लम्बे-लम्बे डग भरते हुए क्यों नहीं चल रहे हो···स्त्रियों की तरह धीरे-धीरे क्यों चल रहे हो?' अपने साथी को शीघ्र-शीघ्र चलने के लिए कह कर दूसरे नागरिक ने संकेत करते हुए कहा, 'उधर देखो, महाराजा साहब को पुत्र उत्पन्न होने की बधाई देने के लिए कैसे मानव-सागर उमड़ पड़ा है।'

'झाँसी के उत्तराधिकारी के लिए महाराजा गंगाधरराव कितने चिन्तित थे। बहुत पुण्यदान किए, तीर्थ-धाम गए। तब आशा पूर्ण हुई।'

'महाराजा साहब की तीर्थ यात्रा सफल हुई,' तीसरे नागरिक ने चौथे नागरिक की ओर देखते हुए कहा, 'हमारी महारानी लक्ष्मी हैं, महाराजा साहब ने उनका नाम बिल्कुल ठीक रखा है।'

'महारानी सचमुच लक्ष्मी हैं। उनके आते ही महाराजा साहब को झाँसी राज्य के पूर्ण रूप से सब अधिकार मिल गए थे।'

'अब तो झाँसी राज्य का उत्तराधिकारी भी महारानी ने झाँसी को दे दिया।'

'मैंने तो जब से यह शुभ सूचना सुनी, तुम्हारी शपथ जलपान करना भी भूल गया।'

'तब तो तूने सबसे अधिक महान कार्य किया।' तीसरे नागरिक ने हँसते हुए कहा, 'हम तो दुगुना जलपान करके चले हैं।'

'अरे सामने देखो मित्र', युवा नागरिक ने अपने साथी को संकेत से बताते हुए कहा, 'महिलाएँ मँगल-गान गाती महारानी लक्ष्मीबाई के महल की ओर जा रही हैं।'

'कैसे तेजी से एक साथ सबके पाँव उठ रहे हैं।' जैसे सैनिक कदम से कदम मिलाकर चलते हैं।'

'मैंने तो उड़ती हुई यह सूचना भी सुनी है कि महारानी महिलाओं की सेना तैयार कर रही हैं।'

'बे-परों की उड़ती हुई बातें, कोई तुमसे सुने मित्र मेरे···बिल्ली की म्याऊँ के शब्द से डरने वाली महिलाएँ युद्ध के मैदान में जाएँगी। जहाँ बड़े-बड़े साहसी भी साहस हार जाते हैं?'

'तुम मानों या न मानों, इस बात से कुछ बनता बिगड़ता नहीं···किले के दूसरी ओर के सूने भाग की ओर मैंने घुड़सवार महिलाओं को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा लेते हुए अपनी आँखों से देखा है। अचानक किसी कार्य से मैं वहाँ गया था। मुझे उधर देखकर एक महिला ने फौरन ही दूसरे रास्ते से वापिस जाने के लिए मुझे आदेश दिया।'

'और तुम उसका आदेश मानकर बिल्ली की तरह चुपचाप चले आए।'

'बिल्कुल सैनिक वेष-भूषा में कन्धे पर बन्दूक रखे, वह सम्भवतः पहरा दे रही थी। उसने मेरा मार्ग रोककर आदेश दिया। 'वापिस लौट जाओ, यह स्थान सबके लिए नहीं है।'

'सेना में भर्ती होने के स्वप्न देख रहे हो और महिला के आँखें दिखाते ही गीदड़ की तरह भाग आए।'

'क्या विवाद छेड़ बैठे, तुम्हारी पत्नी को यह सब बातें पता चल गईं तो वह तुम्हें छोड़ेगी नहीं, छठी का दूध याद दिला देगी। क्या समझते हो मेरी भाभी को।'

'क्या इनकी आँखों में धूल झोंककर वह भी महिला सेना में नाम लिखवा रही है।' प्रौढ़ नागरिक ने युवा नागरिक को घूरते हुए कहा,

'ऐसा ज्ञात होता है, तुम्हें महिला सेना की बात बहुत दिनों से मालूम है।'

'क्या महाराजा गंगाधरराव को यह ज्ञात नहीं है कि महारानी लक्ष्मी-बाई चुपचाप महिला सेना तैयार कर रही हैं?'

'महाराजा साहब को ज्ञात है या नहीं, यह तो हमें नहीं मालूम, पर हमें सुनकर प्रसन्नता हुई, अब पुरुष कायरता छोड़कर उनसे आगे बढ़ने का यत्न करेंगे।'

तीसरे नागरिक ने मुड़कर धीरे से अपने साथी के कान में कुछ कहा, वह तुरन्त ही लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ महल की ओर चल पड़ा।

'क्या हुआ भाई, यह रँग में भँग कैसे पड़ने लगा। तुम्हारा मुँह कैसे उतर गया।'

'वह सामने से जो पण्डित वेशधारी मनुष्य जा रहा है, उसे पहचानते हो?'

'हम उसे नहीं जानेंगे तो कौन जानेगा भाई मेरे।'

'इन्हें महाराजा गंगाधरराव नहीं पहचान सके, तुम किस खेत की मूली हो।'

'तुम तो पहेलियाँ बुझा रहे हो मित्र। साफ-साफ बताओ ना?'

'यह भूला सिंह है, इसे दुल्हा सिंह भी कहते हैं मेरे मित्र! यह बहु-रूपिया है।'

'बाहर से तो महाराजा गंगाधरराव के गुण गाता है और इसके हृदय के अन्दर उनके प्रति द्वेष-भाव भरे हैं।'

'तुम ज्योतिषी हो क्या, जो उसके मन के भाव जान गए। यह बातें तो महाराजा साहब के अंगरक्षक भी नहीं जानते।'

'समय पर सब ज्ञात हो जाएगा।' तीसरे नागरिक ने आगे बढ़ते हुए कहा, 'राजनीति की बातें हम नहीं समझ सकेंगे मित्र, उधर देखो, महल के बाहर कितनी भीड़ एकत्र है। महाराजा गंगाधरराव का जयघोष करते हुए वे नवजात कुँवर के दीर्घ आयु होने का आशीर्वाद भी दे रहे हैं।'

'कितनी भीड़ एकत्र है। कन्धे से कन्धा भिड़ रहा है। महाराजा

गंगाधरराव दोनों हाथों से कर्मचारियों को पुरस्कार और ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दे रहे हैं।'

'राज्य सेवकों की पाँचों उँगलिया घी में हैं।'

'मेरे मित्र, महाराजा साहब ने पृथक पुरस्कार दिया है और महारानी जी की ओर से रुपयों के साथ वस्त्र भी मिले हैं।'

'बहुत दिनों की अशा पूर्ण हुई है।' पर मित्र ज्योतिषी ने जन्मपत्री बनाकर देते हुए प्रसन्नता प्रकट नहीं की। उसके मुख को देखकर हमें भी उस समय ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई बात छिपा रहा है।'

तुम्हें कैसे ज्ञात हुआ मित्र, हम तो न पहचान सके।'

'हमें ही ज्ञात नहीं होगा, तब किसे ज्ञात होगा, तुम्हें मालूम है···हम किस पद पर हैं?'

'ओह भूल जाता हूँ।' धीरे से अपने साथी के कान में उसने कुछ कहा, 'तुम राज्य के विशेष···।'

'बस-बस आगे कुछ न कहो।' उसके साथी ने बीच में बात काटते हुए कहा, 'तुम मित्र हो, इस कारण थोड़ी बहुत बातें तुम्हें ज्ञात हो जाती हैं।'

'जनता में सम्मिलित इसी कारण होते हो कि उनकी बातें तुम्हें मालूम हो जाएँ।'

'अब कुछ ही समझ लो, हम तो सभी से प्रेम करने वाले, कुशल चाहने वाले हैं।'

'भाई, तुम से प्रेम करना भी संकट में डालने वाला है और शत्रुता तो विनाश करने वाली है ही।'

'मैं तो इन्हें दूर से ही प्रणाम कर लेता हूँ।'

'बधाई देने, मुँह मीठा करने, मेरे साथ-साथ क्यों भागे आ रहे हो।' राज्य कर्मचारी ने हँसते हुए कहा, 'भाई मेरे राजनीति खिलौना नहीं, तलवार की धार पर चलना है। चलो उधर प्रसाद बँट रहा है, हम भी ले लें।'

१२

गोधूलि बेला थी। पशु-पक्षी वन में भ्रमण करते हुए अपने विश्राम-स्थल की ओर जा रहे थे।

नाना साहब अपने महल के विशेष कमरे में बैठे हुए राज्य कर्मचारियों से किसी विषय पर बात कर रहे थे।

राज्य कर्मचारियों ने धीरे से आपस में बातें करते हुए नाना साहब की ओर देखा, 'श्रीमन्त पेशवा बाजीराव के स्वर्गवासी होते ही अंग्रेज शासकों ने किस प्रकार अपना व्यवहार बदल लिया।'

'अंग्रेजों ने नवाबों, शासकों और राजा महाराजाओं से जो सन्धि की थी, उनसे भी विमुख हो गए हैं।'

पुरानी सन्धि भंग करके नई सन्धि में कई राजाओं के राज्य के भाग सन्धि के साथ अधिकार में कर लिए हैं। हिन्दू-मुसलिम आपस में मतभेद करके अंग्रेज शासकों का साथ देने को तैयार हो गए है।'

'फूट डालो राज्य करो', अंग्रेजों की इस नीति को भारतीय हिन्दू-मुसलिम अब भी न समझ सके।

'हमें विश्वास था, पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र के अधिकार हमें दिए जाएँगे, नए-नए नियम बनाकर अंग्रेज शासकों ने कई रियासतों के शासकों के गोद लिए पुत्रों को उनका उत्तराधिकारी मानने से इन्कार कर दिया।'

'राज्य सम्पत्ति तक पर उनका अधिकार नहीं माना गया। यही अन्याय यहाँ भी हुआ।'

'लन्दन के न्यायालय में भी हमने अपना वकील भेज कर उनसे निर्णय के लिए लिखा था। सब व्यर्थ रहा। यहाँ हम आपस में ही लड़ाई-झगड़े में फँसे हुए हैं। किसी को षड्यन्त्र को समझने का अवकाश ही नहीं है।'

'अपनी स्वतन्त्रता प्रसन्नता से अंग्रेजी शासकों को सौंप कर राजे नवाब विलासिता में डूब गए हैं।'

'विलासिता में डूबे, अपने सुख-ऐश्वर्य के लिए स्वतन्त्रता को खोकर पराधीनता की बेड़ियाँ पहनने वाले, यह राजे नवाब, क्या कभी यह जान सकेंगे कि उनके पूर्वजों ने न केवल अपने सुख-ऐश्वर्य की ही बलि चढ़ाई थी, वरन् अपने साथ सहस्रों मानवों की बलि चढ़ाकर इस स्वतन्त्रता देवी को पाया था।'

'और उनके वंशजों ने थोड़े से सुख-ऐश्वर्य के लोभ में उसे दूसरों के हाथों में सौंप कर स्वयं ही अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मारी है।' 'नाना साहब ये कायर भीरु विदेशियों के तलवे चाट रहे हैं और निर्धनता और करों के भार से दबी हुई जनता से अपने आप को देश प्रेमी कहलाने का अधिकार माँग रहे हैं।'

'समय रहते यह विलासी राजे नवाब नहीं चेते, तो बाकी बची हुई स्वतन्त्रता भी, यह मुट्ठी-भर विदेशी, अपनी चतुराई से छीन लेंगे।' नाना साहब ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'तब उनकी दशा उस पालतू कुत्ते की तरह हो जाएगी, जो थोड़े-से माँस के टुकड़े और दूध के लिए उस मनुष्य के पीछे पीछे चलता है, जिसने उसके गले में पराधीनता का पट्टा पहना कर जंजीर से बाँध कर वश में किया हुआ है।'

'हमारे हितैषी कहे जाने वाले ही हमारे विरुद्ध हो गए हैं श्रीमन्त, दूर बैठे हुए सरदार ने नाना साहब के समीप आकर नम्रता से झुकते हुए कहा, जिन्हें आप अपना सच्चा हितैषी समझते थे··· 'वह सरदार अपनी सेना लेकर अंग्रेज जनरल से मिल गया है। श्रीमन्त उस सरदार का नाम आप स्वयं ही जान गए होंगे।'

'समझ गया, सरदार तुमने ठीक समय पर हमें यह सूचना दी—।' नाना साहब ने सरदार की ओर देखते हुए कहा, 'हम तो उसे और भी विशेष गुप्त कार्य सौंपना चाहते थे। हम समझते थे मनुष्य को परखने की शक्ति हममें है। पर अब समझे वह भ्रम था। हमारी छबीली बहन जो इस समय झाँसी की महारानी है, उस सरदार के कारण उन पर भी संकट आ सकता है।'

'उनका जीवन बहुत संकट में है नाना साहब, गुप्तचर ने सूचना दी

है।' रावसाहब ने आकर नाना साहब से धीरे से कहा, 'आपने सम्भव है अभी नहीं सुना।'

'श्रीमन्त आपने यह तो सुना होगा, उनके पुत्र उत्पन्न हुआ था।' "पुत्र उत्पन्न हुआ था ?' नाना साहब ने राज्य कर्मचारी की ओर देखते हुए कहा, 'हमें यह सूचना पहले क्यों नहीं दी गई, उनके पुत्र के लिए बधाई के साथ मंगल वस्तुएँ भेजते।'

'पहले से सूचना क्या देते श्रीमन्त।' राज्य कर्मचारी ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'कुँवर अभी तीन माह का ही हुआ था कि महारानी की गोद खाली करके स्वर्ग सिधार गया।'

'क्या कहा, कुंवर स्वर्ग सिधार गया।' नाना साहब के हृदय पर इस सूचना के सुनते ही गहरा आघात लगा। वह आँखें मींचकर बैठ गए। उनकी आँखों में आँसू आ गए थे, जिन्हें बलपूर्वक रोकने का वे असफल यत्न कर रहे थे।

मुँह मोड़कर नाना साहब ने आँसुओं को पोंछकर राज्य कर्मचारी की ओर देखते हुए कहा, 'यह सूचना क्या सच्ची है, या किसी द्वेषी की बेपर की उड़ाई गप्प है।'

'श्रीमन्त हमारे विशेष गुप्तचर ने ही आकर हमें सूचना दी है। सुनते ही श्रीमन्त की सेवा में यह दुखदायक सूचना बताने आया हूँ।'

'अभी तो झाँसी राज्य पूर्णरूप से अपने राजकुँवर के उत्पन्न होने का हर्ष भी नहीं मना सका होगा, अचानक उन पर इतना बड़ा शोक का पहाड़ टूट पड़ा।'

'नाना साहब ! महाराजा गंगाधरराव तो तभी से रोगी हो गए हैं। उपचार से भी कुछ लाभ नहीं हो रहा है।' विशेष कर्मचारी ने नाना साहब की ओर देखते हुए कहा, 'मुझे यह सूचना सुनकर पहले विश्वास ही नहीं हुआ था। मेरा सम्बन्धी तीर्थ यात्रा करता झाँसी से यहाँ आया था। उसी से सुना था। महाराजा गंगाधरराव की दशा चिन्ताजनक है।' कर्मचारी ने चारों ओर देखते हुए कहा।

'महारानी लक्ष्मीबाई ने उनके स्वास्थ्य के लिए बड़े-बड़े पण्डित बुला कर जप-अनुष्ठान आयोजन किया है। निर्धन दुखियों को तो पहले भी

दान दिए जाते थे। अब तो याचकों की भीड़ बाहर खड़ी रहती है।'

'प्रभु रक्षा करें, उसके सुख देखने के दिन थे, दुखों ने फिर घेर लिया।' नाना साहब ने लम्बी सांस लेते हुए कहा, 'अब तो उसी सर्व-शक्तिमान का भरोसा है।'

नाना साहब अभी कुछ और कहना चाहते थे, तभी जोर से घोड़ों की टापों का शब्द तेजी से गूँजता हुआ महल के समीप आकर ठहर गया।

उत्सुकता से सभी राज्य कर्मचारियों की दृष्टि उसी ओर उठ गई, धूल से सने, पसीने से तर, लड़खड़ाते हुए घुड़सवार ने सेवक के साथ नाना साहब के सामने आकर झुक कर अभिवादन किया।

उसका मुख उदास था, वह चलते हुए लड़खड़ा रहा था। 'कहाँ से आए हो दूत।' 'उसके अभिवादन का उत्तर देते हुए नाना साहब ने घुड़-सवार की ओर देखते हुए पूछा, इस प्रकार क्यों घबराए-से हो रहे हो··· क्या कोई सकट आ गया है। कोई अशुभ सूचना है।'

'श्रीमन्त, हमारे महाराजा गंगाधरराव का स्वर्गवास हो गया, झाँसी के राज्य कर्मचारियों की सम्मति से यह दुखदायक सूचना देने श्रीमन्त के पास आया हूँ।'

'क्या कहा, महाराजा गंगाधरराव स्वर्ग सिधार गए। हमारी बहन छोटी आयु में ही विधवा हो गई।' नाना साहब की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे···।

वह बलपूर्वक विष का-सा घूंट पीकर आँखों में आए आँसुओं को पोंछते हुए, सूचना लाने वाले की ओर देखते हुए बोले, 'महाराजा गंगा-धरराव, अन्तिम समय झाँसी राज्य के···विषय में कुछ कह गए थे?'

'श्रीमन्त महाराजा गंगाधरराव ने स्वर्गवासी होने से एक दिन पहले आनन्दराव नामक पाँच वर्ष का बालक विधिवत् गोद लिया था। गोद के उत्सव में अंग्रेज पदाधिकारी, राज्य कर्मचारी व सम्मानित नागरिक सभी सम्मिलित हुए थे।'

'क्या महाराजा गंगाधरराव ने अंग्रेजी सरकार के नाम दत्तक पुत्र को अपना उत्तराधिकारी बनाने के विषय में खरीता लिखवाया था?'

'जी हाँ श्रीमन्त, आनन्दराव को दत्तक पुत्र, अंग्रेज पदाधिकारियों के सामने ही महाराजा गंगाधरराव ने माना था और उसका नाम दामोदर राव रखा गया था। मेजर ऐलिस को अपने पास बुलाकर महाराजा गंगाधरराव ने अपने हाथ से उन्हें खरीता देते हुए ब्रिटिश सरकार को उसे शीघ्र भेजने को कहा था।'

'तब क्या उन्होंने खरीता भेज दिया था ?' नाना साहब ने दूत की ओर देखते हुए कहा, 'झाँसी के समाचार जानने के लिए हम कितने उत्सुक थे। समाचार मिला, जब सब धूल में मिल गया।'

'महारानी पुत्र वियोग के कारण पहले ही दुखी थीं। महाराजा साहब के रोग के कारण तो वह अपनी भी सुध खो बैठी। रात-दिन महाराजा साहब की सेवा में व्यतीत कर देती थीं।'

'उनकी सखियाँ बड़ी कठिनाई से उनको नित्यकर्म के लिए वहाँ से ले जा पाती थीं।'

'क्या सोचा था क्या हो गया ? रावसाहब ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'इतनी छोटी आयु में इतना भारी दुख कैसे सहन करेगी मनु। भाग्य के लिखे को कोई नहीं मिटा सकता।' कहते हुए रावसाहब बाहर आकर फूट-फूट कर रो पड़े।

१३

काली घटा छा रही थी। कड़-ड़-ड़···करती बिजली साँपिन-सी लहराती बलखाती आकाश से पृथ्वी तक एक सुनहरी लकीर-सी खींचती चली जाती थी।

मोरोपन्त कमरे से बाहर बैठे हुए आकाश पर छाई काली घटा को देखकर मन ही मन सोच रहे थे।

जीवन में एक बार सूर्य के प्रकाश समान हृदय में प्रसन्नता का उजाला-सा भर गया था। अब फिर इस काली घटा के समान ही जीवन शोक के अन्धकार से भर गया।

झाँसी राज्य में एक बार कितना हर्ष उल्लास भरा वातावरण बन गया था। पर असमय कुँवर की मृत्यु महाराजा गंगाधरराव के स्वर्गवास से···।

सारा हर्ष उल्लास धूल में मिल गया, लक्ष्मीबाई थोड़े समय भी हर्ष-भरा जीवन व्यतीत न करने पाई। भाग्य ने उसका सुहाग छीन लिया।

दामोदरराव को दत्तक पुत्र बनाकर महाराजा गंगाधरराव, झाँसी का उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे, अंग्रेजी शासक उसमें भी रोड़े अटका रहे हैं।'

'क्या सोच रहे हैं सरदार राज्य कर्मचारी ने आकर अभिवादन करते हुए कहा, 'अंग्रेज पदाधिकारी महारानी लक्ष्मीबाई को सम्भव है किला खाली करने को विवश करें। मैं यह सूचना विशेष गुप्तचर से सुन-कर आया हूँ।'

'इन विदेशी शासकों की दुरंगी नीति है, किस समय क्या नीति अपना लें, यह हम न जान सकेंगे।'

'दीवान नरसिंहराव और मेरे सामने महाराजा गंगाधरराव ने राज्य-व्यवस्था के विषय में बात की थी। अपने घराने के बासुदेवराव नेवाल-कर के पुत्र आनन्दराव को गोद लेने का निर्णय भी उन्होंने तभी किया था।'

'प्रसिद्ध विद्वान विनायक शास्त्री के सामने शास्त्रानुसार गोद लेने की समस्त रीति विधिवत पूरी की गई थीं। हम सब वहीं तो थे सरदार साहब, झाँसी के पालिटिकल एजेण्ट मेजर एलिस, सैनिक अधिकारी कैप्टन मार्टिन भी उस उत्सव में सम्मिलित हुए थे।'

'हम सब पर्दे के पीछे बैठी हुई उत्सव देख रही थीं', चिमणबाई ने आते हुए लम्बी साँस ली, 'पाँच वर्ष के बालक आनन्दराव का नाम बदल कर···दामोदर राव रखा गया। सभी बड़े-बड़े पदाधिकारियों के सामने महाराजा गंगाधरराव ने आनन्दराव का दामोदरराव नाम रखकर दत्तक पुत्र बनाने के सभी मंगल कार्य पूर्ण करके, उत्सव में आए सज्जनों का इत्र लगाकर पान देकर स्वागत किया था।'

'खरीते में और आवश्यक बातों के साथ लक्ष्मीबाई के लिए भी

पदाधिकारियों को महाराजा गंगाधरराव ने लिखवाया था, 'यदि मेरा इस रोग से अन्त हो जाए तो मेरी पत्नी, राज्य की स्वामिनी और गोद लिए पुत्र की माता मानी जाए, राज्य का शासन पुत्र के बालिग होने तक उसी के हाथ में रहे।'

'यह सब बातें मेरे सामने कही गईं, लिखी गईं, इन आँखों ने सब कुछ देखा, क्योंकि राज्य कर्मचारी हूँ और आपका विशेष सम्बन्धी भी हूँ।'

'सत्य बातों पर पर्दा डालकर अंग्रेजी सरकार तोते की तरह आँखें बदल गई, चिमणाबाई ने आँखों में आए आँसुओं को पोंछकर सामने देखते हुए कहा, 'सुना है राज्य के कर्मचारी और गंगाधरराव के सम्बन्धी ही मिलकर राज्य के विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहे हैं।'

'महाराजा गंगाधरराव के अन्तिम संस्कार के समय नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों के साथ मेजर एलिस, कैप्टन मार्टिन, सेना सहित शोक वस्त्र पहने उपस्थित थे। दामोदरराव ने ही अपने नन्हें हाथों से एक दिन पहले बने पिता की चिता में अग्नि लगाई थी।'

'मेरी लक्ष्मीबाई शोक सागर में डूबी हुई है। किसी कार्य में उसकी रुचि नहीं रही, भाग्य ने मेरी बच्ची के जीवन के साथ कैसा खिलवाड़ किया।' चिमणाबाई ने मुँह फेरकर आँसू पोंछ डाले।

'महारानी लक्ष्मीबाई को ही अपनी स्वामिनी मानकर महाराजा गंगाधरराव के समय के राज्य कर्मचारी, इस समय राज्य का कार्य कर रहे हैं। जितना उनके अधीन कार्य है, उससे भी अधिक वह राज्य कार्यों में सहयोग दे रहे हैं।'

'महारानी लक्ष्मीबाई के साथ सभी की सहानुभूति है। बस उसके विरोधी सम्बन्धी राज्य पर आँखें लगाए बैठे हैं। कई तो अंग्रेज शासकों से मिलकर राजा बनने के स्वप्न देखने लगे हैं।'

'देखिए सरदार साहब, हमारी ओर से आप निश्चित रहें। अपनी जीवन की बाजी लगाकर भी हम महारानी लक्ष्मीबाई को उनका अधिकार दिलाने का यत्न करेंगे।'

'पर जो घर के भेदी विरोधियों से मिलकर उन्हें सहयोग देने को तैयार

हैं, उनका क्या प्रबन्ध होगा। आप तो गुप्तचर विभाग में हो, कैसे-कैसे षडयन्त्र हो रहे हैं, यह तो ज्ञात होगा ही।'

'यह समय आपस में बैरभाव का नहीं, इस समय शत्रु को भी मित्र बनाने का समय है। सरदार साहब यह आप भी समझते हैं।'

'अंग्रेजी शासक, चतुराई, राजनीति से हमारे देशवासियों द्वारा ही, हमें पराधीनता की बेड़ियाँ पहनाने का यत्न कर रहे हैं।'

'महल की रक्षा का भार स्वामी भक्त, सरदारों के साथ उस दिन से आपने न संभाला होता, तो न जाने क्या अनर्थ होता', चिमणाबाई ने चारों ओर देखते हुए कहा···'उस समय आपने यह भी देखा होगा, जनरल एलिस ने झाँसी के कोषाध्यक्ष ज्वाला प्रसाद की उपस्थिति में झाँसी के खजाने पर मोहर लगा दी थी।'

'महल में शोक छाया हुआ है, महारानी लक्ष्मीबाई अपने आवश्यक नित्य कर्म भी अपनी सखियों के बहुत आग्रह करने पर या दामोदरराव की प्रार्थना पर ही करती है। वरना बैठी सोचे जाती हैं।'

'मनू के विषय में नाना साहब के पास सन्देश भिजवाया है। बाल्य-काल में उनके साथ खेलकर शिक्षा, लेकर बड़ी हुई। वह सम्भव है, ऐसी युक्ति बताएँ जिससे झाँसी राज्य की मंझधार में फँसी हुई नाव किसी प्रकार तट पर लग जाए।'

'जब भाई-भाई ही आपस में झगड़ कर एक दूसरे के शत्रु बन गए हैं, उनकी आपस की शत्रुता का तीसरा व्यक्ति तो लाभ उठाएगा ही। वह क्यों उससे वंचित होगा। नाना साहब स्वयं चिन्ता में हैं।'

'महाराजा गंगाधरराव के अंग्रेजी सेना से पृथक सौ घुड़सवार थे। चार तोपखाने थे। जहाँ भी अशान्ति होती और सेना के साथ उनके विशेष सैनिक घुड़सवार भी शान्ति स्थापित करने जाते थे।'

'अपने शासक के बिना वह भी उदास से रहने लगे। महाराजा साहब के विशेष हाथी-घोड़े जिन पर बैठकर महाराजा गंगाधरराव विशेष उत्सवों में सम्मलित होते थे, या भ्रमण करने जाते थे, अब आँखों में आँसू भरे चारों ओर देखते रहते हैं।'

'मनुष्यों से तो पशु ही स्वामीभक्त निकले', मोरोपन्त ने लम्बी साँस

लेते हुए कहा, 'खरीते का क्या उत्तर आता है, हम तो उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

'हमारे पक्ष में उत्तर होगा, यह सन्देह है। कई विश्वासघाती झाँसी राज्य पर आँखें लगाए बैठे हैं। वे अवसर की प्रतीक्षा में हैं, अवसर मिलते ही वे झाँसी राज्य हड़पने का यत्न करेंगे, सरदार साहब, कई स्थानों से तो अभी से विद्रोह के समाचार आ रहे हैं।'

'कैसा समय आ गया, पहले तो लोग दूसरे मनुष्य के कष्ट दूर करने के उपाय किया करते थे। और अब कष्टों में फँसे मनुष्य के कष्टों को और बढ़ाने के कार्य किए जाते हैं।'

'मेजर एलिस ने महारानी लक्ष्मीबाई को वचन दिया था, वह उनकी हर प्रकार की सहायता करेंगे।'

'देखो अपने वचन पर कितने दृढ़ रहते हैं। विपत्ति के समय ही मनुष्य की परीक्षा होती है। सुख में तो अनेक सहयोगी बन जाते हैं।'

'इस समय दो लाख पैंतालीस हजार सात सौ रुपये झाँसी के राज्य-कोष में थे।'

'दामोदरराव के नाम के रुपये पृथक जमा हैं।' चिमणाबाई ने धीरे से कहा, 'उसके नाम का रुपया तो लक्ष्मीबाई को मिलना चाहिए।'

'झाँसी राज्य ही लक्ष्मीबाई का है', मोरोपन्त ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'पर इस समय शान्ति बनाए रखने के लिए किले के चारों ओर सेना का पहरा बैठा दिया है।'

'मेजर एलिस और कैप्टन मार्टिन ने शान्ति के नाम पर सेना द्वारा रानी लक्ष्मीबाई के किले के चारों ओर पहरा क्यों बैठाया?' चिमणाबाई ने चारों ओर देखते हुए कहा, 'अभी जनरल डलहौजी अवध की ओर गया हुआ है, जब वह इधर आएगा अंग्रेजी शासक झाँसी का तभी निर्णय देंगे। इस समय के आश्वासनों पर विश्वास करके शान्ति से बैठे रहो, यह अंग्रेज शासकों की बुद्धिमानी है।'

'चिमणाबाई तुम भी राजनीति की बातें समझने लगीं, तुम्हारी बातों से मुझे यही ज्ञात होने लगा है।'

'राजनीतिज्ञों की नगरी में खेल-कूद कर बड़ी हुई, अब राजनीतिज्ञ

सरदार की पत्नी हूँ, थोड़ी सी बातें तो मुझे भी राजनीति की शतरंज की ज्ञात होनी चाहिए।'

अभी चिमणाबाई और कुछ कहती, तभी गड़-ड़-ड़-ड़ शब्द करती काली घटाएँ जोर से बरसने लगीं। सब उठकर कमरे में चले गए।

१४

महल में सन्नाटा छाया हुआ था। रानी लक्ष्मीबाई महल के पूजा के कमरे में बैठी हुई गंगाधरराव के आसन पर पूजा की सामग्री के साथ अस्त्र-शस्त्र रखे हुए देख रही थीं।

बीती हुई बातें सोचते हुए उनकी आँखों में आँसू छलछला आए। दामोदरराव धीरे-धीरे लक्ष्मीबाई के समीप आया, और दोनों हाथों से आँसू पोछता हुआ बोला, 'माँ साहब आप रो रही हैं?'

लक्ष्मीबाई चुपचाप उस नन्हें बालक की ओर देखती रह गई, अभी से इसके मन में मेरे प्रति कितना प्यार है।

'आप बोलती क्यों नहीं?' लक्ष्मीबाई की गोद में बैठकर उनके गले में अपनी छोटी-छोटी बाहें डालते हुए बोला, 'आप नहीं बोलेंगी तो हम भी बासाहब की तरह रूठ कर चले जाएंगे।'

'ऐसा न कह दामोदर' दामोदर को छाती से चिपटाकर लक्ष्मीबाई रो पड़ी। महाराजा साहब, तेरे बासाहब, हमें छोड़कर चले गए···तू भी ऐसी बातें कहने लगा, हम कैसे जीएँगे दामोदर, ऐसी बातें मत बोलो बेटा।'

'सुन्दर कह रही थी आपने खाना भी नहीं खाया, आप नहीं खाएंगी, तो मैं भी नहीं खाऊँगा।' लक्ष्मीबाई की ओर देखता हुआ दामोदर बोला, 'आप खाना क्यों नहीं खातीं?'

'मैं भी खा लूँगी, जा तू तो खाना खा ले।'

'महारानीजी, कुँवर साहब भोजन नहीं कर रहे हैं, भोजन की थाली छोड़कर इधर चले आए हैं।' दासी लक्ष्मीबाई के समीप आते हुए बोली,

'आप इनसे कहिए मेरे साथ चलकर भोजन कर लें ।'

'जब तक आप भोजन नहीं करेंगी, आज मैं भी भोजन नहीं करूँगा, दामोदर लक्ष्मीबाई की ओर देखता हुआ बोला, 'दासी को कह दो यहाँ से चली जाए ।'

'दामोदर को किसने बताया, मैंने खाना नहीं खाया है ।' कहते हुए लक्ष्मीबाई ने दासी को क्रोध से घूरते हुए कहा, 'ऐसी बातें बालक को नहीं बतानी चाहिए ।'

'मैं क्या समझता नहीं माँ साहब, मुझे किसी ने नहीं बताया । मैं ना समझ बालक नहीं, सब समझता हूँ ।'

'बातें तो बड़ों जैसी बनाने लगा, पर भोजन नहीं करेगा, तो बड़ा कैसे होगा, राज्य कार्य कैसे संभालेगा ?'

'मुन्दर कह रही थी राज्यकार्य भी आपने छोड़ दिए हैं । कैसे राज्य-कार्य चलेगा, आपके बिना भला मैं क्या कर सकूँगा । लक्ष्मीबाई के गले में बाहें डालते हुए दामोदर बोला, 'बताओ माँ साहब राज्यकार्य कैसे होंगे ?'

'ओह ! तू अभी से क्यों चिन्ता कर रहा है', लक्ष्मीबाई ने दामोदर को प्यार से उठाते हुए कहा, 'चल खाना खा, दासी कब से प्रतीक्षा कर रही है ।'

'आप भी चलिए, हम दोनों साथ खाना खाएँगे ।' लक्ष्मीबाई का हाथ पकड़ कर भोजन के कमरे में लक्ष्मीबाई को दामोदर ले गया ।

थाली में खाना रखा हुआ था । छोटे-छोटे ग्रास बनाकर दामोदरराव ने लक्ष्मीबाई के मुँह में दे दिए । लक्ष्मीबाई ने दामोदरराव को गोद में बैठाकर उसके मुँह में भी रोटी का टुकड़ा तोड़कर दे दिया ।

सुन्दर-मुन्दर दूर खड़ी हुई माँ-बेटे को एक दूसरे को आग्रह से भोजन कराते देखकर मुस्कराईं और संकेत से दासी को समझा कर बाहर चली गईं ।

लक्ष्मीबाई ने थोड़ी देर विश्राम किया । दामोदरराव के शब्द अब भी उनके कानों में गूँज रहे थे । 'माँसाहब, राज्यकार्य कैसे होंगे', सच कह

रहा है दामोदर। मेरी विरक्ति सभी पर प्रभाव डाल रही है। सभी उदास सहमे से एक-दूसरे की ओर देख रहे हैं, जैसे आँखों-आँखों में ही कहते हों—

इस प्रकार राजकार्य कैसे होगा, जब विरोधी शत्रु राज्य पर दाँत गड़ाए बैठा है।

सोचते हुए लक्ष्मीबाई ने एक बार सोते हुए दामोदरराव की ओर देखा, दासी को उसके समीप बैठाकर किले के एक भाग की ओर चल पड़ी।

सुन्दर मुन्दर महारानी लक्ष्मीबाई की बनाई हुई महिला सेना का निरीक्षण कर रही थीं। तभी दूर से उन्हें महारानी लक्ष्मीबाई आती हुई दिखाई दीं।

अपनी सहायिका को वहाँ छोड़कर सुन्दर मुन्दर तुरत ही अपनी रानी के समीप आईं और अभिवादन करते हुए बोली, 'महारानी साहिबा, आप, अभी अस्वस्थ हैं।'

जब पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाएँ, तभी इधर का कार्य देखें, आपके आदेशानुसार हम यहाँ का कार्य कर रही हैं।'

'आज मेरी इच्छा यहाँ के कार्य को देखने की है।' महारानी लक्ष्मीबाई आगे बढ़ती हुई बोलीं, 'महिलाएँ उधर क्या कार्य कर रही हैं?'

'उधर महिलाएँ तोप चलाने का कार्य सीख रही हैं। महारानीजी, इधर जो सामने तम्बू हैं, उनमें महिलाएँ घायल सैनिकों की मरहमपट्टी उनकी सेवा-देखभाल का कार्य सीख रही हैं।'

'तुमने अपने कार्य को सफलतापूर्वक किया है, सुन्दर मुझे देखकर प्रसन्नता हुई।' वह सामने की ओर महिलाएँ क्या कार्य सीख रही हैं।' कहते हुए महारानी एक बड़े कमरे के सामने जाकर ठहर गई।

वहाँ बहुत सी महिलाएँ अपने-अपने कार्य में व्यस्त थीं। कोई अस्त्र-शस्त्र साफ करके रख रही थी, कई महिलाएँ बन्दूक की सफाई करके अपनी सेनानायक से उसकी परीक्षा करवा रही थीं।

महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सेनानायक अंगरक्षक सखी सुन्दर-मुन्दर की ओर अपलक देखे जा रही थीं।

झाँसी राज्य के संकट को इन अबला कहलाने वाली नारियों ने पहले से ही जान लिया है। और उसके लिए अभी से तैयारी आरम्भ कर दी है।

महाराजा गंगाधरराव मेरी महिला सेना की एक झलक ही देख पाए, पूर्णरूप से इस शक्तिशाली महिला सेना को देख कर वह कितने प्रसन्न होते, क्या सोचा था क्या हो गया।

सोचते हुए महारानी लक्ष्मीबाई और कार्यक्रम देखने के लिए आगे बढ़ी। तभी उन्हें सैनिक वेश में एक महिला उधर ही आती हुई दिखाई दी। दूर से वह महिला, पुरुष सैनिक ही दिखाई दे रही थी।

महारानी लक्ष्मीबाई के समीप आकर उस सैनिक महिला ने झुककर अभिवादन किया और एक पत्र देकर वापिस ही लौट गई।

महारानी पत्र लेकर वापिस महल में आ गईं, किसका पत्र होगा, क्या ब्रिटिश सरकार ने दामोदरराव को झाँसी का उत्तराधिकारी मान लिया। उसके विषय में यह पत्र आया है।

क्या नानासाहब ने यहाँ की सूचना सुनकर उसके विषय में लिखा है। सोचकर उन्होंने पत्र खोलकर पढ़ा, पत्र उनके विरोधी सम्बन्धी का था।

उसने उन्हें धमकी दी थी, 'दामोदरराव को हमारे रहते आप झाँसी का उत्तराधिकारी नहीं बना सकतीं। ब्रिटिश सरकार भी दामोदरराव को उत्तराधिकारी नहीं मानेगी, हमने यह सुना है। आप प्रसन्नतापूर्वक हमें अपना झाँसी राज्य का अधिकारी मान लें, इसी में भलाई है। वरना परिणाम बुरा होगा, सोच लें।' सोच लिया, खत पढ़ कर महारानी लक्ष्मीबाई का क्रोध से मुँह लाल हो गया।

'जब तक गंगाधरराव जीवित रहे उनके सामने इन्हें सिर उठाने तक का साहस नहीं हुआ, उनके स्वर्गवासी होते ही मुझे असहाय निर्बल समझकर आँखें दिखा रहे हैं। मैं इन गीदड़ भभकियों से डरने वाली नहीं हूँ।'

अभी तक आशा थी, भारत सरकार दामोदरराव को उत्तराधिकारी मान लेगी, वहाँ से भी अभी तक कोई उत्तर नहीं आया था। महाराजा गंगाधरराव के खरीते (प्रार्थनापत्र, अपील) का कोई उत्तर नहीं आया था।

जनता अशान्त हो रही थी, क्योंकि मेजर रास झाँसी पर अपना नियन्त्रण बढ़ाता जा रहा था। महारानी ने भारत सरकार को पत्र लिखा, पत्र में महारानी लक्ष्मीबाई ने अपने पूर्वजों की अंग्रेज शासकों से जो सन्धि हुई थी संकट के समय उन्होंने अंग्रेजों की सहायता कर उनके प्रान्तों की रक्षा की थी। उस विषय में भी भारत सरकार का ध्यान दिलाया''' उन्होंने लिखा, 'महाराजा गंगाधरराव ने ऐसे समय में सहयोग देकर अंग्रेज शासक को विजय दिलाई, जब वह बहुत निराश हो चुके थे। उसी के उपलक्ष्य में गंगाधरराव को कई उपहारों के साथ महाराजा गंगाधरराव उपाधि दी गई थी।'

झाँसी राज्य की गद्दी पर उनके वंशजों को बैठने का अधिकार दिया गया था। महाराजा गंगाधरराव ने स्वर्गवासी होने से पहले अपने सम्बन्धी वासुदेवराव के पुत्र आनन्दराव को शास्त्रानुसार गोद लेने की रीति सम्पन्न की थी। इस पानादि से सभी का सत्कार किया था।

मेजर एलिस, सैनिक अधिकारी कैप्टन मार्टिन को भी महाराजा गंगाधरराव ने निमन्त्रण भेजा था। उस अवसर पर कई प्रतिष्ठित नागरिक राज्य कर्मचारी भी उपस्थित थे।

आनन्दराव का दामोदरराव नाम रखा गया था। और सबके सामने दामोदरराव महाराजा गंगाधरराव के दत्तक पुत्र बन गए थे।

मेरे पति के स्वर्गवास होने पर अन्तिम संस्कार दामोदरराव के हाथ से करवाया गया था।

भारत सरकार ने दतिया के पूर्व राजा परीक्षित, जालौन के राजा बाला राव, ओरछा के राजा तेजसिंह के दत्तक पुत्रों को राज्य का उत्तराधिकारी माना था। महाराजा गंगाधरराव के दत्तक पुत्र दामोदरराव को भी झाँसी का उत्तराधिकारी माना जाए।

झाँसी के पालिटिकल एजेन्ट मेजर एलिस ने रानी की माँग का समर्थन किया।

मुगल शासकों ने भी दत्तक पुत्रों के राज्याधिकारी माना था। गवर्नर जनरल डलहौजी से पूर्व अनेक राज्य सत्ता रह चुकी थीं।

किसी सत्ता ने पुत्रहीन राजा से दत्तक पुत्र को राज्याधिकार से वंचित नहीं किया।

पर गवर्नर जनरल डलहौजी की राज्य हड़प नीति ने कई राजाओं के दत्तक पुत्रों को व्यर्थ की बातों के रोड़े अटकाकर राज्य के उत्तराधिकार से वंचित कर दिया।

डलहौजी की व्यर्थ प्रथक तर्कपूर्ण युक्ति ने कई राजाओं के दत्तक पुत्रों को राज्य के उत्तराधिकारी बनने से वंचित कर दिया।

बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब को भी बाजीराव का उत्तराधिकारी नहीं माना गया।

महारानी लक्ष्मीबाई को भी यही उत्तर मिला, दामोदरराव झांसी राज्य के उत्तराधिकारी नहीं हैं।

रानी लक्ष्मीबाई समझ गईं, विदेशी भारत सरकार से न्याय मिलने की आशा व्यर्थ है।

विदेशी सरकार के निर्णय के विरुद्ध बंगाली वकील उमेशचन्द्र बनर्जी द्वारा रानी ने प्रार्थना-पत्र इंग्लैंड भेजा। वहां जाकर उन्होंने बैरिस्टर जॉनलौंग से भी परामर्श किया।

लेकिन सब परिश्रम व्यर्थ गया। लण्डन के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स डलहौजी की राज्य हड़प नीति के पक्षपाती थे। अपने राज्य का विस्तार चाहते थे। इस कारण वह झाँसी राज्य पर भी अपना अधिकार जमाना चाहते थे।

लार्ड डलहौजी ने सुझाव दिया था। झाँसी अंग्रेजी राज्यों के जिलों के बीच में है। उस पर अधिकार कर लेने से बुन्देलखण्ड के राज्यों में सुधार होगा।

१५

महारानी लक्ष्मीबाई की इंग्लैंड में की गई अपील का परिणाम भी कुछ न निकला।

रँगोगुप्त, नाना साहब, सतारा के पदच्युत, छत्रपति प्रतापसिंह की अपील का जो परिणाम हुआ, वही महारानी लक्ष्मीबाई की अपील का परिणाम हुआ।

ब्रिटिश सरकार ने रानी को वैभवहीन बना दिया। लेफ्टिनेंट गवर्नर मालकम के अदेशानुसार यह घोषणा पत्र प्रकाशित किया जा चुका था। झाँसी के महाराजा गंगाधरराव की २१ नवम्बर, सन १८५३ ईसवी को मृत्यु हुई। मृत्यु से पूर्व उन्होंने दामोदरराव को दत्तक पुत्र बनाया था। माननीय गवर्नर-जनरल ने दत्तक विधान स्वीकार नहीं किया।

भारत सरकार के मन्त्री की सात मार्च सन् १८५४ की आज्ञानुसार झाँसी राज्य को पालिटिकल एजेन्ट मेजर एलिस के अधीन किया जाता है।

झाँसी की समस्त प्रजा को चाहिए, वह अपने को ब्रिटिश सरकार के अधीन समझकर मेजर एलिस को कर देती रहे।

'मेरी झाँसी अन्यायपूर्वक अँग्रेजी शासक ले रहे हैं। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।' कहते हुए महारानी झाँसी का क्रोध से मुँह लाल हो गया। वह स्तब्ध सी खड़ी हुई थोड़ी देर सोचती रहीं।

'इस समय कोई भी सहयोग देने वाला साथी हमें दिखाई नहीं देता।' सुन्दर ने महारानी लक्ष्मीबाई को शरबत पिला कर पलंग पर लिटाते हुए कहा, 'आपकी प्रजा भी शोक से व्याकुल हो रही है, रानी साहिबा, आप ही साहस हार जाएँगी, तब उन्हें कौन धीरज बंधाएगा।'

'झाँसी की रानी साहस नहीं हारेगी सुन्दर, नारी हृदय की दुर्बलता कभी-कभी झाँसी की रानी को झकझोर देती है। जा, तू दामोदरराव को मेरे पास भेज, झाँसी की प्रजा के शोक से वह भी दुखी हो रहा होगा।'

भाग्य न जाने अभी और क्या दिखाएगा। रानी लक्ष्मीबाई ने करवट बदल कर सामने देखा, सुन्दर एक पत्र लिए खड़ी थी।

'क्या है सुन्दर, लक्ष्मीबाई ने पत्र पढ़ते हुए सुन्दर से पूछा और भी कोई नया समाचार है।'

'रानीजी! पाँच हजार रुपये आपको महीने में पेन्शन मिलेगी और भारत सरकार ने एक शर्त और रखी है।' 'और क्या चुप क्यों हो गई,

मैं इस समय वज्र हृदय हो गई हूँ, सब सहन करने को तैयार हूँ। तू नि:संकोच कह।' 'महाराजा गंगाधरराव ने जो ऋण छोड़ा है, उन्होंने यह भी शर्त रखी है, वह आप की पेन्शन में से ले लिए जाएँगे।'

'और भी कुछ बात है जो तू बताते हुए ठहर गई, बता ना और क्या समाचार है ? अब तू महारानी लक्ष्मीबाई के सामने नहीं खड़ी है। अन्याय पूर्वक जिसकी झाँसी छिन गई है, वह अब केवल लक्ष्मीबाई है।'

'झाँसी राज्य की कुलदेवी महालक्ष्मी का जो विशाल मन्दिर झाँसी में है। उस मन्दिर के पूजा-पाठ उत्सव आदि के लिए दो ग्रामों की आय महालक्ष्मी के मन्दिर के नाम थी।

ब्रिटिश सरकार ने दोनों गाँव जब्त करके अपने अधिकार में कर लिए हैं, रानी साहिबा।'

'झाँसी के नागरिकों में ब्रिटिश सरकार के प्रति असन्तोष और रोष भर गया है।' यह सामाचार मैंने पहले ही सुन लिया है मुन्दर···।

'स्वर्गीय महाराजा की सम्पत्ति राज्य आभूषण, रत्न, सोने-चाँदी के आभूषणों का अधिकारी दामोदरराव को मान लिया गया महारानीजी।'

'तूने इतने सारे समाचार इकट्ठे ही मुझे सुना दिए, लक्ष्मीबाई ने लम्बी साँस लेकर मुन्दर की ओर देखते हुए कहा, छः लाख रुपये दामोदर राव के नाम से अँग्रेजी खजाने में जमा करवा दिए गए हैं, जो बड़े होने पर दामोदरराव को दिए जाएँगे। सोने-चाँदी के आभूषण राज्य के अलंकार 'दामोदरराव के लिए' लिखकर हमें अमानत की तरह सौंप दिए गए हैं।

'देखा तूने, अँग्रेज शासकों ने हमारे महाराजा के सहयोग व मित्रता के बदले में हमारे प्रति कैसा व्यवहार किया है', कहते हुए रानी लक्ष्मीबाई की आँखों में आँसू छलछला आए।

'महारानीजी, झाँसी राज्य पर अधिकार करने के पश्चात अब किला खाली करने का भी आदेश आ गया है।' मुन्दर ने आँखों में आए आँसू पोंछकर महारानी लक्ष्मीबाई की ओर देखते हुए कहा, 'किले के महल को खाली करके नगर के महल में आपके रहने का प्रबन्ध किया गया है।'

'मुन्दर, अब तो झाँसी राज्य के अंग्रेज शासक बने हुए हैं। विवश होकर उनका आदेश हमें मानना पड़ेगा। याद रखो, अन्याय की सदैव विजय नहीं होती···।

'उनकी शक्ति, विश्वासघातियों ने अपने स्वार्थ के कारण उन्हें सहयोग देकर और बढ़ा दी है रानीजी'।

'हमारे मन में इस समय विरोधियों के प्रति ऐसा ज्वालामुखी धधक रहा है, अवसर मिलते ही, समय पर फट कर उन्हें नष्ट न कर डाले। मुन्दर मेरे पिताजी मोरोपन्त भी अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अपने को विरोधियों की सहायता करते देखकर उनका रुधिर खौलने लगता है, भुजाएँ फड़कने लगती हैं।'

'पर शत्रु की शक्ति से अपनी शक्ति न्यून देखकर विष का-सा घूंट पीकर चुप बैठ जाते हैं।'

'जब से महाराराजा गंगाधरराव स्वर्ग सिधारे हैं, तब से सरदार बा साहब के मुख पर मैंने मुस्कराहट नहीं देखी।'

'स्वास्थ्य कितना खराब हो गया है। पहले से कितने दुर्बल हो गए हैं। मेरे पास अधिक समय ठहरते भी नहीं।'

'आपका अंग्रेजों ने जो अपमान किया है, वह उनके हृदय में टीस उत्पन्न कर देता है रानीजी।'

'समय का फेर इसे ही कहते हैं मुन्दर।'

'झाँसी आदर्श हिन्दू राज्य माना जाता था। रानीजी गाय को माँ का सा आदर देकर हम पूजते हैं।'

'महाराजा गंगाधरराव ने गो वध पर प्रतिबन्ध लगा रखा था जो नियम को भंग करता था, उसे दण्ड दिया जाता था। महारानीजी अँग्रेज शासकों ने नियम भंग करके गोवध पर से प्रतिबन्ध हटा लिया है।'

'प्रतिदिन अनेक गायों का वध होता है हिन्दू दूर से देखकर आठ-आठ आँसू रोते हैं, पर इन अँग्रेज शासकों के विरुद्ध बोलने का किसी में भी साहस नहीं होता।'

'गऊ हत्या बन्द करें, इस विषय में मैंने अँग्रेजी शासकों को लिखा

था।' महारानी ने लम्बी सांस लेते हुए कहा, 'पर उससे कोई लाभ नहीं पहुँचा, उन्होंने हमारी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। सुनते हैं चढ़ते सूरज को सब नमस्कार करते हैं। अस्त होते सूरज को कोई नमस्कार नहीं करता।'

'रानीजी कई स्थानों से विद्रोह की सूचना आ रही हैं, सुन्दर हाथ में एक पर्चा लेकर आई। क्रान्तिकारियों ने देश प्रेमियों का सन्देश भेजा है।

'यदि सब देश प्रेमी एकत्र होकर हमें सहयोग दें, तो हम सब मिल कर फिर से स्वतन्त्रता देवी को पा सकते हैं। हमें विश्वास है, अँग्रेज शासकों का अत्याचार उन पर कहर बन कर टूटेगा।' तभी दासी आई, 'रानी लक्ष्मीबाई से मिलने सरदार मोरोपन्त ताम्बे आए हैं···। दासी ने झुककर रानी लक्ष्मीबाई को प्रणाम करते हुए कहा, 'वह महल से बाहर की ओर खड़े हुए हैं।'

'उन्हें शीघ्र यहाँ ले आ, कहते हुए रानी लक्ष्मीबाई उठकर बैठ गई। मोरोपन्त उदासी से चारों ओर देखते आ रहे थे। किसी समय यहाँ कैसी चहल-पहल रहती थी, अब सन्नाटा छाया हुआ है।

'बा साहब बहुत दिनों में दर्शन दिए', कहते हुए लक्ष्मीबाई मोरोपन्त से चिपट गई। उसकी सादी वेषभूषा देख कर मोरोपन्त की आँखों में आँसू छलछला आए।'

बड़ी कठिनाई से आँसुओं को रोक कर मोरोपन्त लक्ष्मीबाई की ओर देखते हुए बोले, 'लक्ष्मीबाई ! नगर के महल में तुम्हारे रहने का प्रबन्ध करवा दिया है। चलने के लिए तैयार हो जाओ।'

'बा साहब मेरी तैयारी में क्या देर लगेगी, आप सेवकों को भेजें। किले के महल का सामान नगर के महल में ले जाएँ।'

'यह झाड़-फानूस सभी यहीं महल में लटके रहेंगे, आवश्यक सामान सभी नगर के महल में ले चलेंगे।' कहते हुए मोरोपन्त ने सेवकों को बुलवाया और किले के महल का सामान गाड़ियों में रखवाकर नगर के महल में पहुँचाने लगे।

गोरे सैनिक किले के महल के सामने एकत्र होने लगे थे। मोरोपन्त

ने अपने सैनिकों को आदेश दिया, 'जब तक महारानी लक्ष्मीबाई यहाँ से नगर के महल में नहीं पहुँच जाती, तब तक तुम सबको यहीं खड़े रहना है। महारानी लक्ष्मीबाई किले का महल खाली करके नगर के महल में रहने चली गई।

किले के महल में अँग्रेज शासकों का अधिकार हो गया। झाँसी की जनता आँखों में बेबसी के आँसू भरे अपनी रानी को अँग्रेज शासकों द्वारा वैभवहीन बनाते देखती रह गई।

अन्दर ही अन्दर उनके हृदय में अपनी रानी के अपमान का बदला लेने की भावना जागृत हो रही थी।

अँग्रेज शासकों ने किले के महल पर अधिकार करके अपने सैनिक नियत कर दिए थे। रानी के समय के बड़े-बड़े पदाधिकारी पृथक करके उन पदों पर अँग्रेज पदाधिकारी बना दिए गए थे।

किले के चारों ओर भी अँग्रेजों के सैनिक पहरे पर नियुक्त किए गए थे।

१६

दामोदरराव सात वर्ष के हो चुके थे। महारानी लक्ष्मीबाई दामोदर-राव के यज्ञोपवीत संस्कार के लिए तैयारी करने लगी! अंग्रेजों ने दामोदरराव को झाँसी का उत्तराधिकारी नहीं माना था।

पर रानी तो दामोदरराव को झांसी राज्य का उत्तराधिकारी मान चुकी थी। झाँसी राज्य के उत्तराधिकारी का उपनयन संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार कुल की पूर्व परम्परा के अनुसार धूम-धाम से हो।

उस कार्य के लिए बहुत सारे धन की आवश्यकता थी। इस कारण लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी सरकार को दामोदरराव के उपनयन संस्कार के लिए रुपये देने को लिखा।

'स्वर्गीय महाराजा गंगाधरराव की सम्पत्ति, दामोदरराव के नाम

से अंग्रेजी सरकार के खजाने में जमा है, उसमें से एक लाख रुपये दामोदर-राव के यज्ञोपवीत संस्कार के लिए दिए जाएँ।'

पहले तो उस समय के लेफ्टिनेंट गवर्नर कालविन, रानी लक्ष्मीबाई द्वारा एक लाख रुपयों की माँग को स्वीकार नहीं कर रहे थे। पर उनके विशेष कर्मचारियों द्वारा सुझाव देने पर उन्होंने एक लाख रुपये देने स्वीकार कर लिए।

पर दो शर्तें रख दीं, एक शर्त थी दामोदरराव बड़ा होकर यदि यह धन वापिस माँगे तो रानी लक्ष्मीबाई को यह धन देना होगा और चार प्रतिष्ठित सेठ नागरिकों की रानी जमानत दें, तब यह एक लाख रुपये दिए जाएँगे।

रानी लक्ष्मीबाई ने इन अपमान भरी शर्तों को दामोदरराव के कारण स्वीकार कर लिया। राज्य के प्रतिष्ठित चार सेठ जो रानी के राज्याधिकार छिन जाने पर भी, महारानी लक्ष्मीबाई को ही अपना शासक मानते थे।

राज्य के हितैषी थे। रानी लक्ष्मीबाई को जमानत देने को तैयार हो गए। इस प्रकार दामोदरराव के यज्ञोपवीत संस्कार के लिए रानी लक्ष्मीबाई को एक लाख रुपया मिल गया।

रानी लक्ष्मीबाई ने धूम-धाम से अपने दत्तक पुत्र दामोदरराव का यज्ञोपवीत संस्कार किया। बड़ा भोज दिया। दान पुण्य किए, यज्ञोपवीत संस्कार का कार्य बहुत अच्छी तरह निबट गया।

रानी लक्ष्मीबाई अब तीर्थ-यात्रा करके किसी तीर्थ पर उस समय की प्रथानुसार बाल कटवाना चाहती थीं। उन्होंने अंग्रेज सरकार से प्रयाग जाने की आज्ञा माँगी।

अंग्रेज सरकार ने रानी लक्ष्मीबाई को प्रयाग जाने की आज्ञा नहीं दी। स्वाभिमानी रानी लक्ष्मीबाई को इस अपमानजनक व्यवहार से बहुत दुख पहुँचा।

उन्होंने तीर्थ पर जाकर केश कटवाने का विचार ही छोड़ दिया। और जब तक जीवित रहीं, केश नहीं कटवाए।

छोटे-छोटे जमींदार जो कभी महाराजा गंगाधर के अधीनता में कार्य

करते थे, वे महारानी लक्ष्मीबाई को आँखें दिखाने लगे।

रानी जानती थी कि किसके बल का सहयोग पाकर वह रानी के विरोधी बन रहे हैं। पर उनके व्यवहार से उसे बहुत दुख पहुँचता था। झाँसी राज्य पर अधिकार करते ही अंग्रेजों ने महारानी लक्ष्मीबाई की सेना को छः छः मास का वेतन देकर सेना भंग कर दी। झाँसी पर अंग्रेजों के अधिकार से देश प्रेमी सैनिक पहले ही असन्तुष्ट थे। स्थान-स्थान पर अंग्रेजों के अत्याचार और बलपूर्वक शासन से विद्रोह की ज्वाला फूट पड़ी। पर चतुर राजनीतिज्ञ अंग्रेजों ने भारतीयों की आपस की फूट का लाभ उठा कर भाई को भाई के विरुद्ध युद्ध के लिए तैयार कर दिया। और उनकी फूट का लाभ उठा कर अपना राज्य विस्तार करना आरम्भ कर दिया।

देश के राष्ट्रवादी सैनिक अंग्रेजी सरकार की नीति से क्रोध में भरे हुए थे। देश की स्वतन्त्रता, संस्कृति, धर्म समाज की रक्षा के लिए एक देश सेवक त्यागी क्रान्तिकारी नेता की खोज में चारों ओर दृष्टि लगाए बैठे थे।

नाना साहब को बाजीराव का उत्तराधिकारी अंग्रेजों ने नहीं माना था। प्रार्थना पत्र भेजने का परिणाम भी कुछ नहीं निकला था। नाना साहब और अजीमुल्ला खाँ ने समझ लिया।

'हमारे धर्म पर आघात करने वाले, स्वतन्त्रता को छीनकर, अपनी विदेशी प्रथाओं को बलपूर्वक लादने वाले, अंग्रेज शासक प्रार्थना पत्रों की भाषा नहीं समझते। उन्हें तलवार से ही अपनी भाषा समझाई जा सकती है।'

सोचते हुए नाना सासब ने अपने देश प्रेमी सहयोगियों के साथ मिलकर देशव्यापी क्रान्ति की योजना बनाई।

दिल्ली के मुगल बादशाह बहादुरशाह और उनकी बुद्धिमान बेगम जीनतमहल, अंग्रेज शासकों के व्यवहार से असन्तुष्ट थे। क्रान्तिकारियों ने मुगल सम्राट को स्वतन्त्रता संग्राम का नेता बना लिया। देश के कोने-कोने में क्रान्ति का सन्देश पहुँचाने के लिए भिन्न-भिन्न वेशों में क्रान्तिकारी पहुँचने लगे।

कोई फकीर के वेश में ही जनता को क्रान्ति में सम्मिलित होने का उपदेश दे रहा था। कई ज्योतिषी रूप धारे नगर-नगर भविष्यवाणी करते फिर रहे थे।

अंग्रेज राज्य शीघ्र समाप्त होगा, तुम देश प्रेमी क्रान्तिकारियों को सहयोग दो। कई क्रान्तिकारी प्रचारक हाथी, घोड़ों पर बैठकर अपने सहायकों सहित, बड़े ठाठबाट से प्रतिष्ठित नागरिकों से मिलकर स्वतन्त्रता संग्राम में सम्मिलित होने का निमन्त्रण देते। कई क्रान्तिकारी प्रचारक राजाओं के दरबार में पहुँचकर अवसर देखकर राजा व उनके सैनिकों को स्वतन्त्रता तंग्राम के लिए तैयार रहने के लिए कहते।

क्रान्ति के यह प्रचारक जीवन की बाजी लगाकर अंग्रेज सेना की छावनियों में पहुँच जाते। अंग्रेजों के अत्याचारों की गाथाएँ सुनाकर, सेना में अंग्रेजों के प्रति घृणा की भावना भरते।

अधिकतर छावनियों में क्रान्ति समितियाँ बन गई थीं, उनके द्वारा एक छावनी से दूसरी छावनी में समाचार पहुँच जाता। छावनियों के अंग्रेज पदाधिकारी आश्चर्य में भर जाते।

उन्हें सूचना पहुँचने से पहले एक छोटे सैनिक को सूचना पहले ही ज्ञात हो जाती थी। झाँसी पर अधिकार करके अंग्रेजों ने रानी की सेना को छः छः मास का वेतन देकर सेना से पृथक कर दिया था।

गोरी काली सेना में अंग्रेजों ने पहले ही भेद रखा हुआ था। एक गोरा सैनिक काले भारतीय सैनिक से बड़ा पद और अधिक वेतन पाता था। चाहे काला भारतीय सैनिक उस गोरे सैनिक से अधिक योग्य और बुद्धिमान हो।

झाँसी के सैनिकों में अँग्रेजों के प्रति घृणा की भावना भर गई। वह ग्राम-ग्राम जाकर अपने प्रति हुए अन्याय की कहानी ग्रामवासियों को सुनाते और उन्हें स्वतन्त्रता के लिए क्रान्तिकारियों को सहयोग देने को कहते।

भारतीय सेना में क्रान्तिकारियों ने प्रचार के लिए 'लाल कमल का फूल' संकेत चिह्न रखा। एक सन्देशा देने वाला क्रान्ति दूत लाल कमल का फूल लेकर भारतीय सेना की छावनी में पहुँचता। लाल कमल के फूल

के छावनी में पहुंचते ही छावनी में अनूठी हलचल मच जाती।

सेना का भारतीय पदाधिकारी बड़ी श्रद्धा से लाल कमल का फूल अपने हाथ में लेता। उसकी सेना के सैनिक लाइन में खड़े हो जाते, और सेना का अफसर उस लाल कमल को अपने सैनिक के हाथ में दे देता।

वह सैनिक दूसरे सैनिक को वह लाल कमल का फूल दे देता। इस प्रकार सारी छावनी के सैनिक बारी-बारी से उस लाल कमल के फूल को अपने हाथ में लेते।

लाल कमल के फूल को हाथ में लेने का अर्थ था, क्रान्ति का सैनिक बनना। एक छावनी से लाल कमल का फूल क्रान्ति दूत द्वारा दूसरी छावनी में पहुँचाया जाता। वहाँ भी लाल कमल के फूल को हाथ में लेकर सैनिक, क्रान्ति में सहयोग देने का संकेत देते।

इसी प्रकार बारी-बारी से लाल कमल के फूल को क्रान्ति दूत छावनियों में पहुँचाते, और क्रान्ति सैनिक बनने का निमन्त्रण देते।

क्रान्ति के प्रचारकों ने रोटी के द्वारा भी क्रान्ति का सन्देश गाँव-गाँव नगर-नगर में जनता को भेजा। एक गाँव का चौकीदार रोटी लेकर समीप के गाँव में जाता।

चौकीदार द्वारा रोटी आने की सूचना सारे गाँव में दे दी जाती। सारे ग्रामवासी एक स्थान पर एकत्र होकर रोटी को आदर से रख लेते।

और ताजी रोटी बनाकर दूसरे चौकीदार द्वारा दूसरे गाँव में पहुँचा देते। वह चौकीदार रोटी लेकर तीसरे गाँव पहुँचता, वहाँ का चौकीदार नई रोटी लेकर चौथे गाँव पहुँचता। इस प्रकार चपाती (रोटी) चक्र सारे देश में चला, वह रोटी चक्र क्रान्ति में सम्मिलित करने का चिह्न समझा जाता था।

अंग्रेज अधिकारियों को भी चपाती द्वारा क्रान्ति का विचित्र सन्देश पहुँचाने वाली योजना का भेद ज्ञात न हो सका था।

विदेशी इतिहासकार मेलीसन ने चपाती योजना पर क्रान्ति के पश्चात प्रकाश डालते हुए लिखा था, 'चपाती, क्रान्ति के लिए गुप्त रूप से 'तैयार रहें' संकेत था।

इस योजना को राजनीतिज्ञ अंग्रेज भी उस समय समझ न सके थे।

अवध में फैजाबाद के मौलवी अहमदुल्ला शाह क्रान्ति की योजना का प्रचार कार्य कर रहे थे।

रंगो बापू गुप्ते जो सतारा के पदच्युत छत्रपति प्रताप सिंह के वकील थे, दक्षिण में प्रचार कार्य कर रहे थे।

नाना साहब ने राजाओं व नवाबों से राष्ट्र की क्रान्ति में भाग लेने के लिए पत्र व्यवहार किया। पहले तो किसी राजा या नवाब ने उत्तर नहीं दिया। पर जब अंग्रेज शासकों का उनके प्रति व्यवहार का विचार आया, तब कई राजे और नवाब, क्रान्ति में सहयोग देने को तैयार हो गए।

नाना साहब का अंग्रेजों के प्रति मित्रतापूर्ण व्यवहार था। पर उनके अत्याचार, बलपूर्वक छल से दूसरों के राज्यों को अधिकार कर लेने की नीति से शत्रुता थी।

देश के विभिन्न क्रान्तिकारियों से, भावी कार्यक्रम पर विचार करने के लिए नाना साहब, कई प्रान्तों में भ्रमण करते हुए अम्बाला तक गए थे।

उस समय उनके साथ तात्याटोपे, अजीमुल्ला खाँ, बाला साहब, रावसाहब आदि थे।

अनेक स्थानों के क्रान्तिकारियों से मिलने के पश्चात, क्रान्ति आरम्भ करने का दिन ३१ मई नियत कर दिया गया था।

सभी क्रान्ति केन्द्रों को सूचना भेज दी गई, ताकि देश में एक समय क्रान्ति हो, सरकार शीघ्र अपनी शक्ति एकत्र न कर सके।

झाँसी में भी अंग्रेजों के व्यवहार के कारण जनता अंग्रेज विरोधी बन चुकी थी। रानी लक्ष्मीबाई को झाँसी की जनता प्रेम करती थी। अंग्रेजों का अपनी रानी के प्रति दुर्व्यवहार देखकर वह भी अंग्रेजी शासकों से घृणा करने लगे थे।

क्रान्ति प्रचारकों ने और चपाती चक्र ने गाँव-गाँव, नगर-नगर में घूम-कर क्रान्ति का सन्देश घर-घर पहुँचा दिया था।

बुन्देलखण्ड के नागरिकों की आँखें अपनी रानी लक्ष्मीबाई की ओर लगी हुई थीं। वह बुन्देलखण्ड में क्रान्ति योजना में सहयोग देने की तैयारी

कर रही थीं।

झाँसी की छावनी में भी देश की अन्य छावनियों की तरह क्रान्तिकारी भावना फैल चुकी थी। रानी ने सेना में क्रान्ति का प्रचार करने के लिए विशेष कर्मचारी नियुक्त कर दिए थे।

रानी लक्ष्मीबाई की जिस सेना को अंग्रेजी शासकों ने छः छः माह का वेतन देकर भंग कर दिया था।' महारानी लक्ष्मीबाई ने उन सैनिकों को फिर से सेना में भरती करके एक शक्तिशाली सेना बना ली थी।

सारे देश में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की अग्नि फैल चुकी थी। वह समय की प्रतीक्षा में बलपूर्वक विद्रोहाग्नि को दबाने का प्रयत्न कर रहे थे।

१७

सन् १८५७ ईसवी अभी आरम्भ हुई थी। स्थान-स्थान पर अशान्ति के बादल मंडराने लगे। गोरी काली सेना में अंग्रेज शासकों ने पहले ही भेद-भाव रखा हुआ था।

इससे हिन्दुस्तानी सेना पहले से ही असन्तुष्ट थी। इस समय असन्तोष का एक और प्रबल कारण हो गया। पहले जिस बन्दूक का प्रयोग होता था, अब उसके स्थान पर नवीन प्रकार की 'एन फील्ड' बन्दूक का प्रयोग होने लगा। इस बन्दूक के कारतूसों पर कारतूसों को नमी से बचाने के लिए एक चिकना कागज लगाया जाता था।

उसके विषय में यह अफवाह फैल गई कि उसमें गाय और सूअर की चरबी का प्रयोग किया गया है। इस समाचार से हिन्दू-मुसलमान दोनों जाति के सैनिक भड़क उठे।

उन्हें यह विश्वास हो गया, अंग्रेज सरकार भेद-भाव तो रखती ही है, अब उन्हें धर्म भ्रष्ट भी करना चाहती है।

जनता में भी अनेक प्रकार की अफवाहें फैल रही थीं। बाजार में

बिकने वाले आटे में गाय और सूअर की हड्डी पीस कर मिलाई गई है। हिन्दू मुसलिम जनता भी क्रोध में भर गई।

क्या सरकार उनका भी धर्म भ्रष्ट करना चाहती है। असन्तोष के समाचार अंग्रेजों के पास पहुँच चुके थे। पर वह उसका महत्त्व नहीं समझे थे। डिप्टी कमिश्नर स्कीन ने आगरा के गवर्नर को लिख दिया था।

मेरठ दिल्ली की घटनाओं को यहाँ के सैनिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं। पर दस मई १८५७ में कारतूसों वाली घटना को लेकर मेरठ छावनी सेना में विद्रोह फैल गया था।

मंगल पांडे जो स्वतन्त्रता के धर्मवीर समझे जाते थे, उस विद्रोह में अंग्रेज सैनिकों द्वारा मारे गए।

क्रान्ति का श्रीगणेश समय से पहले ही हो गया, जिससे क्रान्तिकारियों की कई स्थानों पर बड़ी भारी हानि हो गई।

मंगल पांडे के बलिदान ने देश में उथल-पुथल मचवा दी। झाँसी की छावनी में सरकार विरोधी भावनाएँ बढ़ने लगी थीं। उस समय तो और भी उथल-पुथल मच गई, जब दो हिन्दुस्तानी सेनाओं को अनुशासन हीनता का अपराध लगाकर उनके सैनिक सेना से निकाल दिए गए।

उस समय झाँसी में हिन्दुस्तानी सेना थी। पैदल तोपखाने का एक दल, बारह नम्बर की देशी सेना की टुकड़ी, चौदह नम्बर का घुड़सवार सैनिक दल था।

झाँसी के किले से लगभग डेढ़ मील की दूरी पर सैनिक छावनी थी। 'स्टार फोर्ट' नाम से छोटा-सा प्रसिद्ध किला था। इसमें सेना का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना था।

इसकी रक्षा के लिए तोपखाने के सैनिक नियुक्त थे। उस सेना के सैनिक अफसर कैप्टन डनलप थे।

शासकीय और राजनैतिक विभागों के पदाधिकारी डिप्टी कमिश्नर कैप्टन एलेक्जेंडर स्कीन थे।

झाँसी की छावनी में क्रान्तिकारी राष्ट्र सेवकों द्वारा ऐसे समाचार आए जिससे झाँसी के सैनिकों के हृदय में भी उथल-पुथल मचने लगी।

बैरकपुर से पहले ही यह समाचार आ चुका था। सरकार विरोधी

भावनाओं और अनुशासनहीनता के अपराध में वहाँ की दो सेनाएँ भंग कर दी गई थीं ।

मंगल पाण्डे के बलिदान के समाचार ने क्रान्तिकारी सैनिकों के हृदय में विद्रोह की ज्वाला भर दी थी । मई में मेरठ में विद्रोह, दिल्ली के बहादुरशाह को सम्राट बनाने और अंग्रेज राज्य की समाप्ति के भी समाचार आए ।

उन समाचारों से क्रान्तिकारी सैनिकों में उत्साह भर गया। फीरोजपुर, बरेली, शाहजहाँपुर, कानपुर, लखनऊ में भी क्रान्तिकारी घटनाओं के समाचार आने लगे । झाँसी के क्रान्तिकारी भी सचेत होकर अवसर की प्रतीक्षा करने लगे ।

अंग्रेज अफसर घबरा गए, आगे आने वाले संकट का उन्हें अब अनुभव हुआ । कैप्टन गार्डन कई अंग्रेज अफसरों को लेकर रानी लक्ष्मीबाई के पास पहुँचा ।

उसने रानी से प्रार्थना की 'यदि अंग्रेजों पर संकट आए तो संकट के समय उनकी सहायता करके अंग्रेजों की रक्षा करे ।'

दयालु महारानी ने अपना अपमान, व्यवहार जो अंग्रेजों ने उनके साथ किया था, भुला दिया । और संकट के समय अंग्रेजों की रक्षा करने का वचन दिया ।

रानी ने तुरन्त ठाकुरों को सेना में भरती करना आरम्भ कर दिया ...झाँसी के पुराने सैनिकों को वापिस बुलाकर उन्हें वही पद सौंप दिए । सेना तैयार करने का कार्य रानी लक्ष्मीबाई ने लालू बख्शी स्वामी भक्त सेनानायक को सौंप दिया । झाँसी में रानी की शक्तिशाली सेना तैयार हो गई ।

अंग्रेज पदाधिकारी अपने बच्चों और महिलाओं की रक्षा के लिए भी महारानी लक्ष्मीबाई के पास आए । महारानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज महिलाओं का उनके बच्चों सहित भोजन व निवास का प्रबन्ध कर दिया ।

अंग्रेज पदाधिकारी इससे सन्तुष्ट नहीं हुए, उन्होंने अपने परिवार को रानी के महल से ले जाकर किले में रख दिया । रानी ने कोई आपत्ति नहीं की । रानी ने उन्हें यह सलाह दी, 'आप परिवार सहित 'दतिया'

चले जाएँ···वहाँ अधिक सुरक्षित रहेंगे। क्योंकि मेरठ, दिल्ली के समाचार सुनकर हमारे सैनिकों के हृदय में भी हलचल मची हुई है।'

अंग्रेज अफसरों ने रानी की बात नहीं मानी। अपने परिवार के बालक, महिलाओं को किले में ही रखना उन्हें ठीक लगा।

विद्रोह की तिथि निश्चित हो चुकी थी। अंग्रेज शासक दिल्ली, मेरठ के भयानक काण्डों से थर्रा उठे थे। वह रानी लक्ष्मीबाई के पास फिर पहुँचे। गार्डन और कई अंग्रेज उनके साथ थे।

उन्होंने महारानी को कहा, 'हम झाँसी राज्य की व्यवस्था का भार आपको सौंपने आए हैं। जब तक फिर से अंग्रेजी राज्य की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक आप अपना राज्य सम्भालें।

'और राज्य की रक्षा के साथ हमारी रक्षा का भी प्रबन्ध करें। क्योंकि ऐसा प्रतीत हो रहा है संकट समीप ही है।'

'जब मैंने राज्य अधिकार माँगा था, तब तो आपने मुझे अधिकार से वंचित करके राज्य पर अधिकार कर लिया। इस समय अव्यवस्था, अनुशासनहीनता, धन की न्यूनता झाँसी में हो गई, तब आप मुझे झाँसी राज्य सम्भालने के लिए कह रहे हैं।'

रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों की स्वार्थपूर्ण बातें सुनकर चुप न रह सकीं, उन्होंने निर्भयता से उस पदाधिकारी को उत्तर दिया, 'ऐसे संकट के समय मैं आपकी कुछ भी सहायता न कर सकूँगी।'

कैप्टन गार्डन ने राज्य के सारे कागजात रानी लक्ष्मीबाई को सौंप दिए, और अपने साथियों सहित किले की ओर चला गया।

झाँसी का किला एक ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ था। इसके चारों ओर मैदान था। किले के चारों ओर सोलह और बीस फुट मोटा कोट था।

यह बीस फुट लम्बा, बीस फुट चौड़ा था। चारों और बड़े-बड़े बुर्ज बने हुए थे, जिन पर तोपें रखने के स्थान बने हुए थे।

किले का सबसे बड़ा बुर्ज, बीस फुट लम्बा, बीस फुट चौड़ा था। उस बुर्ज का नाम गरगज था। इसकी ऊँचाई साठ बासठ गज की थी। इसके चारों ओर बड़ी-बड़ी तोपें लगी हुई थीं।

किले की सुरक्षा के लिए दीवार पर ५१ तोपें थीं। उनके नाम भी अनूठे थे। कडक, बिजली, भवानी, शंकर, घन गर्जन, नालदार, आदि प्रसिद्ध तोपें थीं।

किले की दीवारों में गोलियाँ चलाने के छेद बने हुए थे। कहीं-कहीं इन छेदों की स्थान-स्थान में कई-कई कतारें थीं।

किले में रानी का सुन्दर महल था।

कई सरदारों के महल भी वहीं बने हुए थे। दो मन्दिर और एक कुँआ था। झाँसी के किले को प्रकृति और कुशल कारीगरों ने सुदृढ़ और दुर्जेय बना दिया था।

किले के दक्षिणी पश्चिमी भाग को छोड़कर बाकी सब ओर झाँसी नगर बसा हुआ था। नगर की परिधि साढ़े चार मील के लगभग थी।

नगर के चारों ओर सोलह से बीस फुट मोटी तथा तीस फुट तक ऊँची दीवार थी। उस पर भी तोपें रखने के स्थान बने हुए थे।

बन्दूक से गोलियाँ दागने के लिए दीवार में भी स्थान-स्थान पर छेद बने हुए थे। यह दीवार नगर के चारों ओर होती हुई दोनों ओर के टीलों पर जाकर मिल जाती थी।

इस टीले के गोल बुर्ज पर भी तोपें लगी हुई थीं। नगर के समीप महल था।

अंग्रेज शासक कैप्टन गार्डन किले को सुदृढ़ सुरक्षित समझ कर अंग्रेज पदाधिकारियों के बच्चे और महिलाओं को और अपने परिवार को किले में ले गया।

१८

चारों ओर से क्रान्ति के समाचार आकर झाँसी के सैनिकों के हृदय में उथल-पुथल मचा रहे थे। अभी वह निर्णय नहीं कर पाए थे कि क्रान्ति में इसी समय सहयोग देना चाहिए या प्रतीक्षा करनी चाहिए।

'स्टार फोर्ट' झाँसी से डेढ़ मील के लगभग छोटा-सा प्रसिद्ध किला

था। उसके बाहर हिन्दुस्तानी सैनिक पहरा दे रहे थे, क्योंकि स्टार फोर्ट के किले में ही सरकारी खजाना और शस्त्रागार था।

पहरे वाला सैनिक मुख्य सैनिक से आवश्यक बात करके मुख्य द्वार पर आया था, तभी उन्हें टप-टपा-टप घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई दिया।

पहरेदार चौकन्ने होकर उसी ओर देखने लगे, उन्होंने अपनी बन्दूकें कन्धों पर रख लीं। टप-टप-टपा-टप घोड़ों की टापों का शब्द उन पहरे वालों के समीप आकर ठहर गया।

कई घुड़सवार पसीने से भींगे उनके समीप आए, किले के पहरेदार यह जानने का यत्न कर रहे थे कि आने वाले शत्रु हैं या मित्र···।

तभी मुख्य घुड़सवार ने आगे बढ़कर पहरे वाले मुख्य सैनिक के हाथ में पत्र दिया और सारे घुड़सवार घोड़े दौड़ाते, जिस ओर से आए थे, उसी ओर चल दिए।

पहरे वाला मुख्य सैनिक हाथ में पत्र लिए आश्चर्य से उनकी ओर देखता रह गया, उसके हाथ में पत्र क्यों दिया ? क्या लिखा है ? सोचते हुए उसने पत्र खोलकर पढ़ा।

पत्र में लिखा था। बंगाल प्रान्त की सेना ने भी विद्रोह कर दिया है, झाँसी की सेना क्या सोच कर चुपचाप तमाशा देख रही है जबकि कई क्रान्तिकारियों को शत्रुओं ने फाँसी पर लटका दिया है।

झाँसी सेना तमाशा देखने वाली है, कार्य करने वाली नहीं, उसका धर्म और जाति से बहिष्कार किया जाता है।

मुख्य पहरे वाले सैनिक का पत्र पढ़ते ही क्रोध से मुँह लाल हो गया, आँखें क्रोध से लाल होकर शत्रु से बदला लेने के लिए ढूँढ़ने लगीं।

उसने अपने साथियों को संकेत से कुछ बताया, और उन सबको लेकर सीधे अंग्रेजों के बंगले की ओर चल पड़ा।

थोड़ी देर में ही जहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। ठाँय-ठाँय···फटाफट, बन्दूक की गोलियों के शब्द से वायु-मण्डल गूँज उठे।

सारे में शोर मच गया, विद्रोही आ गए, अंग्रेज कर्मचारी पदाधिकारी इधर-उधर भाग कर जीवन बचाने के लिए छुपने का स्थान ढूंढ़ने लगे।

स्त्री-बालक भय-से चिल्लाते हुए, अपने साथियों को बचाने के लिए बुलाने लगे। इतना कोलाहल मच गया, एक-दूसरे का शब्द सुनना कठिन हो गया।

पाँच जून को अनूठा, अशान्त, दुखदायक वातावरण बन गया। थोड़ी देर पहले जहाँ अंग्रेज पदाधिकारी अपने हिन्दुस्तानी कर्मचारियों को ठोकर मार कर 'यू काला डेम' कहकर कायर कहकर अपमानित कर रहे थे, उनके आगे हाथ जोड़कर प्राणों की भिक्षा माँगने लगे, पर वह भीरु काले कहलाने वाले सैनिक सिपाहियों पर उन आने वाले क्रान्तिकारी घुड़सवारों ने पत्र देकर न जाने कौन-सा मन्त्र फूंक दिया था, वह शेरों की तरह दहाड़ते उन अंग्रेजों के रुधिर के प्यासे हो गए, जिनकी रात-दिन सेवा करके तलवे चाटते थे।

कैप्टन डनलप, कैप्टन स्कीन, कैप्टन गार्डन इस घटना से चौंक गए, क्योंकि सशस्त्र सिपाहियों ने अन्दर घुसकर शस्त्रागार और खजाने पर अधिकार कर लिया था। खजाने में चार लाख रुपये थे।

पहरे पर खड़े सैनिकों ने उनके कार्य में बाधा नहीं डाली···शस्त्रागार के सामने तोपें लगा दीं, 'स्टार फोर्ट' के चारों ओर पहरे बैठा दिए गए।

अंग्रेज अब हिन्दुस्तानी सैनिकों को अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे, उन्हें यह भी चिन्ता हो गई कि कहीं सैनिक विद्रोहियों में सम्मिलित न हो जाएँ।

डनलप कैप्टन, आवश्यक पत्र लिखकर स्वयं ही डाकखाने गया। उसका विश्वास हिन्दुस्तानी कर्मचारियों से उठ गया था। जैसे ही वह डाकखाने में पत्र डालकर वापिस आया, उसके साथ सहयोगी टेलर भी वापिस आया। सेना के सैनिक क्रोध में भरे हुए थे। उन्होंने बन्दूक से उन पर गोली चलाई, डनलप उसी समय मृत्यु की गोद में सो गया।

दूसरे सैनिक की गोली ने टेलर को भी मृत्यु की गोद में सुला दिया। सारी सेना में विद्रोह फैल गया।

विद्रोही सैनिक, भरी बन्दूकें लेकर अंग्रेज पदाधिकारियों से अपने साथियों के अपमान का बदला लेने चल पड़े।

कैप्टन स्कीन अदालत में बैठा हुआ किसी मुकदमे की सुनवाई कर रहा था, तभी क्रान्तिकारी सैनिक वहाँ आ पहुँचे।

कैप्टन स्कीन भागकर अपने बंगले में पहुँचा, कैप्टन गार्डन को किले में लाने की अपने कोचवान को आज्ञा दी और स्वयं पत्नी व बच्चों सहित किले की ओर चल पड़ा।

मार्ग में ही उसे वह बग्घी मिल गई, जिसमें गार्डन अपने परिवार सहित बैठा था। कैप्टन स्कीन भी अपनी पत्नी-बच्चों सहित बग्घी में बैठ गया और किले में पहुँच गया।

सारे नगर में कोलाहल लूट-मार मच गई। नगर के अंग्रेज स्त्री-पुरुष भाग कर किले में एकत्र होने लगे। उनके साथ कई हिन्दुस्तानी स्वामी-भक्त सेवक भी आ गए।

नगर में कोई अंग्रेज नहीं रहा। क्रान्तिकारियों ने बंगलों को लूट कर आग लगा दी। जेल के फाटक तोड़कर बन्दियों को मुक्त कर दिया। वह भी क्रान्तिकारी सैनिकों के साथ मिलकर लूटमार करने लगे। बन्दियों ने सरकारी दफ्तरों से फाइलें एकत्र कर उनमें आग लगा दी। बंगाली कर्मचारी सरकारी दफ्तरों में कलर्क थे, जो अंग्रेजों को सहयोग दे रहे थे, उनके भी घर लूट लिए गए।

छः जून को प्रातःकाल होते ही विद्रोही सैनिक उनके सहायक क्रान्ति-कारियों ने किले का चारों ओर से घेराव कर लिया, और तोपों से गोले बरसाने लगे।

अंग्रेजों ने भी उन पर गोलियाँ बरसा कर उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया। पाँच जून से आठ जून तक झाँसी में इतनी अशान्ति रही, किसी को किसी की सुध न रही।

किले में भी खाने-पीने की सामग्री समाप्त होने लगी। बारूद और गोलियाँ भी कम रह गईं। अंग्रेजों के स्वामीभक्तों ने छिपा कर खाने-पीने की सामग्री भिजवाई।

क्रान्तिकारी सैनिकों को यह सूचना मिली, भोजन और युद्ध सामग्री के साथ विश्वासघातियों ने अंग्रेजों के विशेष सन्देश पत्र भी विशेष स्थानों पर भेजने का कार्य भी अपने हाथों में ले लिया है।

जिससे क्रान्तिकारियों की योजना में बड़ी भारी बाधा हो रही है। वह यह सूचना सुनकर क्रोध में भर गए, अपने ही शत्रुओं को सहयोग दे रहे हैं। उन्होंने उन विश्वासघातियों को सूच ना मिलते ही पकड़ लिया।

अंग्रेज स्वमीभक्त कोतवाल नीलधर, जमादार नाथूसिंह···मदार-बख्स और उनके साथी क्रान्तिकारियों द्वारा पकड़े गए, और उन्हें बन्दी बना लिया गया।

अंग्रेजों के सहायक पकड़े जाने से उन्हें बाहर से सहायता मिलनी बन्द हो गई। भूख से व्याकुल होकर कई अंग्रेज, हिन्दुस्तानी वेश धारणा करके बाहर निकलने का प्रयत्न करने लगे।

पर घेरा दृढ़ होने के कारण वे बाहर न भाग सके, पकड़ कर बन्दी बना लिए गए। कई भागकर वापिस किले में चले गए।

भूख से छटपटाते अंग्रेजों का समाचार सुनकर दयालु रानी लक्ष्मी-बाई का हृदय दुखी हो गया। उसने तीन दिन तक लगातार कई मन आटे की रोटियाँ बनवा कर क्रान्तिकारियों से छिपा कर भिजवाईं।

तीस-चालीस ठाकुरों को भी उनकी रक्षा के लिए भेजा···। पर अंग्रेजों को उन पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने उन ठाकुरों को किले के दूसरी ओर पहरा देनें भेज दिया। वहीं से क्रान्तिकारियों पर गोली चलाने का आदेश दिया। उन्हें किले के भीतरी भाग में नहीं जाने दिया।

क्रान्तिकारी विद्रोही सैनिकों ने देखा, हमारे साथी हमीं पर गोली चला रहे हैं। तब वह क्रोध में भर गए और उन्होंने ठाकुरों के मुखिया को पकड़ लिया और उससे कहा, 'यदि ठाकुरों को वापिस नहीं बुलाओगे, तो तुम्हें मार दिया जाएगा।' ठाकुर ने अपने साथियों को वापिस बुला लिया। वह यह भी समझ चुका था कि अंग्रेज भी उन पर विश्वास नहीं कर रहे हैं।

कहीं उनकी ऐसी दशा न हो जाए, इधर के रहें, न उधर के कहावत है, 'धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।' वह कहावत हम पर ही न ठीक बैठ जाए। वह अपने साथियों सहित नगर में आ गया।

किले के भीतर जो हिन्दुस्तानी थे, क्रान्तिकारियों की सूचना पर उन्हें सहयोग देने को तैयार हो गए। उन्होंने किले का फाटक खोलकर

झाँसी से बाहर जाने देंगे।

क्रान्तिकारी नेता ने शर्तें मान ली, पर जैसे ही स्कीन कई अंग्रेज परिवारों सहित, किले से बाहर आया, विद्रोहियों ने बन्दी बनाकर मार डाला। कई अंग्रेजों की जोखन बाग ले जाकर हत्या कर दी। जिधर जोखन बाग में यह हत्याकाण्ड हुआ, किले के दक्षिण की ओर छावनी का क्षेत्र था, कई मन्दिर थे, और जोखन बाग था।

श्रीमती मेटलो जो हिन्दुस्तानी वेश में थी, अपने दो बच्चों सहित जोखनबाग की कबर के पीछे छिप कर बच गईं। बचे हुए अंग्रेजों ने इस जोखनबाग के हत्याकाण्ड का दोषी रानी लक्ष्मीबाई को बताया।

जिस समय यह जोखनबाग का हत्याकाण्ड हुआ, रानी लक्ष्मीबाई का कोई कर्मचारी वहाँ नहीं था। विद्रोही क्रान्तिकारियों ने ही अपने अपमान व अत्याचार का बदला लेने के लिए यह क्रूर काण्ड किया था।

अंग्रेजों ने जोखनबाग का हत्याकाण्ड रानी लक्ष्मीबाई के नाम लिखा, बहादुरशाह मुगल सम्राट को दिल्ली हत्याकाण्ड का दोषी बताया गया और नानासाहब को सत्तीचौरा और बीबीघर के हत्याकाण्डों के लिए उत्तरदायी माना गया।

उन्हें दोषी मानने का कारण जनता जानती थी। यह सब अंग्रेजी सरकार द्वारा किए गए अत्याचार का विरोध करते थे। उनके अत्याचार व अन्याय के वे कट्टर शत्रु थे।

झाँसी में अब कोई अंग्रेज नहीं रह गया था। विद्रोही सैनिक, क्रान्तिकारियों ने आगे के कार्यक्रम पर विचार विमर्श किया और क्रान्ति के गढ़ दिल्ली जाने का कार्यक्रम बनाया।

सेना के अब आगे जाने के लिए भोजन और युद्ध सामग्री के लिए धन की आवश्यकता थी। धन का प्रबन्ध कैसे हो, सोचते हुए उन्होंने महारानी से कहा, 'हमें भोजन और युद्ध सामग्री के लिए धन की आवश्यकता है। आप हमें धन दें, ताकि हम वापिस दिल्ली लौट जाएँ।'

महारानी लक्ष्मीबाई के पास उस समय धन नहीं था। उन्होंने विद्रोहियों को समझाने का यत्न किया, 'अंग्रेजों ने राज्य के साथ धन-सम्पत्ति ले ली थी, इस समय मेरे पास धन नहीं है।'

कई विद्रोही सदाशिव नारायण के हितैषी थे। रानी का उत्तर सुन कर वह बोले, 'आप यदि इस समय हमें धन की सहायता नहीं करेंगी··· तब हम सदाशिव नारायण से धन लेकर उन्हें झाँसी की गद्दी पर बैठा देंगे।

विद्रोही इस समय होश में नहीं हैं, इस समय वह भले-बुरे का ज्ञान भुला बैठे हैं। सोचते हुए, रानी लक्ष्मीबाई ने अपने बहुमूल्य गहने विद्रोहियों के सामने रख दिए।

विद्रोही धन की सहायता पाकर प्रसन्न हुए, उन्हें दिल्ली जाने का साधन मिल गया था। उन्होंने लक्ष्मीबाई को झाँसी की रानी घोषित कर दिया और रानी लक्ष्मीबाई का जयघोष करते दिल्ली की ओर चल पड़े।

विद्रोही सैनिक दिल्ली की ओर चले गए हैं, सुनकर झाँसी के नागरिकों ने सन्तोष की साँस ली। पाँच जून से ग्यारह जून तक झाँसी में जो लूटमार हुई थी, झाँसी के नागरिक, रात-दिन युद्ध, लूटमार से व्याकुल हो गए थे। झाँसी नगरी में अशान्ति छाई हुई थी।

विद्रोही सैनिकों के जाते ही, रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी राज्य का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया। अंग्रेजी सरकार ने अन्यायपूर्वक जिस राज्य को रानी लक्ष्मीबाई से छीन लिया था, अब परिस्थितियों ने रानी के हाथ में फिर से सौंप दिया।

रानी ने अपने स्वामीभक्त राज्य कर्मचारियों तथा महिला सेना द्वारा राज्य प्रबन्ध करना आरम्भ किया। घायलों की सेवा का प्रबन्ध किया गया, मृतकों का सम्मानपूर्वक अन्तिम संस्कार कर दिया गया।

अभी सुचारु रूप से राज्य प्रबन्ध रानी लक्ष्मीबाई करने का यत्न कर रहीं थीं, तभी उन्हें सूचना मिली—महाराजा गंगाधरराव का दूर का सम्बन्धी सदाशिवनारायण नेवालकर जो अपने आपको झाँसी का सच्चा उत्तराधिकारी मानता था, उसने अपनी सेना लेकर झाँसी से तीस मील दूर, करेरा नामक किले पर अधिकार कर लिया है।

और बड़ी धूमधाम से राज्याभिषेक की रीति पूर्ण की गई है। राज्य-तिलक कराने के पश्चात, सदाशिव नारायण नेवालकर ने 'महाराजा झाँसी', की उपाधि धारण की।

झाँसी के राज्य कर्मचारियों को आज्ञा पत्र लिखे, 'नए महाराजा ने राज्य कर्मचारियों को उसी पद पर नियुक्त किया है, जिस पद पर वे पहले कार्य कर रहे थे।'

यदि महाराजा की आज्ञा की अवहेलना की जाएगी, तो उनके पद समाप्त कर सम्पत्ति भी जब्त कर ली जाएगी। राजपुर के थानेदार गुलाम हसन ने सदाशिव नारायण की आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया।

इस कारण थानेदार गुलाम हसन को पद से पृथक करके उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई। कई कर्मचारियों ने सदाशिव नारायण की आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। जिसके कारण उन्हें भी बहुत हानि उठानी पड़ी।

अब आसपास के ठाकुरों से बलपूर्वक उसके कर्मचारी कर वसूल करने लगे। जिसके कारण राज्य में अव्यवस्था फैल गई।

महारानी लक्ष्मीबाई को सदाशिव नारायण के इन कार्यों की सूचना गुप्तचर द्वारा प्राप्त हुई। उन्होंने उस विद्रोह को दबाने के लिए अपनी सेना तैयार की। गुप्त रूप से उन्होंने अंग्रेजों को राज्य सौंपने से पहले तोपें गढ़वा दी थीं। उन तोपों को निकलवा कर उनकी सफाई कराई गई। और प्रयोग योग्य बनाया गया।

सेना, युद्ध योग्य सामग्री तैयार करके, रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी सेना को करेरा पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। रानी के सैनिकों ने किले को चारों ओर से घेर लिया।

सदाशिवराव की सेना रानी की सेना का सामना न कर सकी। सदाशिव नारायण ग्वालियर रियासत के नरवर स्थान पर भागकर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर सदाशिव नारायण ने झाँसी पर आक्रमण करने के लिए फिर से सेना एकत्र कर ली।

रानी लक्ष्मीबाई ने फिर अपनी सेना को सदाशिव नारायण की सेना से लोहा लेने भेजा। सदाशिव नारायण पराजित हो गया और रानी लक्ष्मीबाई की सेना ने उसे बन्दी बना कर झाँसी के किले में रख दिया।

लालू बक्सी पर रानी को बहुत विश्वास था। पर उसने सदाशिव राव नारायण को सहयोग दिया था। इस अपराध के कारण थोड़े समय

उसे भी बन्दी खाने में रखा गया ।

फिर शपथ लेने पर उसे मुक्त कर दिया गया । सदाशिव नारायण को हराकर झाँसी के सैनिक अभी विश्राम भी नहीं कर पाए थे कि ओरछा के दीवान नत्थे खाँ ने बड़ी भारी सेना लेकर झाँसी पर आक्रमण कर दिया । महारानी लक्ष्मीबाई के सैनिकों को, अंग्रेजों ने सेना भंग करके, रानी से बिना पूछे सेवा मुक्त कर दिया था ।

रानी लक्ष्मीबाई ने उन्हें बुलाकर फिर से सेना में भरती कर लिया । झाँसी में बारूद, गोले-गोलियाँ बनाने के कारखाने खोले गए । तोपों की सफाई करवा कर बुर्ज पर चढ़ायी गयीं ।

पास पड़ोस के ठाकुर, जमींदारों को युद्ध में सहयोग देने के लिए बुलाया गया । रानी ने फिर एक बड़ा दरबार किया, जिसमें बड़े-बड़े जमींदार-ठाकुर पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया ।

दीवान दिलीपसिंह, ओरछा नरेश के दामाद (जमाई), दीवान रघुनाथ सिंह, दीवान जवाहरसिंह और अनेक प्रभावशाली ठाकुर रानी के बुलाने से झाँसी आए ।

महारानी लक्ष्मीबाई ने संकटकाल में सभी जमींदार-ठाकुर, दीवान ठाकुरों से सहयोग देने की प्रार्थना की ।

सभी उपस्थित पदाधिकारियों ने संकट के समय रानी लक्ष्मीबाई को सहायता देने का आश्वासन दिया । और समय पर आने का वचन देकर रानी को विश्वास दिलाया ।

नत्थे खाँ से युद्ध करने के लिए महारानी लक्ष्मीबाई पूर्णरूप से तैयार हो गईं । दीवान जवाहरसिंह को करीले वाले सेनापति के पद पर नियुक्त कर दिया ।

नत्थे खाँ झाँसी की ओर बढ़ने लगा, झाँसी की सेना ने नत्थेखाँ की सेना को सीमा पर ही रोकने का यत्न किया, पर उन्हें सफलता नहीं मिली । नत्थे खाँ के ओरछा के सैनिक किले के समीप आ पहुँचे ।

महारानी झाँसी अपने सैनिकों में उत्साह भरने के लिए स्वयं अपनी अंगरक्षक मुन्दर सुन्दर सहित मरदाना वेश धारण करके युद्ध के लिए तैयार हो गईं ।

रानी ने सिर पर साफा बांधकर कलगी लगाई, अँगरखा और पायजामा पहना, गले में मोतियों का कण्ठा पहना, कमर की पेटी में तलवार लटकाई, मरदाना वेश धारण कर किले के बुर्ज पर पहुँच गईं।

नत्थेखाँ की सेना किले के समीप पहुँच चुकी थी। रानी के चतुर गोलन्दाज गुलाम गौस खाँ की तोपों ने नत्थे खाँ की सेना को गोलों की आग उगल कर नष्ट करना आरम्भ कर दिया।

नत्थे खाँ की सेना इस भयानक गोलाबारी से घबराकर पीछे हटने लगी, नत्थेखाँ ने अपनी सेना को उत्साहित करके आगे बढ़ाया, और प्रबल आक्रमण करके, ओरछा नाम के दरवाजे को तोड़ कर उधर से झाँसी में घुसने का यत्न किया।

उसकी तोपें सारी रात गोले बरसाती रहीं। और ओरछा दरवाजा तोड़ने का यत्न करती रहीं। दरवाजा टूट जाता तो नत्थे खाँ झाँसी पर अवश्य अधिकार कर लेता, पर बुद्धिमान शूरवीर रानी घोड़े पर सवार, नंगी तलवार हाथ में लिए, अपने अंगरक्षकों सहित ओरछा दरवाजे की रक्षा करती रही।

उस वीर रानी की वीर महिला सेना भी युद्ध में सहयोग दे रही थी। जिन्हें देखकर एक बार कायरों में भी उत्साह भर जाता था। वीर रानी को अपनी महिला सेना सहित वीरता से युद्ध करते देख कर, रानी के सैनिकों में दुगना उत्साह भर गया। वह बड़ी वीरता से आगे बढ़कर शत्रु के दाँत खट्टे करने लगे।

२०

नत्थेखाँ यह समझ कर रानी लक्ष्मीबाई से युद्ध करने आया था कि रानी की सेना सदाशिवराव नारायण से युद्ध करके थक चुकी होगी, और उसकी अपनी सेना शक्तिशाली है, अतः जीत होगी ही।

अँग्रेज शासकों को भी उसने यह लिखकर भेज दिया था। 'रानी लक्ष्मीबाई विद्रोहियों से मिल गई है, इस कारण विद्रोह दबाने के लिए

झाँसी में सेना लेकर जा रहा हूँ।'

उसका उद्देश्य था, झाँसी पर अधिकार करके अवसर से लाभ उठा कर राज्य विस्तार करना।

पर लालू बख्शी ने झाँसी की प्रसिद्ध तोप कड़क बिजली से शत्रु सेना पर गोले बरसा कर, नत्थूखाँ की आशा धूल में मिला दी।

इन तोपों की मार नत्थेखाँ की सेना सहन न कर सकी, वह अपनी तोपों को भी युद्ध के मैदान में छोड़कर···पीठ दिखाकर भागी।

रघुनाथसिंह पहाड़ी के ऊपर से शत्रु के आक्रमण की योजना देखकर, तोपों से गोले बरसा रहा था। नत्थेखाँ की मैदान छोड़ कर भागती हुई सेना पर पर पहाड़ी के ऊपर से गोले बरसा कर, उसने उन्हें और भी हानि पहुँचाई।

पर नत्थेखाँ सहज ही हार मानने वाला नहीं था···उसने भागते हुए सैनिकों को मऊरानीपुर, बरवासागर के समीप जाकर रोक लिया। उनकी कायरता की भर्त्सना करके उन्हें फिर से युद्ध के लिए तैयार किया।

यह सूचना झाँसी पहुँची, तब झाँसी से मोरोपन्त ताम्बे, काशीनाथ, गंगाधर आदि वीर सेनापति सेना लेकर पहुँच गए। और नत्थेखाँ के सैनिकों के ऐसे दाँत खट्टे किए कि वे पीठ दिखाकर भाग गए। उनमें फिर मुड़कर आने का साहस नहीं हुआ। रानी लक्ष्मीबाई की विजय हुई, रानी ने विजय के उपलक्ष में दरबार किया। विजयी सरदारों को अपने हाथ से बहुमूल्य अलंकार उपहार में दिए। सैनिक कर्मचारियों को पुरस्कार देकर उनकी पदोन्नति की। घायल सैनिकों के लिए अस्पताल में उपचार का प्रबन्ध करके परिवार वालों को धन की सहायता दी गई।

महारानी लक्ष्मीबाई के हाथ में जिस समय झाँसी के राज्य शासन का अधिकार आया, उस समय राज्य में बहुत ही अशान्ति छाई हुई थी।

दो-तीन वर्ष अँग्रेजी शासन काल में झाँसी में अँग्रेजों ने ऐसे कार्य किए थे, जिससे नागरिकों की सामाजिक, धार्मिक भावनाओं को बहुत ठेस पहुँची थी।

अंग्रेजों ने गऊ वध करवा कर, और महालक्ष्मी के मन्दिर, प्रसाद पूजापाठ उत्सव आदि के खर्च के लिए दो गावों की आय, मन्दिर के नाम थी, उन गावों को अपने अधिकार में करके नागरिकों को रुष्ट कर दिया था।

विद्रोही सैनिकों ने भी नगर में उत्पात करके नागरिकों और उनकी सम्पत्ति को हानि पहुँचाई थी। चोर डाकू लुटेरे स्वतन्त्र होकर चोरी, लूट, मार करने लगे थे।

चारों ओर अशान्ति छा गई थी। नागरिक नगर में भी अपने को सुरक्षित अनुभव नहीं कर रहे थे।

महारानी लक्ष्मीबाई ने चोर-डाकू लूटेरों को पकड़ने के लिए सैनिक भेजे, पर उनके आतंक को न रोक सके, निराश होकर लौट आए। बरुवा सागर में तो डाकुओं ने इतना आतंक मचाया, नागरिकों की रात्रि की नींद भी छिन गई।

रानी ने अपने पुलिस कर्मचारी तथा सैनिक भेजकर, चोर व लुटेरों को पकड़वा कर कठोर दण्ड दिया। फिर डाकुओं को पकड़ने के लिए सेना की छोटी सी टुकड़ी को लेकर रानी लक्ष्मीबाई स्वयं बरुवा सागर की ओर चल पड़ी।

कई दिन तक डेरे डालकर, सैनिकों सहित, नगर से बाहर रानी ठहरी, डाकुओं से मुठभेड़ हुई। डाकू पकड़े गए। उन्हें पकड़कर फाँसी पर लटका दिया गया। दुष्ट लुटेरे, कठोर दण्ड की यातनाएँ सुनकर थर-थर काँपने लगे।

उन्होंने चोरी, लूटमार छोड़कर, अच्छे नागरिक बनने की शपथ ली, शीघ्र ही महारानी लक्ष्मीबाई ने नगर में शान्ति स्थापित कर, नागरिकों को भय से मुक्त किया।

झाँसी का खजाना अँग्रेज समाप्त कर गए थे। सेना संगठन, उनके वेतन के लिए धन चाहिए था। नगरवासियों की सुख सुविधा के लिए भी धन की आवश्यकता थी।

महारानी लक्ष्मीबाई ने यह सब सोचकर, जितना उनके पास धन और आभूषण थे, जनता के सुख साधन के लिए और सेना को वेतन के

लिए दे दिया। फिर सेठ साहूकारों से प्रार्थना की, वह ऐसे संकट के समय सहयोग दें।

कई सेठों ने धन से सहायता की, कई बड़े सेठों से ऋण के रूप में धन लेकर, महारानी लक्ष्मीबाई ने सेना का प्रबन्ध किया। खजाने में गहने बेच कर धन जमा किया, पर वह तो ऊँट के मुँह में जीरे के समान हो गया।

बुद्धिमान रानी ने सोच विचार कर घर गृहस्थ के रसोई के काम में आने वाले महल के बर्तन, बड़ी-बड़ी परातें, पतीलियाँ, गागर, पानी की गंगालें, टोकनियाँ एकत्र करके, नए रुपये बनाने को टकसाल में भेज दिए।

जितने चाँदी के बरतन राजमहल में थे, सभी टकसाल में भेज दिए गए। कई दानी सेठ साहूकारों ने भी अपने चाँदी के बरतन टकसालों में भेजकर, राजकोष के खजाने को बढ़ाने में सहयोग दिया।

नए रुपये बनाने की टकसाल में रानी के नाम के सिक्के ढाले गए। और खाली राज कोष में फिर से हजारों रुपये एकत्र हो गए।

स्वर्गीय महाराजा गंगाधरराव के समय की शासन व्यस्था अच्छी थी। महारानी लक्ष्मीबाई ने भी उसी व्यवस्था को अपनाया।

राजकुल के अनुभवी बूढ़े सलाहकार, नाना भोपकटर के परामर्श से शासन का संगठन किया। पुराने कर्मचारी जो अँग्रेजों ने सेवा मुक्त कर दिए थे, उन सबको बुलाकर उनके पहले वाले पद दे दिए गए। पुलिस-विभाग, अनुभवी, विश्वासी वीर मनुष्यों को सौंपा गया।

लक्ष्मणराव को प्रधान मन्त्री बनाया गया। विभिन्न परगनों पर तहसीलदार नियुक्त किए गए।

नाना भोपटकर को न्याय विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। जिन कर्मचारियों ने रानी लक्ष्मीबाई का विरोध किया था, उन्हें झाँसी से निकाल दिया गया। विरोधियों के प्रमुख त्रिम्बकराव और गोपालराव को भी झाँसी से निर्वासित कर दिया गया, उन्होंने दतिया में जाकर शरण ली।

थोड़े समय में ही रानी ने राज्य की शासन व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण

सुधार कर लिया। नागरिक सुशासन से प्रसन्न और सुखी हो गए। राज्य की आय भी बढ़ गई।

धीरे-धीरे झाँसी अपने वैभव और ऐश्वर्य को पाने लगी। सैनिक बल बढ़ाने पर भी रानी ने अधिक ध्यान दिया। दीवान जवाहर सिंह सेनापति नियुक्त किए गए।

सेना में युवकों को भरती करके उन्हें कवायद कराने तथा युद्ध में अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा देने के लिए अनुभवी सैनिकों को नियुक्त किया गया। दीवान रघुनाथ सिंह, मुहम्मद जमाखाँ, खुदाबक्स को कर्नल का पद प्रदान किया गया।

ठाकुरों व अफगानों के दल पृथक-पृथक संगठित किए गए। लालू बख्शी को युद्ध का आवश्यक सामान तैयार करने का कार्य सौंपा गया। उनके अन्तर्गत अनेक कारखाने खोले गए।

उनकी देख भाल में बारूद तैयार करके गोलियाँ व गोले बनने लगे। गुलाम मुहम्मद गौसखाँ को तोपखाने का प्रधान पदाधिकारी बनाया गया। पुरानी तोपों की सफाई करके उन्हें काम के योग्य बनाया गया।

गौसखाँ के नेतृत्व में झाँसी में शक्तिशाली तोपखाना तैयार हो गया। अनेक सैनिकों को गोलन्दाजी की शिक्षा दी गई।

महारानी लक्ष्मीबाई ने महाराजा गंगाधरराव के समय अपनी महिला सेना बना ली थी। उसका उपयोग भी समय पर संकट आने पर हुआ था। अब तो बहुत सी नवयुवतियों ने देश प्रेम के कारण उत्साह से सेना में अपने नाम लिखवाए।

और विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा भी लेने लगीं। तोप चलाने का कार्य भी इन महिलाओं ने सीखा। महिला सेना की सेनानायक सुन्दर-मुन्दर काशीबाई थीं। यह महारानी लक्ष्मीबाई की अंगरक्षक, सखियाँ और महिला सेना की सेनापति थीं।

महारानी लक्ष्मीबाई ने किले की फिर से मरम्मत करवाकर उसके बुर्जों पर तोपें लगवाईं। झाँसी के विभिन्न दरवाजों की सुरक्षा का भार भिन्न-भिन्न पदाधिकारियों को सौंपा गया।

मोरोपन्त, दूल्हाजीसिंह, परदेशी, कई राज्य प्रेमी मुख्य दरवाजों के

रक्षक नियुक्त किए गए। संकटकालीन परिस्थिति के लिए रानी लक्ष्मी-बाई ने आवश्यक सेना भी तैयार कर ली।

दामोदरराव रानी के प्रेम और शिक्षा को लेकर बड़ा हो रहा था। रानी लक्ष्मीबाई को वह उदास नहीं देख सकता था। जब भी राज्य कार्य से महारानी लक्ष्मीबाई को अवकाश मिलता, वह दामोदरराव के साथ बाकी समय व्यतीत करती थीं।

उनकी इच्छा थी, दामोदरराव बड़ा होकर ऐसा शूरवीर, प्रजा-पालक, योग्य शासक बने कि जनता युग-युगों तक उसका गुण-ज्ञान करे।

२१

महारानी लक्ष्मीबाई अपनी प्रजा के सुख के लिए अनेक प्रकार की योजनाएँ तैयार कर रही थीं। सुरक्षा के लिए पुलिस और सैनिक, रात-दिन के लिए पृथक-पृथक रखे गए थे।

किसानों पर कर नहीं लगाया जाता था। यदि वर्षा न होने के कारण, समय पर अन्न निर्वाह योग्य नहीं हुआ, तब रानी उनकी अन्न, धन से सहायता करती, वह किसी को दुखी नहीं देखना चाहती थी।

रानी प्रतिदिन एक समय घोड़ा दौड़ा कर अपना अभ्यास कर रही थीं। एक दिन घोड़ा दौड़ाते वह उस ओर निकल गई, जिस ओर निर्धन मनुष्य रहते थे।

सर्दी की ऋतु थी। कड़ाके की ठण्ड पड़ रही थी। उसने देखा आग के चारों ओर सर्दी से काँपते-ठिठुरते स्त्री, बच्चे, पुरुष बैठे हुए अपने शरीर को गर्माई पहुँचाने का यत्न कर रहे हैं।

उन निर्धन मनुष्यों के पास अच्छी तरह शरीर ढँकने के लिए वस्त्र भी नहीं थे। उनकी दशा देखकर रानी की आँखों में आँसू छलछला आए, वह वापिस ही किले में पहुँच गई।

और सुन्दर-मुन्दर को बुलाकर दर्जी से वस्त्र सिलवाने का आदेश दिया। रात दिन परिश्रम करके दर्जियों से बहुत सारी रुई की कुरती

(सदरी) पजामे बनवाए, धोतियाँ मँगवाईं और रानी ने उन निर्धन मनुष्यों को बुलाकर अपने हाथ से उन्हें वस्त्र दिए।

वस्त्र पहनकर रानी लक्ष्मीबाई का जय-जयकार करते निर्धन व भिखारी चले गए।

महारानी लक्ष्मीबाई प्रतिदिन व्यायाम भी करती थीं। घोड़े पर बैठकर घोड़ा दौड़ाना, खाई खन्दकों को घोड़ा दौड़ाते हुए पार करना, यह उनका प्रतिदिन का कार्यक्रम था।

कभी-कभी हाथी पर बैठकर भी भ्रमण को जाती थीं। सैर करके वापिस आती और थोड़ी देर आराम करके गरम जल से स्नान करती, फिर चन्देरी के स्वच्छ सफेद वस्त्र पहनती।

पवित्र भस्म लगाती, तुलसी की पूजा करती, उसी समय गायक धार्मिक भजन सुनाते थे। पौराणिक पुराण सुनाते थे। रानी लक्ष्मीबाई का चारों ओर ध्यान रहता था। एक सौ पचास मुजरा करने वाले आते थे। यदि किसी दिन मुजरा करने वालों में से कोई नहीं आता, तब वह अपने कर्मचारियों से पूछती, 'आज वह मनुष्य क्यों नहीं आया?'

दोपहर बारह बजे तक रानी पूजा पाठ, धार्मिक ग्रन्थों के श्रवण पठन के कार्यक्रम समाप्त करके भोजन करती थीं। फिर थोड़ी देर विश्राम करतीं। महारानी के लिए जो नजराने (भेंट) आते थे? उनको चाँदी के थालों में सजाकर रेशमी वस्त्रों से ढँककर रानी के सेवक कर्मचारी इस समय महारानी लक्ष्मीबाई के सामने लाकर रख देते थे।

रानी उन्हें खोलकर देखती, जो वस्तुएँ पसन्द आ जातीं, उन्हें रख लेतीं। बाकी अपने सेवक कर्मचारियों में बाँट देतीं।

तीन बजे महारानी लक्ष्मीबाई की कचहरी का समय हो जाता था। उस समय वह पुरुषों जैसे वस्त्र धारण करती। अँगरखा, पजामा पहनतीं, टोपी पहनकर उस पर साफा बाँधती, कमर में जरी का दुपट्टा बाँधती थीं।

उसमें हीरे-पन्ने जड़ी मूठ की तलवार लटकती रहती थी। रानी कभी-कभी स्त्री वेश में भी दरबार में जातीं थीं। तब सफेद रेशमी साड़ी और चोली पहनतीं थीं। हाथ में कड़े, गले में मोती की लड़, अँगुली में

हीरे जड़ी अँगूठी पहनतीं थीं। बालों का जूड़ा बाँध लेती थीं।

महारानी इस वेश में साक्षात गौरी दिखाई देतीं थीं। एक खुले कमरे में जिसके द्वार पर एक सुनहरी मेहराब थी, वहाँ रानी साहिबा का दरबार लगता था।

कमरे में गद्दे बिछाकर चान्दनी (चादर) बिछा दी जाती थी। उस पर तकिए लगा दिए जाते थे। तकिए के सहारे महारानी लक्ष्मीबाई बैठतीं थीं। दरवाजे के बाहर दो पहरेदार चाँदी के दण्ड लिए खड़े रहते थे।

दीवान लक्ष्मणराव, आवश्यक कागजात लेकर सामने खड़े हो जाते थे। कुछ दूर पर सलाहकार कर्मचारी बैठे रहते थे। दीवानी, फौजदारी, मुल्की सभी मुकदमों की सुनवाई होती थी।

उनकी बुद्धि इतनी तेज थी कि मुकदमा सुनते ही तुरन्त ही उसका निर्णय दे देतीं थीं। पढ़ी लिखी गुणवती थीं। मुकदमे का निर्णय स्वयं लिखकर देतीं। और मुकदमे में जो दोषी पाया जाता, उसे दण्ड की आज्ञा लिखकर देतीं।

दोषी को कठोर दण्ड दिया जाता था। निर्दोष यदि निर्धन हुआ तो उसे धन की सहायता दी जाती। महारानी लल्मीबाई दयालु थीं। पर दयालु होते हुए भी अपराधी को क्षमा नहीं करती थीं।

रानी का गुप्तचर विभाग भी था। बाहर के राज्यों की सूचना के साथ विश्वासघातियों के कार्यों की भी सूचना रानी लक्ष्मीबाई को मिलती रहती थी। उन्हें समाचार मिल रहे थे। क्रान्तिकारी अँग्रेजों से युद्ध करने की तैयारी करते हैं, बीच में विश्वासघाती रुपये और राज्य के लोभ में अँग्रेजों के हाथ की कठपुतली बनकर हमारी क्राँति योजना तो विफल कर ही रहे हैं, अपने देश प्रेमी भाइयों के विरुद्ध अँग्रेजों को सहयोग देकर उनके विनाश का कारण भी बन रहे हैं।

रानी लक्ष्मीबाई विश्वासघातियों के प्रति क्रोध में भर जाती, पर वह अँग्रेज अधिकारियों की शक्ति के बल पर यह कार्य कर रहे हैं, यह ज्ञात होने पर मन-ही-मन छटपटा कर रह जातीं।

क्रान्ति की ज्वाला उत्तरी भारत में फैल चुकी थी। मेरठ, दिल्ली में जो क्रान्ति का बिगुल बजा था, उसकी ध्वनि सारे उत्तरी भारत में गूँज

उठी थी। दिल्ली के लाल किले पर क्रांति का हरा झंडा फहराने लगा था।

बहादुरशाह देश के सम्राट घोषित कर दिए गए थे। पर प्रत्येक स्थान पर घर के भेदी विश्वासघाती, अँग्रेजों से मिलकर योजना विफल कराने का यत्न कर रहे थे।

विश्वासघातियों द्वारा देश को जो हानि पहुँच रही थी, उसके समाचार सुनकर महारानी लक्ष्मीबाई ने चुपचाप एक धर्म घोषणा पत्र, एक धर्म विज्ञापन बहादुरी प्रेस से छपवा कर बँटवाया (बरेली नगर के सैयद कुतुब शाह द्वारा बहादुर प्रेस से) धर्म विज्ञापन नगर-नगर में सूचनाधिकारियों द्वारा पहुँचाया गया। उसमें लिखा था, 'ब्रह्मण्ड का स्वामी एक मात्र ईश्वर है। उसकी आज्ञा से विश्व का कार्य चल रहा है।'

'हे राजाओं, प्रतिष्ठित अधिकारियों, ईश्वर करे आप सब धार्मिक, गुणवान, वैभवशाली उदार बनकर दूसरों के धर्म के रक्षक बनें।'

'परमात्मा ने मानव शरीर पुण्य कर्म करने के लिए दिया है। प्रत्येक धर्म में पुण्य कर्मों का दृढ़ता पूर्वक पालन करने का आदेश दिया है। विदेशी भारतीय धर्मों का नाश कर रहे हैं।

उन्होंने पादरियों द्वारा अपनी धार्मिक पुस्तकें छपवा कर बाँटी हैं। और हमारे उन धर्म ग्रन्थों को नष्ट कर दिया गया, जिनमें इन के मत का खण्डन किया गया था।

भारतीय सेना के ब्राह्मणों तथा अन्य मत के सैनिकों को आज्ञा दी गई।

अपने दाँतों से चरबी लगे कारतूसों को काटें। सैनिकों के इन्कार करने पर उन्हें गोलियों से भून दिया गया। विरोध करने पर सैनिकों को सेना से निकाल दिया गया।

गौ हत्या बन्द कराने के लिए हिन्दुओं ने प्रार्थना की, उनसे अपमान-जनक व्यवहार किया गया।

हमारे राज्य बिना किसी कारण के व्यर्थ के बहाने करके जब्त कर लिए गए। राज्य कोष खाली कर दिए गए।

सैनिकों को हिन्दुस्तानियों को 'यूकाले डेम', कहकर गोरे सैनिक

अपमानित करके उन्हें ठोकर मारते हैं। और हम अपने ही देश में, विदेशियों द्वारा अपमान सहन कर रहे हैं।

हमारी धार्मिक रीतियों पर कुठाराघात हो रहा है। और हम चुपचाप आँखें मींचकर सब सहन कर रहे हैं।

क्या हमारे पूर्वजों का रक्त हम में नहीं रहा, जो कायरता अपना कर दूसरों का मुँह ताक रहे हैं।

याद रखो, समय रहते नहीं चेते, तो धन दौलत राज पाट के साथ हमारा धर्म भी नष्ट हो जाएगा। तब आने वाली सन्तति हमें किस रूप में याद करोगी।

यह याद करके रौंगटे खड़ हो जाते हैं। अब भी समय है सब एक होकर विदेशी शासन के विरुद्ध कमर कसकर तैयार हो जाओ। अपनों से विश्वासघात करके अपने पाँवों पर स्वयं कुल्हाड़ी मत मारो।

यह समय है विदेशी शत्रु से अपना अधिकार बलपूर्वक ले लो, फिर तो हाथ मल कर पछताने के सिवाय कुछ भी न मिलेगा। हिन्दुओं को गंगा, तुलसी, शालिग्राम उनके इष्ट की शपथ दिलाकर प्रार्थना करती हूँ।

धर्म, राज्य संकट में है, आगे बढ़कर सहायता करें। मुसलमानों को अल्लाह, कुरान की शपथ दिलाकर प्रार्थना करती हूँ। ईमान को बचाने, ईमान की रक्षा के लिए सभी मिलकर हमारी सहायता करें। यह घोषणा पत्र आधी भेंट समझी जाए।

और तुरन्त ही इसमें लिखी बातों को ध्यान से पढ़कर आगे के बिषय में क्या कार्यक्रम बनेगा, कैसे सहयोग दिया जाएगा, इसका उत्तर तुरन्त ही हमें देने का निर्णय करना।

हम प्रतीक्षा करेंगें। अवसर का उपयोग भली प्रकार करने के समय को व्यर्थ न खो देना।

२२

क्रान्ति की ज्वाला को विकराल रूप धारण करते देखकर भारत के अंग्रेजी शासक भय अनुभव करने लगे थे।

यदि क्रान्ति की ज्वाला को शीघ्र काबू में नहीं किया, तो यह क्रान्ति ज्वाला सारे देश में फैल कर इस देश से अंग्रेजी राज्य को जड़ मूल से नष्ट कर देगी।

यह सोचकर कूटनीतिज्ञ अंग्रेज पदाधिकारियों की सलाह से गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग ने बढ़ती हुई क्रान्ति के कारण आते हुए संकट का सामना करने के लिए उत्तर भारत के अशान्त भाग पर तीन ओर से आक्रमण करने की तैयारी की।

सेनापति एनसन पंजाब के गवर्नर सरजान लारेन्स को उत्तर की ओर से दिल्ली पर आक्रमण करने का भार सौंपा गया।

अनुभवी लार्ड कैनिंग जानता था कि दिल्ली पर जब तक अंग्रेजों का फिर से अधिकार नहीं होता, तब तक उनकी खोई हुई प्रतिष्ठा नहीं मिल सकती।

इस कारण पंजाब के सभी अंग्रेज अधिकारियों को दिल्ली पर शीघ्र ही अधिकार करने का कैनिंग ने आदेश दिया, कर्नल नील को यह आदेश दिया गया कि वह बनारस, प्रयाग, कानपुर पर अपनी सत्ता स्थापित करने के पश्चात अवध के क्रान्तिकारियों पर आक्रमण करके लखनऊ में घिरे हुए अंग्रेजों को घिराव से बाहर निकाले।

रॉबर्ट हेमिल्टन को मध्य भारत में नर्मदा और यमुना नदी के बीच में किए जाने वाले आक्रमण का प्रबन्ध सौंपा गया था।

रॉबर्ट हेमिल्टन, मध्य भारत में कई वर्ष रह चुका था। यहां की परिस्थितियों का उसे बहुत ज्ञान था। इन्दौर के राजा तुकोजीराव का रॉबर्ट हेमिल्टन शिक्षक भी रह चुका था।

कलकत्ता आकर उसने लार्ड कैनिंग के आदेशानुसार मध्य भारत पर आक्रमण करने की योजना तैयार कर ली।

इस योजना के अनुसार, एक सेना बम्बई प्रान्त से आकर मऊ को अपना केन्द्र बनाकर, मार्ग में पड़ने वाले विरोधियों के केन्द्रों को नष्ट करती हुई झाँसी पर आक्रमण करने वाली थी। दूसरी सेना मद्रास से चलकर जबलपुर को केन्द्र बनाती हुई, बुन्देलखन्ड होकर बान्दा पहुँचती।

हेमिल्टन योजना का अन्तिम रूप देकर इन्दौर पहुँच गया और

मध्यभारत के पालिटिकल एजेन्ट का पद सम्भाल लिया।

मऊ के केन्द्र से जो सेना यमुना के दक्षिण क्षेत्र में अंग्रेजी सत्ता क पुनः स्थापित करने को भेजी जा रही थी, ह्यू रोज को उसका सेनापति बनाकर भेजा गया।

ह्यू रोज अनुभवी अफसर था। कई युद्धों में उसने सेना की कमान सम्भाल कर, विजय के साथ सम्मान पदक भी लिए थे।

उन्नीस सितम्बर १८५७ ईसवी को जहाज से वह वम्बई आया, और सत्रह दिसम्बर को मऊ पहुँच कर सेना की कमान सम्भाल ली।

और आक्रमण की पूरी तैयारी करके सीहोर पहुँच गया। एक अंग्रेजी सेना उसे यहां मिली, भूपाल की बेगम अंग्रेजों की हितैषी थीं।

उन्होंने अपनी एक सेना ह्यू रोज की सहायता के लिए भेज दी। हेमिल्टन आक्रमण की पूरी तैयारी के समय ह्यू रोज के साथ रहा।

अंग्रेजी सेना ने रहटगढ़ किले पर आक्रमण किया, पहले दोनों सेनाएँ किले के बाहर युद्ध करती रहीं, क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी सेना को एक बार तो छठी का दूध याद दिला दिया। पर अंग्रेजी सेना बहुत थी, क्रान्तिकारियों की सेना थोड़ी थी। अंग्रेजों ने क्रान्तिकारियों को घेरकर आक्रमण किया। क्रान्तिकारी जंगल में जाकर छिप गए।

क्रान्तिकारियों की सेना अवसर देखकर जंगल से निकलती, ह्यू रोज की सेना पर आक्रमण कर जंगल में छुप जाती।

ह्यू रोज क्रान्तिकारियों को पराजित करने के लिए तोपखाने लेकर जंगल में घुस गया।

क्रान्तिकारितों ने जंगल में आग लगा दी। बड़ी कठिनाई से ह्यू रोज की सेना जंगल से निकली। और ह्यू रोज ने रहटगढ़ पर आक्रमण कर दिया।

और वहाँ के क्रान्तिकारियों को पराजित कर रहटगढ़ पर अधिकार कर लिया।

क्रान्तिकारियों की सेना किले के अन्दर चली गई। किला ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ था वह सुरक्षा की दृष्टि से बहुत दृढ़ माना जाता था।

ह्यू रोज ने किले को घेरकर तोपें दागना आरम्भ कर दिया, एक ऊँचे टीले पर तोप जमाई गई, वहाँ से किले पर तोप द्वारा गोले बरसाए जाने लगे।

क्रान्तिकारी वीरता से ह्यू रोज के आक्रमण का उत्तर दे रहे थे। उसी समय वानपुर का राजा मर्दनसिंह अपनी बड़ी भारी सेना लेकर क्रान्तिकारियों की सहायता के लिए आ गया।

क्रान्तिकारी, रहटगढ़ के सैनिक बहुत प्रसन्न हुए···राजा मर्दनसिंह की सेना देश प्रेम के गीत गाती, अपनी स्वतन्त्रता का प्रतीक झंडा फहराती, आगे बढ़ी चली आ रही थी।

ह्यू रोज बहुत बड़ी सेना लेकर अचानक ही वानपुर के सैनिकों पर टूट पड़ा। इस अचानक आक्रमण से वानपुर की सेना घबराकर भाग गई।

रहटगढ़ के क्रान्तिकारी वानपुर की सेना को पराजित होकर वापिस जाते देखकर साहस हार गए। उन्होंने सोचा···इतनी बड़ी अंग्रेजी सेना से अब किले की रक्षा करना असम्भव है, हमें किले को खाली करके चले जाना चाहिए।

रात के अन्धकार में एक पहाड़ी दुर्गम मार्ग से क्रान्तिकारी किला खाली करके चले गए। पहाड़ी मार्ग ऊँचा नीचा बहुत संकटपूर्ण था। पाँव रखना भी कठिन था।

ऐसे दुर्गम मार्ग से स्त्री-पुरुष सभी क्रान्तिकारी आधी रात को ही किला छोड़कर चले गए। एक दो घायल मानव जिनमें चलने की शक्ति नहीं थी। वह विवश होकर वहाँ रह गए।

प्रातःकाल अंग्रेज सैनिकों ने किले को खाली पाया तो वह आश्चर्य से देखते रह गए, इतने दुर्गम मार्ग से इतने सारे स्त्री-पुरुष कैसे चले गए।

ह्यू रोज ने किले पर अपना अधिकार करके अपना यूनियन जैक ध्वज फहरा दिया।

रहटगढ़ से भागकर वानपुर की सेना बडढ़ोदिया गाँव के निकट पहुँच गई। इस गाँव के समीप नदी थी और घना जंगल था। वहीं क्रान्ति-

कारियों ने अपने मोर्चे जमाए।

ह्यू रोज अपनी सेना लेकर वहाँ भी पहुँच गया और क्रान्तिकारियों पर आक्रमण कर दिया। भयंकर युद्ध हुआ। कई अंग्रेज सैनिक युद्ध की भेंट चढ़ गए।

कई क्रान्तिकारियों के वीर शहीद हो गए। क्रान्तिकारी अधिक समय तक अंग्रेजों से लोहा न ले सके। वह भाग कर फिर जंगल में जा छुपे।

अंग्रेजी सेना ने उनका पीछा किया, पर व्यर्थ रहा। कोई क्रान्तिकारी उनके हाथ नहीं आया।

अब अंग्रेजी सेना को युद्ध और रसद सामग्री लाने के लिए कोई छोटा मार्ग सुरक्षित नहीं रहा था। एक लम्बा मार्ग युद्ध और रसद सामग्री लाने के लिए था।

ह्यू रोज ने बडोदिया में लेफ्टिनेंट पेडरगस्ट को एक सेना की टुकड़ी के साथ, युद्ध सामग्री और आवश्यक सामग्री की रक्षा के लिए छोड़ा और स्वयं सागर की ओर चल पड़ा। सागर के किले में अंग्रेजों के दो-सौ स्त्री पुरुष, बालक घिरे हुए थे। क्रान्तिकारी उन पर बाहर से गोलियों की वर्षा करते, अंग्रेज किले के भीतर से क्रान्तिकारियों पर गोली की बौछार करते। गोलियों की लगातार वर्षा के कारण क्रान्तिकारी अभी तक किले के समीप न पहुँच सके थे।

ह्यू रोज किले में घिरे हुए अंग्रेजों को मुक्त कराने आया था। सैनिक दृष्टि से सागर महत्त्वपूर्ण था।

ह्यू रोज के पहुँचते ही क्रान्तिकारी चुपचाप वहाँ से चले गए, ह्यू रोज ने बिना युद्ध के सागर पर अधिकार करके अँग्रेजों को मुक्त करवा लिया और गढ़ाकोटा की ओर चल पड़ा।

गढ़ाकोटा के क्रान्तिकारियों ने बड़ी बीरता से ह्यू रोज से लोहा लिया, पर इतनी बड़ी अँग्रेज सेना का सामना करना सरल नहीं था। सैकड़ों देश प्रेमी मृत्यु की गोद सो गए···।

तब वह चुपचाप गढ़ाकोटा का किला छोड़कर चल दिए, अँग्रेजों ने किले पर अधिकार कर लिया, उन्हें बहुत सी युद्ध सामग्री और तोपें भी गढ़ाकोटा किले से मिलीं।

अँग्रेजों की प्रसन्नता का ठिकाना न था। गढ़ाकोटा के किले पर भी अँग्रेजों का ध्वज फहराने लगा। ह्यू रोज की आँख अब झाँसी पर थी। झाँसी सागर से एक सौ पच्चीस मील थी। बुन्देलखण्ड में प्रवेश करके तब झाँसी पर आक्रमण करने की योजना ह्यू रोज बना रहा था।

एक सौ पच्चीस मील की दूरी पार करना हँसी खेल न था। क्योंकि मार्ग में बहुत बाधाएँ थीं।

अनेक छोटी-छोटी गढ़ियों में देश प्रेमी क्रान्तिकारी अँग्रेजों से लोहा लेने को तैयार बैठे थे। शाहगढ़ बानपुर के राजा अपनी-अपनी सेना लेक र बुन्देलगढ़ के प्रवेश द्वारों की रक्षा कर रहे थे।

नरहटघाट की रक्षा बानपुर नरेश मर्दनसिंह कर रहे थे। मदनपुर की रक्षा का भार, शाहगढ़ के राजा को सौंपा गया था।

ह्यू रोज ने सामने आए संकट को देखकर आवश्यक सामग्री और सैनिक शक्ति एकत्र करनी आरम्भ कर दी।

आटा, अनाज, चाय, भेड़, बकरियाँ, बैल आदि और युद्ध सामग्री एकत्र करके ह्यू रोज आक्रमण के लिए तैयार हो गया।

भोपाल की बेगम ने सेना और सैकड़ों मन अनाज देकर ह्यूरोज की सहायता की। घायल सैनिकों के लिए सागर में हासपिटल खोला गया।

बहुत मात्रा में बारूद तैयार कराई गई। सामान ढोने के लिए हाथी गाड़ियाँ तैयार कराई गईं।

पूर्व योजना के अनुसार ह्यू रोज को सूचना मिली। ह्विटलाक सेना लेकर आगे बढ़ रहा है। वह भी सागर से विशाल सेना लेकर बुन्देलखन्ड की ओर चल पड़ा।

नरहट घाटी पर क्रान्तिकारियों ने दृढ़ मोर्चे बनाकर शत्रु को रोकने की पूरी तैयारी कर रखी थी। चतुर सेनानी ह्यू रोज समझ गया। इधर से सेना का जाना कठिन है।

तब ह्यू रोज अपनी सेना को मदनपुर की घाटी की ओर ले गया। मदनपुर की घाटी दो पहाड़ियों के बीच थी, आस-पास घने जंगल थे।

पहाड़ियों पर तोपें लगाकर क्रान्तिकारी जंगल में छुप गए थे। और अँग्रेज सैनिकों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अँग्रेजी सेना पहाड़ियों पर चढ़ने लगी, तभी ऊँची चोटियों पर रखी तोपें, उन पर गोले बरसाने लगीं। इस युद्ध में अगणित गोरे सैनिक मारे गए।

ह्यू रोज का घोड़ा भी गोली लगने से मर गया। पर ह्यू रोज तो अनुभवी सेनापति था। बहुत से युद्धों में विजय पाई थी, वह घबराया नहीं, और पूरी शक्ति से क्रान्तिकारियों पर आक्रमण कर दिया।

और नरहट घाटी की ओर भी आक्रमण करने के लिए अँग्रेज सेना भेज दी। क्योंकि ह्यू रोज यह समझता था उसे यह भय भी था, कहीं नरहट घाटी की वानपुर के राजा की सेना, मदनपुर घाटी में शाहगढ़ के राजा की सहायता को न आ जाए।

यदि दोनों सेनाएँ एकत्र हो गई, तब इनसे युद्ध में विजय पाना कठिन होगा।

मदनपुर की घाटी में ह्यू रोज के सैनिकों से क्रान्तिकारियों ने लोहा लिया। घमासान युद्ध हुआ। पर क्रान्तिकारियों के पाँव उनके सामने जम न सके, वह मदनपुर गाँव चले गए।

ह्यू रोज ने गाँव में गोले बरसाने आरम्भ कर दिए।

गांव वालों की हानि होती देखकर क्रान्तिकारी जंगल में घुसे, अँग्रेजी सेना ने वहाँ उनका पीछा किया।

सराय के समीप दोनों सेनाओं का भयानक युद्ध हुआ। क्रान्तिकारी पराजित होकर वहाँ से चले गए।

२३

सराय के किले पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। उस किले पर भी अंग्रेजों का ध्वज फहराने लगा। क्रान्तिकाकारी वहाँ से चले गए थे।

शाहगढ़ में अंग्रेजों का सामना करने वाला कोई नहीं रहा, रावर्ट

हेमिल्टन ने शाहगढ़ पर अधिकार करके यूनियन जैक फहरा दिया।

शाहगढ़ का राजा किसी प्रकार छिप कर वहाँ से चला गया था। उसके सहयोगी अंग्रेजों के हाथ बन्दी बनाए गए, और विद्रोह का आरोप लगाकर उन्हें फाँसी दे दी गई। नागरिक भय से काँपने लगे।

अंग्रेज हर्ष में भरकर आनन्द मनाने लगे। बानपुर का राजा नरहट की घाटी से अपने सहयोगियों को लेकर अपनी राजधानी बानपुर पहुँच चुका था। उसने अंग्रेजों के शाहगढ़ पर अधिकार की सूचना सुन ली थी।

उसे विशेष गुप्तचरों द्वारा ज्ञात हो चुका था। ह्यूरोज बड़ी भारी सेना लेकर शीघ्र ही बानपुर पहुँचने वाला है।

बहुत सोच विचार कर बानपुर के राजा ने अपने नागरिकों को आज्ञा दी, तुरन्त ही अपने परिवार, धन-सम्पत्ति लेकर सुरक्षित स्थानों पर चले जाओ।

बागीचे, खेत सब उजाड़ दो, ताकि शत्रु को पशुओं के लिए भी चारा न मिले। नागरिक राजा का आदेश सुनते ही अपने परिवार धन सम्पत्ति लेकर दूसरे नगरों में चले गए।

बानपुर का राजा अपनी बची सेना, धन सम्पत्ति परिवार के साथ झाँसी पहुँचा। रानी लक्ष्मीबाई बानपुर नरेश की धर्म बहन बनी हुई थीं।

उन्होंने बड़े प्रेम व आदर से अपने धर्म भाई बानपुर नरेश को महलों में ठहराया और खाने-पीने की व्यवस्था की।

ह्यूरोज अपनी सेना सहित बानपुर पहुँच गया। पर वहाँ तो श्मशान सा सन्नाटा छाया हुआ था।

खेत बगीचे उजड़े पड़े थे, कहीं हरियाली का नाम नहीं था। अंग्रेज सैनिकों ने क्रोध में भरकर तोपों से राजा बानपुर के महल में आग लगा दी।

महल से ऊँची-ऊँची लपटें उठकर चारों ओर उजाला फैलाने लगीं। तब अंग्रेज सैनिक हर्ष में भरकर उसके प्रकाश में विजय उत्सव मनाकर नाचने-गाने लगे।

सारी रात वह नाच गाकर विजय उत्सव मनाते रहे। अपने राजा

के महल की दुर्दशा देखकक दूर खड़े गुप्तचर आठ-आठ आँसू रोते रहे।

तालवेहट का किला भी अँग्रेजों की आँखों में खटकने लगा, वहाँ के थोड़े से सैनिक रक्षकों से युद्ध कर तालवेहट के किले पर भी अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया।

ऐसा लगता था, विजयलक्ष्मी अंग्रेज शासकों को ही वरमाला पहना कर प्रसन्न हो रही है।

वह विजयी होकर और आगे बढ़े जा रहे थे। चन्देरी का किला अब उनकी दृष्टि में समा गया था, और उसको लेने के लिए अब उन्होंने चुप-चाप तैयारी आरम्भ कर दी थी।

चन्देरी का किला मध्य भारत के किले में सबसे दृढ़ गिना जाता था। आस-पास के देश प्रेमी क्रान्तिकारी यहीं एकत्र हो रहे थे।

मदनपुर की घाटी से पराजित होकर बहुत से क्रान्तिकारी चन्देरी आ गए थे। इस समय चन्देरी मध्य भारत का क्रान्तिकारी केन्द्र बना हुआ था।

क्रान्तिकारियों ने मार्ग में गड्ढे खोद कर पेड़ों की बड़ी-बड़ी शाखाएँ बिछा दी थीं। जिससे अंग्रेजी सेना न बढ़ सके।

ब्रिगेडियर स्टुअर्ट को चन्देरी विजय का कार्य सौंपा गया था।

मऊ छावनी से गुना होते हुए मेजर कीटिंग्ज के साथ ब्रिगेडियर स्टुअर्ट चन्देरी आ पहुँचा।

उसने देखा, मार्ग में बड़े-बड़े गड्ढे खोदकर बड़े-बड़े वृक्षों की टहनियाँ बिछाकर मार्ग रोक दिया गया है।

तब उसने अपने सैनिकों को मार्ग साफ करने की आज्ञा दी। आज्ञा मिलते ही सैनिकों ने मार्ग साफ कर दिया, और आगे बढ़ने लगे।

क्रान्तिकारियों ने पहाड़ी पर मोर्चे बनाए हुए थे। अंग्रेज सैनिकों के आते ही उन्होंने तोपों से गोले बरसाने आरम्भ कर दिए।

अंग्रेज सैनिकों ने भी उसका उत्तर दिया। भयंकर युद्ध हुआ। सैकड़ों सैनिक मृत्यु की गोद सो गए। क्रान्तिकारी पीछे हटने लगे।

क्रान्तिकारियों के पीछे हटते ही अंग्रेज सैनिकों ने किले को चारों ओर से घेर लिया। तीन दिन लगातार दोनों सेनाएँ एक दूसरे पर गोले

बरसाती रहीं।

अन्त में किले की सुरक्षा दीवार का एक भाग अंग्रेजों की तोप ने उड़ा दिया। कीटिंग्ज ने अच्छा अवसर समझा, इस समय यदि दरार से सैनिक किले के अन्दर घुस जाएँ, तो सफलता मिल जाएगी।

जान हथेली पर लेकर कीटिंग्ज, क्रान्तिकारियों के आक्रमण का उत्तर देता हुआ, अपने सहायकों सहित किले की दीवार के टूटे भाग से अन्दर घुस गया।

क्रान्तिकारियों ने भी उससे जान की बाजी लगाकर लोहा लिया। पर भाग्य ने साथ नहीं दिया, क्रान्तिकारी यहाँ भी पराजित हो गए।

सैकड़ों देश प्रेमियों का बलिदान अकारथ गया, अंग्रेजों का चँदेरी पर भी अधिकार हो गया। ह्यू रोज प्रसन्नता से फूला न समाया, विजयश्री उसे ही विजयमाला पहना रही थी।

क्रान्तिकारियों की स्थान-स्थान पर पराजय देख ह्यू रोज अब झाँसी पर आक्रमण की तैयारी करने लगा।

कानपुर के युद्ध में नानासाहब, तात्या टोपे और कई क्रान्तिकारी असफल होकर, इधर-उधर शक्ति एकत्र करने चले गए थे।

नानासाहब ने गंगा पार करके अवध में निवास किया था। फतेहपुर चौरासी को नाना साहब ने इस समय कार्य-केन्द्र बनाया था। तात्याटोपे अपने साथियों सहित यमुना पार करके काल्पी पहुँचा, और उस पर अधिकार करके वहाँ रहने लगा।

बुन्देलखण्ड में चरखारी नामक एक छोटी-सी रियासत थी, वह झाँसी से ६५ मील दूर थी। रतनसिंह नामक अंग्रेजों का हितैषी राजा यहाँ राज्य करता था।

उसकी प्रजा भी क्रान्ति विरोधी थी। जब तात्याटोपे ने काल्पी विजय कर ली, तब राजा रतनसिंह घबराया और मन में अंग्रेजों के प्रति श्रद्धा होते हुए भी वह तात्याटोपे से मित्रता करनें को तैयार हो गया।

तात्याटोपे ने रतनसिंह पर विश्वास नहीं किया और उस पर आक्रमण की तैयारी करने लगा। राजा रतनसिंह ने अंग्रेजों से सहायता माँगी,

पर वह अपने उच्च सेनापति के आदेश को मान कर झाँसी पर आक्रमण की तैयारी कर रहे थे।

चरखारी रियासत को सहायता देने के लिए उनके पास समय नहीं था। उसे उनसे निराश ही मिली।

रानी झाँसी ने सुना, ह्यू रोज बड़ी भारी सेना लेकर झाँसी की ओर बढ़ा चला आ रहा है। तब उसने भी युद्ध की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

रानी लक्ष्मीबाई ने धर्म-घोषण पत्र प्रत्येक राजा नवाब के पास भेज दिया था और उनसे सहायता भी माँगी थी। कई राजा सहयोग देने को तैयार थे।

पर झाँसी राज्य में ही ऐसे देश-द्रोही, विश्वासघाती कर्मचारी थे, जो राज्य की सूचना, चुपचाप अंग्रेजों को भेज रहे थे और अपना पक्ष निर्बल कर रहे थे।

रानी समझती थी, इस संकट-काल में एकता की बहुत आवश्यकता है। वह अंग्रेजों से भी उस समय विरोध नहीं कर रही थी।

पर अपने देश की रक्षा के लिए क्रान्तिकारियों को समय-समय पर सहयोग दे रही थी। मुगलवंश का शाहजादा फीरोजशाह महान क्रान्ति-कारी नेता मन्दसौर (मध्यभारत) से झाँसी आया, तब रानी लक्ष्मीबाई ने उनका हार्दिक स्वागत किया।

अस्त्र-शस्त्रादि से भी शहजादे को सहायता दी। अंग्रेजों से भी वह शत्रुता नहीं रखना चाहती थी। उनसे समय-समय पर पत्र-व्यवहार करती रहती थी।

कई क्रान्तिकारी रानी लक्ष्मीबाई से इसी कारण असन्तुष्ट थे। रानी अंग्रेजों से मेल रखे हुए है।

विद्रोही सिपाहियों के नेता रिसालदार हसनअली और क्रातिन्कारी सेना के कई अधिकारी रानी के कर्मचारियों से मिले।

उन्होंने उससे कहा, 'यदि रानीजी अंग्रेजों से समझौता करना चाहती हैं, तो हमें वेतन देकर सेवा से छुट्टी दें, हम तो रानी जी के पास इस कारण कार्य करने आए थे कि रानी जी क्रान्तिकारियों को सहयोग देंगी।'

रानी ने सभी क्रान्तिकारी देश प्रेमियों को विश्वास दिलाया, 'अंग्रेज हमारे शत्रु हैं, हम उनसे लोहा लेने में आपको अवश्य सहयोग देंगे !'

'झाँसी देश-प्रेमियों के साथ है।' रानी लक्ष्मीबाई ने सैनिक अधिकारियों को बुलाकर समझाया, 'हमारा उद्देश्य इस समय स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों से युद्ध करना है।'

'''यदि किसी सेना अधिकारी को इसमें आपत्ति हो तो वह झांसी से जा सकता है।'

रानी लक्ष्मीबाई ने रावसाहब को भी एक पत्र लिखा, 'आप अंग्रेजों से बाहर से युद्ध करें, हम भीतर रहकर उन पर आक्रमण करेंगे।'

राव साहब ने रानी लक्ष्मीबाई के पत्र का उत्तर देते हुए लिखा था, 'आप चिन्ता न करें, हम आपको सहयोग देंगे। अंग्रेजों से लोहा लेने की हम भी तैयारी कर रहे हैं।'

रानी के गुप्तचर इधर-उधर घूमते हुए अंग्रेजों की और युद्ध की तैयारी और क्रान्तिकारियों का उनसे लोहा लेने का प्रयत्न, सभी समाचार रानी के गुप्तचर रानी को आकर सुनाते थे।

एक दिन रानी लक्ष्मीबाई को गुप्तचरों ने सूचना दी, अंग्रेजी सेना युद्ध की बड़ी भारी तैयारी करके झाँसी की ओर बढ़ी चली आ रही है। थोड़े समय में ही वह झाँसी के समीप पहुँच जाएगी।

रानी लक्ष्मीबाई को पता था, अंग्रेजों की आँखों में स्वतन्त्र झाँसी खटक रही है, वह अवश्य इस पर आक्रमण करके, अपने अधीन करना चाहेंगे।

यह सोचकर रानी ने युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दी। किले की मरम्मत करवा कर उस पर तोपें लगवाई गईं। अधिक मात्रा में बारूद बनवा कर गोले गोलियाँ तैयार कराई गईं।

सेना को टुकड़ियों में बाँटा गया, और उनके युद्ध करने के स्थान नियत कर दिए गए। नगर के विभिन्न दरवाजों की रक्षा का भार विश्वासपात्र पदाधिकारियों को सौंपा गया।

भोजन-सामग्री और युद्ध सामग्री बहुत मात्रा में संग्रह कर ली गई।

रानी ने समझ लिया था, अंग्रेजों की स्थान-स्थान पर विजय ने उनका उत्साह दोगुना कर दिया है।

वह किला अधिक दिन घेरे रह सकते हैं, जब तक हम उनसे हार न मान लें। इस कारण वह खाने-पीने की सामग्री का अधिक से अधिक भण्डार संग्रह कर रही थी।

क्रान्तिकारियों की प्रत्येक स्थान पर पराजय ने उनका साहस न्यून कर दिया था। मन में कभी-कभी निराशा के बादल घिर कर मन में उदासी भर देते थे।

पर स्वतन्त्रता के दीवाने कब किसी संकट से हार मानकर बैठने वाले थे। उनका धन, मान छिन चुका था।

सुख-चैन क्रान्ति की ज्वाला की भेंट चढ़ चुके थे। पर फिर भी वह स्वतन्त्रता प्रेमी काँटों के पथ पर चलते हुए स्वतन्त्रता देवी को अपने प्राणों की भेंट चढ़ाने को तैयार थे।

२४

रानी लक्ष्मीबाई किले में युद्ध सामग्री और खाने-पीने की सामग्री का प्रबन्ध करवा कर, अपनी सैन्य शक्ति की देखभाल कर रही थीं।

उसी समय गुप्तचर घोड़ा दौड़ाता शीघ्रता से रानी के पास आया, उन्हें झुककर अभिवादन (प्रणाम) करते हुए उसने सूचना दी, 'रानी साहिबा ! अंग्रेजी सेना बुन्देलखण्ड पर अपना अधिकार करके अपना ध्वज फहराती हुई झाँसी से डेढ़ कोस पश्चिम की ओर आ चुकी है। डेरे तम्बू लगाए जा चुके हैं। ह्यू रोज अपनी सेना की कमान सम्भाले हुए है।'

'मेरे सभी सेना अधिकारियों को इधर आने की सूचना दे दी जाए।' रानी लक्ष्मीबाई ने अपने कर्मचारी को आज्ञा दी, 'उन्हें लेकर हमारे अतिथिग्रह में पहुँचो।'

उसी समय एक और दूत सूचना लाया। सेनानायक ह्यू रोज ने आपके नाम पत्र दिया है। वह पत्र दीवान जी के पास पहुँच चुका है।

'दीवान जी से कहो पत्र लेकर तुरंत ही हमसे मिलें' रानी लक्ष्मीबाई ने दूत को आदेश दिया। वह तुरंत ही दीवान जी को लेकर रानी लक्ष्मीबाई के समीप पहुँचा।

दीवान जी पत्र लेकर रानी लक्ष्मीबाई के महल में पहुँचे और रानी को झुक कर अभिवादन किया। रानी लक्ष्मीबाई ने अभिवादन का उत्तर देते हुए दीवान जी को पत्र पढ़कर सुनाने का आदेश दिया।

दीवान जी ने सेनानायक ह्यू रोज का पत्र रानी लक्ष्मीबाई को पढ़कर सुनाया, उसमें लिखा था—

'रानी साहिबा ! हमें आपसे कई विशेष बातें तय करनी हैं। आप बिना अस्त्र के अपने सहयोगी दीवानजी (लक्ष्मण) लालूबख्शी, मोरोपन्त ताम्बे, आदि विशेष आठ व्यक्तियों के साथ दो दिन के अन्दर इसी समय हमसे मिलने आएँ। साथ में इन आठ व्यक्तियों के अतिरिक्त किसी व्यक्ति को न लाएँ, दो दिन के अन्दर यदि आप हमसे नहीं मिलीं, तब फिर मिलने का कष्ट न करें।'

रानी लक्ष्मीबाई ने सोचते हुए पत्र का उत्तर दिया। रानी अपने राजनीतिज्ञ चतुर राज्य कर्मचारियों से सलाह कर चुकी थी। ह्यू रोज की कूटनीतिक चाल को भी रानी समझ चुकी थीं।

सम्भव है उसने कोई ऐसी योजना बनाई हो, हमारे वहाँ पहुँचते ही, वह हमें बन्दी बना ले, सोच-विचार कर रानी ने ह्यू रोज को यह पत्र भिजवाया।

'आपने भेंट के लिए हमें क्यों बुलाया, पत्र में यह खुलासा नहीं लिखा है। मैं स्त्री हूँ, इस समय तुम्हारे कैम्प में आना मैं उचित नहीं समझती।

मेरे दीवान लक्ष्मणजी, रियासत की रीति के अनुसार हथियारबन्द सैनिकों के साथ आपसे भेंट करने आएँगे। आपने जो बात करनी है खुलासा रूप में उनसे कर लीजिए।'

ह्यू रोज ने रानी को अपनी छावनी में किसलिए बुलाया था। चतुर रानी ह्यू रोज की कूटनीति समझ चुकी थी।

ह्यू रोज के दुःसाहसपूर्ण पत्र ने, रानी के आत्मगौरवपूर्ण उत्तर ने, रानी के सहयोगियों को युद्ध के लिए पूर्णरूप से तैयार कर लिया था।

युद्ध के लिए पूर्ण रूप से किले में पहले ही तैयारी हो रही थी, अब और जोर से सारी शक्ति लगा कर तैयारी होने लगी।

झाँसी के किले को प्रकृति और मानवकारी गरी ने सुदृढ़ और दुर्जेय बना दिया था।

किला ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ था। उसके चारों ओर समतल मैदान था। किले के चारों ओर दृढ़ कोट था। जिसकी मोटाई सोलह से बीस फुट तक थी।

कोट के चारों ओर बड़े-बड़े बुर्ज बने थे, जिन पर तोप रखने के स्थान थे। किले का सबसे बड़ा बुर्ज गरगज कहलाता था। इसकी ऊँचाई साठ से बासठ फुट तक की थी। बीस फुट लम्बा बीस फुट चौड़ा था।

इसके चारों ओर बड़ी-बड़ी तोपें लगी हुई थीं। किले की सुरक्षा दीवार पर इक्यावन (५१) तोपें लगी हुई थीं।

प्रसिद्ध तोपें कड़क बिजली, भवानी शंकर, घनगर्जन, नालदार आदि थीं। जिनकी भयानक आवाज शत्रुओं के हृदय दहला देती थी।

दीवारों पर गोलियाँ चलाने के लिए छेद बने हुए थे। कहीं-कहीं इन छेदों की पाँच-पाँच छः-छः कतारे बनी हुई थीं। किले के चारों ओर पानी से भरी गहरी खाइयाँ थीं। यह इतनी गहरी और चौड़ी थीं कि इन्हें पार कर किले की दीवार तक पहुँचना बहुत कठिन था।

किले में रानी का सुन्दर महल सरदारों के भवन और प्राचीन कुँआ था।

किले के दक्षिणी पश्चिमी भाग को छोड़कर बाकी सब ओर झाँसी नगर बसा हुआ था। नगर के चारों ओर सोलह से बीस फुट तक मोटी और तीस फुट ऊँची दीवार थी।

नगर की दीवार के बाहर पूर्व की ओर तालाब था। पूर्व और दक्षिण के भागों को छोड़कर बाकी स्थान घने जंगल से घिरा हुआ था। तालाब से कुछ दूर एक महल बना हुआ था।

दक्षिण की ओर छावनी, उससे थोड़ी दूर मन्दिर और जोखनबाग था। जहाँ बड़ा भारी नर-संहार हुआ था।

ह्यूरोज दो बजे रात को ही चंचलपुर से चल पड़ा था, और चार

बजे दिन छिपने से पहले झाँसी से डेढ़ मील दूर पहुँच गया था।

उसकी सेना ने डेरे तम्बू लगाकर विश्राम की तैयारी कर ली थी। समीप ही दस माह पूर्व जो घटना हुई थी, अंग्रेजों के टूटे बंगलों के खण्डहर उस भयानक घटना की याद दिला रहे थे।

अंग्रेजी सेना झाँसी के समीप पहुँच गई। सुनते ही क्रान्तिकारी उत्साह में भर कर उनसे लोहा लेने की तैयारी करने लगे।

रानी लक्ष्मीबाई के आदेश से आस-पास की भूमि को उजाड़ दिया गया था। कहीं घास का नाम-निशान भी न था।

घोड़े घास के बिना, और सैनिक खाने की सामग्री के बिना व्याकुल हो रहे थे। रानी लक्ष्मीबाई के सहयोगी सोच रहे थे अब अंग्रेज सैनिकों के पराजित होने में कोई सन्देह नहीं है।

पर तभी देश-द्रोही सिंधिया, टेहरी के राजाओं ने अंग्रेजों के लिए घास भूसे का प्रबन्ध किया।

टीकमगढ़ के राजा, अंग्रेजों की हितैषी भोपाल की बेगम ने खाने-पीने की सामग्री-अनाज, घास, लकड़ी और आवश्यक सामग्री भेज कर उनकी सहायता की।

ह्यू रोज मन-ही-मन प्रसन्न था। वह समझ चुका था कि भारतीयों की आपस की फूट ने सदैव विदेशी को विजय दिलाई है। अब भी यही आपस की फूट हमें विजयी बनायेगी।

ह्यू रोज ने निश्चिन्तता से अपने सैनिकों को आक्रमण स्थल पर नियुक्त कर दिया। जहाँ पर ह्यू रोज ने अपनी छावनी बनाई थी उसकी सुरक्षा के लिए रास्ते में गड्ढे खुदवा दिए।

खाइयाँ बनाकर ढक दी गईं एक ऊँची पहाड़ी पर सैनिक निरीक्षकों का अड्डा बनवा दिया। ताकि वह दूर से ही क्रान्तिकारी सैनिकों के कार्यों पर दृष्टि रख कर अपने सेनापति को उसकी सूचना देते रहें।

शक्तिशाली दूरबीनें ऊँची पहाड़ियों पर लगवा दी गईं। तारघर स्थापित कर, चारों ओर से मोरचों पर तार फैलाए गए। ताकि सूचना आदेश, शीघ्र पहुँच सकें।

किले में बाहर से कोई आवश्यक सामग्री न जा सके, ह्यू रोज ने

उसके लिए किले के चारों ओर घुड़सवार सेना के सात अड्डे स्थापित कर दिए।

ह्यू रोज के सैनिक घुड़सवार किले के चारों ओर गश्त लगाते रहते थे और किसी मनुष्य को किले के भीतर नहीं जाने देते थे।

धीरे धीरे अंग्रेजी सेना ने किले का घिराव करके मोरचा बनाना आरम्भ कर दिया।

झाँसी के सैनिकों ने अंग्रेजी सैनिकों को मोरचा बनाते देखा, तब किले के बुर्ज पर रखी तोपों से गोले बरसाने आरम्भ कर दिए, इससे घबराकर मोर्चा बनाने वाले अंग्रेज सैनिक भागने लगे। देश प्रेमी झाँसी के सैनिक और क्रान्तिकारी देश के दीवाने, देशभक्ति के गीत गाते, उत्साह से शत्रु से लोहा लेने की तैयारी में लगे हुए थे।

युद्ध के बाजे बज रहे थे। अँग्रेजी सेना ने रात के अन्धकार का लाभ उठा कर मोरचा लगाना चाहा। झाँसी के सैनिकों ने तोपों से आग उगल कर समीप मोर्चा नहीं लगाने दिया।

पर थोड़ी दूर पर अंग्रेज सैनिक मोर्चा लगाने में सफल हो गए। रानी लक्ष्मीबाई की घनगर्जन तोप ने वह मोर्चा नष्ट कर डाला।

प्रसिद्ध घनगर्जन तोप अति शीघ्रता से गोला फेंकती थी। जब गोला निशाने पर बैठ जाता तब धुँआ निकलता हुआ दिखाई देता था। अँग्रेज सैनिकों को सावधान होने का अवसर ही नहीं मिल पाता था।

घनगर्जन की अचूक मार से अँग्रेजों के कई मोरचे नष्ट हो गए। तब उन्होंने घबरा कर थोड़ी दूर पर नए मोर्चे बनाए और किले पर गोले बरसाने आरम्भ कर दिए।

कई क्रान्तिकारी तोपची मृत्यु की गोद सो गए, जिससे कई तोपें चलनी बन्द हो गईं। अँग्रेजों की तोपें लगातार आग उगल रहीं थीं। जिससे किले का एक भाग गिर गया।

अँग्रेजों का तोपखाना अब नगर के पश्चिमी भाग पर गोले बरसाने लगा। आरम्भ में तो रानी के तोपची प्रसिद्ध तोपों से शत्रु के आक्रमण का उत्तर देते रहे।

अचानक ही अँग्रेजी तोपों ने उन तोपचियों को भी मृत्यु की गोद

सुला दिया, जिनकी तोपों ने अँग्रेज सैनिकों को गोलों की मार से घबरा दिया था।

किले की तोपें, तोपचियों के मरने से गोले न बरसा सकीं, और अँग्रेज सैनिक किले के समीप मोर्चे लगाने में सफल हो गए।

अँग्रेज सेनापति हेमिल्टन कूटनीतिज्ञ था। वह समझता था जब तक झाँसी के कई वीर प्रभावशाली व्यक्ति अँग्रेजों की सहायता के लिए तैयार नहीं होते, तब तक झाँसी पर विजय पाना कठिन है।

रानी साहसी वीरांगना, बुद्धिमती देश प्रेमी है। उसे अपने कर्मचारियों पर बहुत विश्वास है। कई कर्मचारी छिपे-छिपे अँग्रेजों के हितैषी बन चुके हैं, रानी लक्ष्मीबाई ऐसे विश्वासघातियों को न पहचान सकी।

अँग्रेजों ने उन लालची विश्वासघातियों को लालच देकर अपनी सहायता के लिए तैयार कर लिया।

एक द्रविड ब्राह्मण युद्ध से चार माह पहले झाँसी आया था। मराठी भाषा जानता था। पूजा पाठ करता, सायंकाल को स्नान कर भभूत माथे से लगाकर पूजा समाप्त कर, वह राजनीतिज्ञों, सरदारों से मिलने जाता, उनसे कहता मैं निर्धन ब्राह्मण काशी यात्रा करना चाहता हूँ, कृपा कर आप पुण्य कार्य में धन का दान दें। मैं काशी यात्रा के लिए ही धन एकत्र करने आया हूँ।

पर वह ब्राह्मण विरोधियों का भेदिया बना हुआ था। झाँसी राज्य की राजनीति का भेद देना उसका कार्य था। इधर-उधर झूठी अफवाहें फैलाकर नागरिकों को घबराना यह भी उसका कार्य था।

विशेष राज्य कर्मचारियों ने निर्धन ब्राह्मण जानकर उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह देश द्रोही ब्राह्मण झाँसी राज्य की महत्वपूर्ण सूचना अँग्रेज सेनानायकों को देकर पारितोषिक लेता रहा।

झाँसी राज्य का गुप्तचर विभाग भी उस धूर्त ब्राह्मण के षडयन्त्र को न समझ सका। वह चुपचाप अँग्रेजों को विशेष सूचना देता रहा।

इसका भेद तब खुला था जब झाँसी राज्य पर अँग्रेजों का अधिकार हो गया था और उस ब्राह्मण को अँग्रेज पदाधिकारी ने झाँसी राज्य की बहुमूल्य वस्तुएँ देकर उसका सम्मान किया था।

विरोधियों ने रानी का विश्वासपात्र बनकर रानी लक्ष्मीबाई से विश्वासघात किया। उसका परिणाम उन्होंने रानी की मृत्युके पश्चात् भोगा था।

रानी लक्ष्मीबाई अपने कर्मचारियों पर विश्वास करके युद्ध की तैयारी और गुप्त योजनाएँ बनाती रही।

विश्वासघाती सरदार अँग्रेजों को वह भेद बताकर अपना पक्ष निर्बल बनाते रहे।

बानपुर का राजा अँग्रेजों से पराजित होकर बेतवा के जंगलों में रहता था। वह एक गुप्त समाचार सुनकर रानी लक्ष्मीबाई से मिलने के लिए झाँसी पहुँच गया।

२५

बानपुर के राजा को अपने गुप्तचरों द्वारा यह मालूम हुआ, अँग्रेज कई रियासितों पर अधिकार करके झाँसी पर आक्रमण करने के लिए पहुँच चुके हैं।

तब वह बहुत घबराया, क्योंकि उसने अपना परिवार, धन सम्पत्ति, सैनिक अपनी धर्म बहन लक्ष्मीबाई के पास भेजा हुआ था।

वह थोड़े से सैनिक लेकर झाँसी की ओर चल पड़ा। मार्ग में उसे एक व्यक्ति ने बेनाम पते का एक पत्र दिया। लिफाफे पर सरदार का नाम पता था, पत्र झाँसी से विरोधियों को लिखा था।

उसमें झाँसी राज्य में गड़बड़ी फैलाने की और अँग्रेजों को सहयोग देने की बात लिखी थी। कई गुप्त भेद देने की भी बात लिखी थी।

बानपुर के राजा ने बहुत सोचा, क्या विश्वासघाती सरदार रानी के देश प्रेमियों में मिलकर शत्रु को भेद दे रहा है या उसे सहायता देने का वायदा करके झाँसी राज्य पर आक्रमण के लिए बुला रहा है। बानपुर नरेश की समझ में इस समस्या का समाधान नहीं आया।

वह रानी लक्ष्मीबाई से मिलने के लिए पहुँचा, तब रानी के सुरक्षा

सैनिकों ने उन्हें महल से बाहर ही रोक लिया। रानी के पास जब बानपुर नरेश के पहुँचने की सूचना पहुँची तब उन्होंने तुरन्त ही अपने धर्म भाई को महल में बुलाकर स्वागत करते हुए कुशल समाचार पूछे।

'बहन इस समय कुशल कहाँ, बानपुर नरेश ने चारों ओर देखते हुए कहा, 'तुम्हारे सरदारों में ही कोई सरदार अँग्रेजों को यहाँ की गुप्त सूचना देकर अपनी शक्ति को निर्बल कर रहे हैं। इस पत्र में कैसा षडयन्त्र है देखो···।'

'भाई मेरे सरदारों में ऐसा विश्वासघाती सरदार कोई नहीं है', रानी लक्ष्मीबाई ने बानपुर नरेश की ओर देखते हुए कहा, 'फिर भी सन्देह मिटाने को रात्रि को सब सरदारों को बुलाकर सभा में उनसे शपथ लूँगी।

'जो मनुष्य विश्वासघात करेगा, वह कभी अपना अपराध स्वीकार नहीं करेगा। बाई साहिबा, उन पर विश्वास करना ठीक नहीं, उन पर विश्वास करके आप संकट मोल ले रही हैं।'

बानपुर नरेश ने अपनी धर्म बहन लक्ष्मीबाई को समझाते हुए कहा, 'आप रावसाहब पेशवा को सहायता को लिखें, क्योंकि मेरा तो सारा प्रयत्न निष्फल हो गया। मेरे सहयोगी बार-बार की असफलता से निराश हो चुके हैं।'

'आप निराश न हों। झाँसी के युद्ध में सहयोग दें' रानी झाँसी ने कहा, 'हम पूरी शक्ति बल लगाकर विरोधी से लोहा लेंगे, आप साहस न हारें।'

'आपको पत्र पढ़कर भी विश्वासघाती सरदार पर सन्देह नहीं, तब आप पर अवश्य संकट आने वाला है, मैं अपने परिवार, स्त्री बच्चों को लेकर चला जाऊँगा।

बानपुर नरेश ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'अब मेरे पास भी ऐसा कोई साधन नहीं जो युद्ध में सहयोग दे सकूँ। न रहने का साधन, न ही निर्वाह का साधन, जंगलों में भटक रहा हूँ।'

'आप अपने परिवार को अवश्य ले जाइए, क्योंकि यहाँ तो संकट के बादल चारों ओर से घिरे आ रहे हैं। पर आज रात को और ठहर जाइए।'

रानी लक्ष्मीबाई ने अपने धर्म भाई से अनुरोध किया, 'मैं सरदारों को बुलाकर सभा का आयोजन करती हूँ', कहते हुए रानी लक्ष्मीबाई ने सेवक भेजकर दीवान लक्ष्मणराव को बुलाया और उन्हें प्रमुख सरदारों को बुलाने का आदेश दिया। रानी के आदेशानुसार सेना के प्रमुख सरदार सूबेदार किले के मन्त्रणा कक्ष में आने लगे।

मार्ग से किले के बड़े दरवाजे तक तेज मशालें जल रही थीं। रात अधिक व्यतीत हो चुकी थी। फिर भी सभी सरदार आए और अपने पदानुसार बैठ गए।

बानपुर नरेश रानी लक्ष्मीबाई के सामने बैठ गए। दीवान लक्ष्मण-राव रानी झाँसी के सामने खड़े हो गए।

रानी लक्ष्मीबाई ने चाँदी के थाल में शिव जी की मूर्ति बेलपत्र, भभूति, ब्राह्मण द्वारा मँगवा कर, एक चौकी पर बीच में रखी।

बानपुर नरेश ने वह विश्वासघात का पत्र पढ़ कर सभी सरदारों को सुनाया। रानी लक्ष्मीबाई ने सरदारों की ओर देखते हुए कहा, 'पत्र से आप सबको यह ज्ञात तो हो चुका होगा कि इस समय राज्य में विश्वासघाती उत्पन्न हो गए हैं, जिसके कारण राज्य में संकट आ रहा है, और आएगा। वह विश्वासघाती हमारे बीच ही है, वह कौन है, उसकी आत्मा ही जान सकेगी।'

'हमारे कई हितैषी, झाँसी का किला छोड़ कर कालपी जाने की राय देते हैं, आप सबकी इसमें क्या सम्मति है?'

'यह किला युद्ध के लिए उपयुक्त है, इसे छोड़कर पेशवा की शरण जाना हमें ठीक नहीं लगता।' लालूबक्षी (दूल्हाजीसिंह) भूलासिंह जी कई सरदारों ने एक साथ मिलकर यह प्रस्ताव रखा।

'किसी सरदार के मन में ऐसे संकट के समय देश के प्रति विश्वास-घात की भावना नहीं आनी चाहिए, यदि किसी कारणवश विश्वासघात की भावना उसके मन में आई है, हम उसे क्षमा करके शपथ लेने को कहते हैं। शपथ से हम समझ जाएँगे, उसके मन में विश्वासघात की भावना नहीं रही।'

'प्रजा द्वारा ऐसा पत्र नहीं लिखा जा सकता, लिखने वाला सरदार

है, और सभी सरदार इस समय यहाँ बैठे हैं।'

दीवान लक्ष्मणराव ने चारों ओर देखते हुए कहा, 'यहाँ बैठे हुए सभी सरदार शिवजी की प्रतिमा और बेलपत्र, भभूति पर हाथ रखकर शपथ खाएँगे, उनके मन में राज्य के प्रति कोई कपट भावना नहीं है। 'हम अपने झाँसी के किले में रहकर ही किले की रक्षा करेंगे, हमारे मन में एसी भावना भी रहनी चाहिए।'

रानी लक्ष्मीबाई ने सरदारों की ओर देखते हुए कहा, 'पेशवा से युद्ध में सहायता के लिए लिख देंगे, वह समय पर यहाँ आकर हमारी सहायता अवश्य करेंगे। यह तो सभी जानते हैं, अंग्रेज झाँसी का किला विजय करने की पूर्ण रूप से तैयारी करके आए हैं।'

'हमें चाहिए तन-मन-धन से अपनी झाँसी की स्वतन्त्रता के लिए सहयोग दें, जिस किसी के मन में किसी लालचवश कपट आ गया हो, वह उसे दूर करके निष्कपट होकर, शिवजी पर हाथ रखकर, बेलभभूति पर हाथ लगाकर शपथ खाए, हम अपनी झाँसी से विश्वासघात नही करेंगे। प्राणों की बाजी लगाकर भी अपनी झाँसी की रक्षा करेंगे।'

महारानी लक्ष्मीबाई का यह भाषण सुनते ही, सभी सरदार खड़े हो गए और थाली में रखी हुई शिव प्रतिमा, बेलपत्र भभूति को छूकर शपथ लेने लगे।

सभी सरदार बारीबारी से शपथ लेकर अपने स्थान पर आकर बैठ गए। अनुभवी दीवान लक्ष्मणराव, मनुष्य पारखी बानपुर नरेश, कोई भी उस विश्वासघाती सरदार को न पहचान सके, जो अपनी सफलता पर मन-ही-मन मुस्करा रहा था।

जिसने, शिवजी, बेलपत्र, भभूति पर हाथ रखकर झूठी शपथ ली थी, और झाँसी के पतन का कारण बना था। बानपुर नरेश ने देखा, षड्-यन्त्रकारी बहुत चालाक स्वार्थी देशद्रोही है, वह सहज में नहीं हाथ आ सकता।

तब वह निराश होकर झाँसी राज्य के संकट को समझते हुए अपने परिवार, स्त्री-बच्चे धन-सम्पत्ति को लेकर घने जंगलों में चले गए।

महारानी लक्ष्मीबाई ने पेशवा रावसाहब को पत्र लिखा, 'अंग्रेजों के

विरुद्ध युद्ध में आप हमारी सहायता करें।'

रावसाहब को यह पत्र कालपी में मिला, तात्याटोपे उस समय चरखारी में थे, और उन्होंने विरोधियों पर विजय प्राप्त कर ली थी। रावसाहब ने उन्हें रानी के सहयोग के लिए पत्र लिखा।

पत्र मिलते ही तात्याटोपे रानी की सहायता को झाँसी की ओर चल पड़े। उनके पास इस समय विशाल सेना थी। झाँसी की स्वाधीनता की रक्षा करने को तात्याटोपे झाँसी जा रहे हैं, सुनते ही बहुत से राजे नवाब उनके साथ सम्मिलित हो गए।

शाहगढ़ नरेश, बानपुर नरेश, नरवर का राजा मानसिंह, आदिल मुहम्मद खाँ, अनेक क्रान्तिकारी तात्याटोपे के साथ महारानी लक्ष्मीबाई को सहयोग देने के लिए चल पड़े।

चरखारी की विजय से क्रान्तिकारियों में नवीन उत्साह भर गया था। सत्ताईस तोपें उनके पास थीं। जैतपुर के समीप रावसाहब भी तात्याटोपे से आकर मिल गए।

और झाँसी के सम्बन्ध में तात्याटोपे से विचार-विमर्श करके वापिस चले गए।

तात्याटोपे (२७ मार्च, १८५८) अपनी विशाल सेना लेकर मऊ पहुँच गया। और वहाँ सभी क्रान्तिकारियों से झाँसी राज्य के विषय में विचार-विमर्श हुआ।

सभी इस राय से सहमत हुए, सीधे झाँसी पहुँचकर रानी लक्ष्मीबाई की सहायता करें। और अंग्रेजी सेना का यातायात साधन बन्द करने को टेहरी पर आक्रमण किया जाए।

दो दिन तक इस विषय पर वादविवाद होता रहा, तात्या-टोपे ने झाँसी की ओर बढ़ने का निर्णय कर लिया। विद्रोही सैनिक इस निर्णय से असन्तुष्ट हो गए और उन्होंने इस निर्णय को नहीं माना।

तात्याटोपे की बाकी सेना युद्ध में निपुण नहीं थी। अशिक्षित थी। उसका प्रभाव युद्ध के समय बहुत बुरा पड़ा। मऊ से चलकर बेतवा पार करके तात्याटोपे की सेना बरुआ-सागर जा पहुँची।

यहाँ से लोहतगाँव पहुँचकर, सैनिकों ने ऊँचे टीले पर आग जला

कर, अपने आने की सूचना संकेत, झाँसी की क्रान्तिकारी सेना को दिए।

झाँसी की क्रान्तिकारी सेना, अपनी सहयोगी सेना का संकेत समझ गई। झाँसी में प्रसन्नता का सागर लहराने लगा। सैनिकों ने जोर से जयघोष की हर्ष-ध्वनि करके क्रान्तिकारी वीर सैनिकों का स्वागत किया।

तात्याटोपे की सेना के आने की सूचना सुनकर ह्यू रोज घबरा गया। किले के अन्दर ग्यारह हजार वीर सैनिक उसका सामना करने को तैयार थे। बीस हजार वीर सैनिक और अंग्रेज सैनिकों से लोहा लेने आ गए। तात्याटोपे कानपुर में भी अंग्रेज सैनिकों को पराजित कर चुका था। पर छलकपट से वह वहाँ विजयी हो गए थे।

ह्यू रोज ने थोड़ी देर सोचा, और यहाँ भी छलकपट भरी कूटनीति का आश्रय लेने का ह्यू रोज ने निर्णय कर लिया।

ग्वालियर के कई सेनानायक, पद और रुपयों के लालच से, अंग्रेजों को सहयोग देने को तैयार थे।

ह्यू रोज ने उन्हें अपनी ओर करके, रानी के विरोध में कार्य करने को तैयार कर लिया।

तात्याटोपे की विशाल सेना थी, फिर भी रानी झाँसी ने तात्याटोपे को अपनी सेना सहायता के लिए भेजने का निर्णय किया।

पर विश्वासघाती जो चुपचाप अंग्रेजों की सहायता करना चाहते थे उन्होंने रानी झाँसी को तात्याटोपे के सहयोग के लिए सेना भेजने से रोक दिया।

उन्होंने कहा, 'रानी साहिबा ! इस समय आपको बाहर सेना भेजना ठीक नहीं, कहीं यह सेना अंग्रेज सैनिकों से मिल जाए और हमारे लिए एक और संकट बन जाए।'

रानी ने तात्याटोपे को अपने सैनिक नहीं भेजे। ह्यू रोज ने ग्वालियर के सैनिकों के अधिकारियों को पहले ही लालच देकर चुपचाप अपनी ओर कर लिया था।

जिसकी सूचना न तो तात्याटोपे को थी, नाही रानी को मिल सकी। तात्याटोपे ने अंग्रेज सैनिकों पर गोले बरसाने आरम्भ किए, ह्यू रोज के सैनिकों ने भी उसके उत्तर में उसकी सेना पर गोले बरसाए।

दोनों ओर की तोपें अड़डडधम शब्द करती भयंकर आग उगल रही थीं। तात्याटोपे एक ऊँचे टीले पर दूरबीन लगाए सेना का निरीक्षण कर रहा था।

उसने देखा, अगली पंक्ति में जो ग्वालियर के सैनिक थे, वह रण-भूमि छोड़कर पीठ दिखाकर भागे जा रहे हैं।

गोरे घुड़सवार उनका पीछा कर रहे हैं। पहले ही आक्रमण में अपने वीर सैनिकों को भागते देखकर तात्याटोपे को बहुत आश्चर्य हुआ।

वह समझ गया, कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों ने मेरी सेना में प्रलोभन के जाल फैला दिये हैं। किस प्रकार सेना में से विश्वासघाती को पहचाना जाए।

अभी तात्याटोपे सोच ही रहा था। तभी किसी भेदिए ने जिधर मोर्चा कमजोर था, उस ओर आक्रमण करने के लिए अंग्रेज सैनिकों को सुझाव दिया।

अंग्रेजी सैनिकों ने कमजोर मोर्चे पर आक्रमण कर दिया और उधर के सैनिक भी पराजित हो गए। क्रान्तिकारी सैनिकों में इस हार से घबराहट फैल गई।

ह्यू रोज इसी अवसर को खोज रहा था। उसने उन घबराए हुए सैनिकों पर भयंकर आक्रमण किया।

अचानक इस प्रकार के भयंकर आक्रमण से घबराए हुए क्रान्तिकारी साहस हार गए। सहस्रों देशप्रेमी विश्वासघातियों के कारण मृत्यु की गोद सो गए।

तात्याटोपे की सेना पीठ मोड़ कर भागने लगी। तात्याटोपे को उनकी कायरता पर बहुत दुःख हुआ। वह तुरन्त ही अपनी बाकी बची सेना लेकर और युद्ध सामग्री लेकर जंगल की ओर चल पड़ा।

उसने सामने के जंगल में आग लगा दी, ऊँची-ऊँची आग की लपटों के साथ चारों ओर धुआँ फैल गया। उसकी आड़ में तात्याटोपे ने अपनी बाकी बची सेना को बेतवा नदी के पार कर दूसरे किनारे पर पहुँचा दिया।

उसे इस बात का भी दुःख था कि रानी लक्ष्मीबाई की सहायता के लिए उसने अपने हजारों सैनिकों की भेट चढ़ा दी। और रानी झाँसी ने

उसे थोड़ा-सा भी सहयोग देना ठीक न समझा, तात्याटोपे को विश्वास-घातियों की चाल का नहीं पता था। जिन्होंने रानी को तात्याटोपे के समीप सहयोग के लिए सैनिक नहीं भेजने दिए।

२६

अँग्रेज सैनिकों को पहले तो धुएँ के कारण कुछ दिखाई नहीं दिया। जब धुआँ कम हुआ, तब उन्होंने देखा, तात्याटोपे के क्रान्तिकारी सैनिक बेतवा के पार जा रहे हैं।

तब घुड़सवार सेनापति ने अपनी सेना को उन पर आक्रमण करने का आदेश दिया! पराजित थकी हारी सेना अँग्रेजों के घुड़सवार सैनिकों का सामना करने को तैयार हुई, पर सारा परिश्रम असफल हो गया।

अँग्रेज सैनिकों ने उनका पीछा करके सारी तोपें छीन लीं, इस संघर्ष में पन्द्रह सौ क्रान्तिकारी युद्ध की भेंट चढ़ गए, और सैकड़ों घायल हो गए।

तात्याटोपे के सैनिकों से जब अंग्रेजी सेना लोहा ले रही थी, तब झाँसी के किले में लक्ष्मीबाई के सरदार दूरबीन लगाए युद्ध का दृश्य देख रहे थे।

तत्याटोपे की हार जनता ने सुनी, तब सारी झाँसी में शोक छा गया। बीस हजार सैनिक अट्ठाईस तोपें थीं, कई वीर राजा क्रान्तिकारी, अँग्रेजों से कैसे पराजित हो गए, जब कि युद्ध सामग्री भी बहुत थी।

यह सोचकर सभी दुखी थे। बुद्धिमान सेनापति जानते थे, इसका कारण आपसी फूट और विश्वासघात था। जिसे सभी देश प्रेमी क्रान्तिकारियोंको भुगतान पड़ रहा था।

तात्याटोपे की पराजय ने रानी के सैनिकों का भी मनोबल तोड़ दिया, वह साहस हार गए, पर वीर झाँसी की रानी साहस नहीं हारी। उसने ठाकुरों और सेना के सेनानायकों को बुलाकर, झाँसी की रक्षा के लिए तैयार किया।

महिलाओं की वीर सेना ने घायल सैनिकों की सेवा का भार, गोले बारुद बनवाना और किले की सुरक्षा की तैयारी में सहयोग देना, यह कार्य संभाला।

वीर महिलाओं का साहस, उत्साह, कार्य देखकर, झाँसी के क्रान्तिकारी सैनिकों में भी उत्साह और झाँसी की रक्षा के लिए जीवन की बाजी लगाकर, शत्रुओं से लोहा लेने की भावना जाग उठी।

वह भी जान हथेली पर रखकर, झाँसी की रक्षा को तैयार हो गए।

ह्यू रोज तात्याटोपे से विजयी होकर दोगुने उत्साह में भर गया। उसने रात-दिन तोपों से किले पर गोले बरसाने आरम्भ कर दिए।

किले की सुरक्षा-दीवार में कई स्थानों में छेद हो गए, जिसे वीर सैनिकों ने साहस से भरने का यत्न किया।

पर विश्वासघाती ने अँग्रेज सैनिकों को ऐसा स्थान बताया, जहाँ से तोपों के गोले सीधे नगर में गिर सकते थे।

उस विश्वासघाती ने थोड़े से लोभ और पिछली शत्रुता का बदला लेने को और भी कई गुप्त भेद बतला दिए।

ह्यू रोज प्रसन्नता में भर गया, और उसने भेदिए के बताए स्थान पर तोपें लगाकर सीधे नगर में गोले बरसाने आरम्भ कर दिए।

एक मकान पर गोले गिरकर कई मकानों को तोड़ते हुए स्थान-स्थान पर आग लगा देते थे। पशु-पक्षी क्या मानव आग झुलसते चिल्लाते हुए दम तोड़ देते थे।

रानी ने दमकलों का प्रबन्ध कर रखा था। तुरन्त आग बुझाने को पहुँच जाती थीं। पर रात-दिन लगातार गोलों की वर्षा ने नगरवासियों की शान्ति छीन ली थी।

किले को, शहर को, बहुत हानि हो रह थी। बेघर के बेसहारा नागरिकों को रानी ने धीरज बन्धा कर, उनके रहने, खाने-पीने की व्यवस्था कराई।

रानी प्रत्येक मोर्चे पर अपनी महिला सुरक्षा दल के साथ पहुँचती और वहाँ का प्रबन्ध कराती।

रात-दिन तोपों ने गोले बरसाकर किले का एक भाग तो तोड़ डाला था। रानी झाँसी अपने वीर सैनिकों को लेकर, मोर्चे की रक्षा का भार सँभालने आ गई।

उनके कारीगर कम्बल ओढ़कर बुर्ज पर चढ़े, नीचे मनुष्यों के ऊपर खड़े मनुष्य खड़े हुए, शृँखला सी बनाकर उनके द्वारा ईन्टें और आवश्यक सामान ऊपर तक पहुँचाया गया।

कारीगरों को लिटाकर तब उनसे मरम्मत का काम कराया गया, ताकि शत्रु उन्हें न देख सकें। फिर वहाँ रखकर तोपें दागी गई।

अडडडधम फटाफट करते गोले अँग्रेज सैनिकों को मृत्यु की गोद सुलाने लगे।

अनुभवी चतुर ह्यू रोज को शक्तिशाली दूरबीनों द्वारा और कई विश्वासघाती स्वामी द्रोही मनुष्यों द्वारा किले के कई भेद पता लग चुके थे।

दक्षिण की ओर नगर के कोट की दीवार दोनों ओर से एक ऊँचे टीले से मिली थी। इस टीले पर रानी ने दृढ़ मोर्चे बनाए थे। वहाँ पर तोपें लगी थीं, जो अँग्रेज सैनिकों पर गोले बरसा रही थीं।

ह्यू रोज ने टीले की पहाड़ी के पीछे मोर्चे बनाए, वहाँ से तोपें से गोले बरसाकर मोर्चे को नष्ट कर डाला।

इस मोर्चे के समाप्त होते ही अँग्रेजी तोपें के गोले सीधे किले पर गिरने लगे। यहाँ रानी ने एक बुर्ज तैयार किया था। जिसे सफेद बुर्ज कहते थे, रानी की स्वतन्त्रता का प्रतीक ध्वज इस पर फहराता था।

बुर्ज पर गोले बरसने से सुरक्षा-दीवार नष्ट हो गई। झाँसी की रानी ने किले की दीवार पर बालू से भरे बोरे रखवाए और उन्हें खूब पानी से तर करवा दिया। जिससे गोले वहाँ गिरकर कोई हानि न पहुँचाए।

रानी के महल को पहले ही रात-दिन की गोलाबारी से हानि पहुँच चुकी थी। महल की दूसरी मंजिल पर गणपति के उत्सव का स्थान था।

वहाँ बड़े-बड़े शीशे और झाड़ फानूस लगे हुए थे। गोला लगते ही

काँच का सारा सामान टूट कर बिखर गया था और बीस पच्चीस मनुष्य भी मृत्यु की गोद में सो गए थे।

कई तोपची अँग्रेजों के लगातार गोले बरसाने से परलोक सिधार गए, तोपें चलनी बन्द हो गईं। रानी झाँसी ने अपने प्रसिद्ध तोपची गोलन्दाज मुहम्मद गुलाम गौसखाँ को आदेश दिया, वह अँग्रेजी तोपखाने पर गोले बरसा कर उन्हें बेकार कर दे, मुहम्मद गुलाम गौसखाँ ने रानी के आदेश का पालन तुरन्त ही किया। बड़े जोश से तोप संभालकर अपनी अचूक गोलन्दाजी से अँग्रेजी तोपखाने के मोरचे को नष्ट करके अनेक गोरे गोलन्दाजों को मार डाला।

रानी लक्ष्मीबाई मुहम्मद गौसखाँ की अचूक गोलन्दाजी से बहुत प्रसन्न हुई, उन्होंने तुरन्त ही अस्सी तोले का एक चाँदी का तोड़ा इनाम में दिया।

अँग्रेज सेनापति ह्यू रोज भी झाँसी के तोपखाने का ऐसा अच्छा संचालन देखकर बहुत प्रभावित हुआ और उसने अपने सहगोगियों से उसकी बहुत प्रशंसा की।

वीर महिलाएँ भी तोपखाने में सहयोग दे रही थीं। कोई बारुद ले जा रही थी, कोई घायलों की मरहम पट्टी कर रही थी। अनेक सैनिकों के लए आवश्यक सामग्री इधर से उधर पहुँचा रही थीं।

रानी लक्ष्मीबाई प्रत्येक मोर्चे पर पहुँच कर वीर सैनिकों को उत्साहित कर रही थीं।

ह्यू रोज ने झाँसी पर अधिकार करने की शपथ खाई हुई थी। वह रात दिन गोले बरसाकर किले की सुरक्षा दीवार को तोड़कर अन्दर घुसना चाहता था।

उसने एक दृढ़ बलशाली योजना बनाई, मेजर स्टुअर्ट के सैनिकों को किले की दीवार में जो दरार पड़ गई थी उस किले की सुरक्षा दीवार पर आक्रमण करके उसमें से नगर में घुसने की आज्ञा दी।

कर्नल लिड़ले, कैप्टन रॉबिन्सन को आदेश दिया सुरक्षा दीवार फाँद कर अन्दर पहुँचें।

झाँसी पर तीन दिशाओं से एक साथ आक्रमण की योजना ह्यू रोज

ने बनाई। पश्चिम की दीवार पर मेजर गाल को दिखावे के लिए आक्रमण का आदेश दिया।

अप्रेल की प्रातःकाल तीन बजे जब सूर्य की किरणें उजाले के लिए पृथ्वी तल पर नहीं आई थीं, ह्यूरोज के आक्रमणकारी सैनिक दल योजना अनुसार नियत स्थल पर पहुँच गए।

और अपने सेनापति का संकेत पाते ही मेजर गाल ने पश्चिम की ओर से आक्रमण कर दिया। मेजर स्टुअर्ट ने आगे बढ़कर सुरक्षा दीवार की दरार पर धावा बोल दिया।

देश प्रेमी क्रान्तिकारियों ने भी गोलियों का बौछार करके उन्हें रोकने का प्रयत्न किया। बहुत से अंग्रेज सैनिक मृत्यु की गोद में सो गए। पर फिर भी अंग्रेज सैनिक आगे को ही बढ़ते रहे।

कर्नल ब्राकमैन अवसर देखकर गोरे सैनिकों के साथ उस दरार से नगर में प्रवेश कर गया।

झाँसी के वीर सैनिकों ने संकट का बिगुल बजा दिया, अंग्रेज सैनिकों को दीवार तक पहुँचने के लिए दो सौ गज भूमि पार करनी थी।

किले से लगातार गोलियों की वर्षा हो रही थी। जीवन की बाजी लगाकर अंग्रेज सैनिक किले की दीवार के समीप पहुँच गए, और किले के दीवार के तीन स्थानों पर सीढ़ी लगाकर किले पर चढ़ने का यत्न करने लगे।

झाँसी के वीर सैनिकों ने और तेज गोले वर्षा ने आरम्भ कर दिए। तोपों की गड़गड़ाहट बन्दूकों की गोलियों के फटाफट शब्द का शोर बढ़ता चला जा रहा था।

बड़े-बड़े पत्थर लकड़ी के टुकड़े अंग्रेज सैनिकों पर पड़कर उन्हें घायल कर रहे थे। गोरे सैनिक घबरा गए और जीवन बचाने को पत्थरों के पीछे छुप गए।

सीढ़ियाँ दीवार पर लगी हुईं थी। सीढ़ियों को पकड़ कर बहुत से वीर सैनिक खड़े थे, वह तब तक वहाँ सीढ़ी पकड़ खड़े रहते जब तक कोई बन्दूक की गोली या तोप का गोला उन्हें मृत्यु की गोद न सुला देता।

कर्नल ब्राकमैन दरार से सैनिकों सहित नगर में पहुँच गया था।

उसने दरार के समीप रक्षा करते हुए झाँसी के वीर सैनिकों पर पीछे से आक्रमण कर दिया।

अचानक के इस प्रकार के आक्रमण से क्रान्तिकारी घबरा गए, पर उन्होंने साहस से आगे बढ़ कर अंग्रेजों से लोहा लिया, कई अंग्रेज सैनिक मृत्यु की गोद सो गए, क्रान्तिकारी अंग्रेज सैनिकों को तलवार के घाट उतार रहे थे। उसी समय अवसर देखकर सीढ़ियों से चढ़कर गोरे सैनिक नगर के अन्दर आ गए।

लेफ्टिनेंट डिक अपने साथियों सहित सीढ़ियों से चढ़ कर उनकी सहायता को आ पहुँचा। सैकड़ों गोरे सैनिक नगर में घुस गए।

ब्रिगेडियर स्टुअर्ट नें ओरछा दरवाजे पर आक्रमण कर दिया, उस दरवाजे पर रक्षा के लिए दुल्हाजी सिंह था।

दुल्हाजी सिंह के मन में पहले से ही झाँसी से विश्वासघात करने की भावना रुपयों और पद के लोभ के कारण घर कर चुकी थी। वह अंग्रेजों के हाथों अपने देश प्रेम को बेच चुका था।

जैसे ही ब्रिगेडियर स्टुअर्ट अपने सैनिकों सहित उस ओर आए, विश्वासघाती दुल्हाजी सिंह नें ओरछा दरवाजा अंग्रेजों को सौंप दिया।

अंग्रेज सरलता से झाँसी नगर में घुस आए। रानी लक्ष्मीबाई अपनें महल में विश्राम कर रही थीं। उसे सन्देशवाहक ने सूचना दी, अंग्रेजों का नगर पर अधिकार हो गया है।

रानी सुनते ही क्रोध में भर गई, अवश्य किसी भेदिए ने विश्वासघात करके अंग्रेजों को नगर में घुसने का अवसर दिया है।

वानपुर के राजा ने सरदार की विश्वासघात की सूचना दी थी। पर कपटी विश्वासघाती सरदार ने झूठी शपथ लेकर उस सन्देह को दूर कर दिया था।

तीर कमान से निकल चुका था। रानी लक्ष्मीबाई ने अपने पिता मोरोपन्त और विश्वासी देश प्रेमी सरदारों को बुलाकर उन्हें सेना की कमान सम्भाल कर अंग्रेजों से सावधान रहकर लोहा लेने का आदेश दिया।

अंग्रेज सैनिक नगर में घुस चुके थे। नगर में घुसते ही अंग्रेज

सैनिकों अत्याचार आरम्भ कर दिया।

स्त्री, पुरुष, बालक जो भी सामने आया, उसे मृत्यु की गोद सुला दिया। मकानों के दरवाजे तोड़कर अंग्रेज सैनिक मकानों में घुस गए। नगरवासियों ने उनका सामना किया,···अंग्रेज सैनिकों ने निर्दयतापूर्वक उन्हें मार डाला।

नगर में ऐसे मकान थे, जिनमें क्रान्तिकारी रहते थे। अंग्रेजों को देखते ही उन्होंने उन पर गोलियाँ चलाईं, अंग्रेज सैनिकों ने उन पर आक्रमण करके मकान से बाहर निकलने पर विवश किया।

पर क्रान्तिकारी आक्रमण का उत्तर देते रहे। अंग्रेज सैनिकों ने देखा, क्रान्तिकारी किसी प्रकार अपने मकान छोड़ कर बाहर नहीं निकले तब उनके मकानों को तोप से उड़ा दिया गया।

ह्यू रोज, कर्नल लोथर रानी के महल पर अधिकार करने के लिए आगे बढ़े। महल के चारों ओर अंग्रेज सैनिकों ने आग लगा दी, ताकि उनका सामना करने के लिए वहाँ से कोई सैनिक न आ सके।

रानी के महल की रक्षा रानी लक्ष्मीबाई के स्वामीभक्त वीर सैनिक कर रहे थे। गोरे सैनिकों में और रानी लक्ष्मीबाई के वीर सैनिकों में भीषण युद्ध हुआ।

अनेक गोरे सैनिक मारे गए, पर रानी के वीर रक्षक महल को न बचा सके, रानी के सैनिकों से अधिक अंग्रेज सैनिक उन पर आक्रमण करने को आ चुके थे।

रानों के महल के रक्षकों की अंग्रेज सैनिकों ने मृत्यु की गोद सुला दिया। रानी का सम्पत्ति से भरा महल, इन अंग्रेज सैनिकों ने लूट लिया।

झाँसी के पूर्व सूबेदार रामचन्द्र राव के समय का रेशमी झँडा लार्ड विलियम बेंटिक ने उन्हें दिया था, उसे भी अंग्रेज सैनिक लूट कर ले गए।

अंग्रेज सैनिकों के अत्याचारों से झाँसी की जनता और भी विद्रोही बन गई, वह अंग्रेजों से घृणा करने लगी। बदले की भावना प्रत्येक नागरिक के हृदव में प्रचण्ड अग्नि के समान धधकने लगी।

२७

रानी लक्ष्मीबाई का महल अंग्रेज सैनिकों ने लूट लिया है, सुनते ही महारानी लक्ष्मीबाई के घोड़ों के (पायगा) पचास कर्मचारी मोरचा बना कर बैठ गए।

उन्होंने अंग्रेज सैनिकों के सामने मस्तक झुकाने से इन्कार कर दिया; और चारों ओर से कमरा बन्द कर दिया गया।

अंग्रेज सैनिकों ने उन पर आक्रमण कर दिया, तब उन कर्मचारियों ने उत्तर में गोलियाँ बरसाईं अंग्रेज सैनिक क्रोध में भर गए और कमरे में आग लगा दी।

कर्मचारियों वस्त्रों में आग लग गई, आग बुझाने का कोई साधन उनके पास न था। वह आग में जलते हुए भी शत्रु सैनिकों पर आक्रमण करते रहे।

और स्वतन्त्रता के लिए लड़ते-लड़ते मृत्यु की गोद में सो गए। किसी ने भी आत्म-समर्पण नहीं किया।

रानी लक्ष्मीबाई किले के बुर्ज पर खड़ी हुई दूरबीन से अपनी झाँसी के नागरिकों पर अंग्रेज सनिकों के अत्याचारों को देखकर क्रोध में भर गई।

डेढ़ हजार विलायती (अफगान-मुसलमान) योद्धाओं को साथ लेकर किले से नीचे उतरी और नगर में घुसने वाले अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया।

रानी और उसके वीर योद्धाओं की तलवारें अनेक अंग्रेज सैनिकों को मृत्यु की गोद सुलाने लगीं।

बिजली की तेजी जैसी चमक कर रानी की तलवार शत्रु सैनिकों के हृदय को दहला कर उनमें कायरता भरने लगी, वह अपने जीवन बचाने को मकानों की आड़ में छिप गए और वहाँ से रानी के सैनिकों पर गोलियाँ बरसाने लगे।

एक बूढ़ा सरदार यह सब देख रहा था, अंग्रेज सैनिक आड़ में छिपे हुए गोलियों की वर्षा कर रहे हैं। वहाँ से रानी लक्ष्मीबाई को भी बन्दूक

का निशाना बनाना सरल था।

सरदार सोचते हुए रानी के समीप आया और नम्रता से झुकते हुए रानी से कहा, 'रानी साहिबा, इस समय आपका आगे बढ़ना संकट से खाली नहीं। शत्रु छिपा हुआ गोलियों की वर्षा कर रहा है।'

किसी समय भी शत्रु की गोली का आप निशाना बन सकती हैं, आप वापिस किले में जाकर शत्रु से लोहा लें। यहाँ अगणित गोरे सैनिक नगर में घुस आए हैं, मकानों की आड़ में छिपे गोलियाँ बरसा रहे हैं।

उनसे यहाँ लोहा लेना ठीक नहीं, आप किले में जाकर फाटक बन्द करके, वहाँ आक्रमण की तैयारी करिए। ईश्वर आपको जो सुझाव, प्रेरणा दे, वही करिए। झाँसी की अभी दुर्दशा न जाने और क्या होगी।

बूढ़े सरदार के बार-बार आग्रह से रानी लक्ष्मीबाई वापिस किले में चली गई, उनका हृदय नगरवासियों की दुर्दशा देखकर आठ-आठ आँसू रो रहा था।

नगर में चारों ओर आज आग लग रही थी। पानी न मिलने से पशु छटपटा रहे थे, रानी लक्ष्मीबाई इस संकट को देख कर आत्म- त्या करने को तैयार हो गई।

'मैं अपनी झाँसी की, झाँसी के नागरिकों की रक्षा न कर सकी, मेरा जीवन व्यर्थ है, इसे अब समाप्त ही कर दूंगी।'

'रानी साहिबा, आप वीर हैं, साहसी हैं।' बूढ़े सरदार ने नम्रता से झुकते हुए कहा, 'आत्म-हत्या की बात कायर सोचते हैं, आप इस समय कालपी जाएँ और पेशवा साहब से मिलकर अंग्रेजों से उनके अत्याचार का बदला लें।'

आत्म-हत्या से जीवन नष्ट करके झाँसी को पाप का भागी न बनाएँ। रानी साहिबा आप से अनुरोध है, आप फिर से शक्ति-संग्रह करके झाँसी को दुर्दशा से बचाएँ।

'सरदार तुम्हारा इस समय का अनुरोध हम न ठुकरा सकेंगे। रानी लक्ष्मीबाई ने बूढे सरदार से धीरे से कहा, 'चुपचाप हमारे जाने की तैयारी की जाए।'

'रानी साहिबा', एक सेवक रोता हुआ रानी लक्ष्मीबाई के सामने

आया और सुबकते हुए बोला, 'रानी जी, हमारे प्रसिद्ध तोपची गुलाम मुहम्मद गौस खाँ और खुदाबख्श ने तोपों की मार से शत्रु सैनिकों का नाक में दम कर दिया था। सैकड़ों शत्रु-सैनिक मृत्यु की गोद में सुला दिए थे।

अचानक ही अंग्रेज सैनिकों की तोपों ने आग उगल कर हमारे तोपचियों को भून डाला, रानी साहिबा, 'अब शत्रु सैनिक आगे बढ़े आ रहे हैं।'

'हमारे वीर सैनिक जीते जी उन्हें आगे नहीं बढ़ने देंगे, हमें विश्वास है यदि सरदार विश्वासघाती तोपों में गोलों की बजाए बाजरा न भरवा देता, तो झाँसी पराधीन नहीं होती।'

'देशद्रोही, विश्वासघाती अपने स्वार्थ के लिए देश का शत्रु बन गया, उसे इस विश्वासघात का बदला अवश्य मिलेगा रानी साहिबा। क्रोध से सरदार का मुँह तमतमा गया, उसकी मुट्ठियाँ भिंच गईं, आँखें अँगारे की तरह चमकने लगीं।

बड़ी कठिनाई से अपने मन की भावनाओं को रोक कर उसने सेवक से चुपचाप कुछ कहा और रानी लक्ष्मीबाई को चुपचाप चलन का समय बताकर बूढ़ा सरदार एक ओर चला गया।

रानी गुलाम मुहम्मद गौस खाँ, और खुदाबख्श की मृत्यु की सूचना से रो पड़ी, गौस खाँ, खुदाबख्श तुमने अपना कर्तव्य पूरा किया, अपनी झाँसी की स्वतन्त्रता के लिए जीवन भेंट चढ़ा गए, पर हम अभी अपनी झाँसी के लिए कुछ भी न कर सके, रानी ने आँखें मींचकर अपने वीर तोपचियों को श्रद्धांजली दी। विश्वासघातियों ने हमारे सारे कार्यक्रमों पर पानी फेरकर झाँसी को पराधीन कराने के लिए चारों ओर जाल बिछा दिया। हम छटपटा रहेहैं, कोई उपाय दृष्टिगोचर नहीं होता, प्रभु! अब तो तुम ही हमें राह दिखाओ।

रानी लक्ष्मीबाई की आँखों से झाँसी की दुर्दशा पर टप-टप आँसू टपक रहे थे, उसकी अँगरक्षक सखियाँ रानी के झाँसी से बाहर जाने का प्रबन्ध कर रही थीं।

भूलासिंह जिसे दुल्हासिंह भी कहा जाता था, शिवजी की मूर्ति,

बेल, भभूति पर हाथ रखकर झाँसी के हित की शपथ खा चुका था। रुपयों और पद के लोभ ने उसे अन्धा करके शपथ को तोड़ने पर विवश कर दिया।

अंग्रेज शासकों के पद-धन के लोभ देने पर दुल्हासिंह ने तोपों में बारूद के बजाए बाजरे के थैले भरवा दिए थे। दक्षिण दरवाजे की तोप इसी कारण बन्द हो गई थी।

दुल्हाजी भूला सिंह चार हजार सैनिकों का नायक था। उसी का विश्वास करके रानी ने दक्षिण के भाग का दुल्हासिंह को रक्षक नियुक्त किया था।

विश्वासघाती दुल्हासिंह भूलासिंह ने प्रातःकाल होने से पहले तोपों में बारूद की बजाए बाजरे के थैले भरवा कर तोपों के मुँह बन्द करवा दिए थे।

आग उगलने वाली तोपें शान्त होकर अंग्रेजों को विजयी बना गई थीं। झाँसी के भाग्य का सूर्य अस्त हो गया था।

यह सब विश्वासघाती दुल्हा सिंह का कार्य था, अंग्रेजों को विजयी बनाकर दुल्हा सिंह फूला नहीं समा रहा था और अपने कार्य का इनाम लेने की तैयारी कर रहा था।

विश्वासघाती को अंग्रेजों ने विजयी होते ही इनाम देने के लिए बुलाया, दुल्हा सिंह भूला सिंह हर्ष में भर कर अपने कार्य का पारितोषिक लेने के लिए अंग्रेज पदाधिकारी के समीप पहुँचा।

मुस्कराते हुए झुककर दुल्हा सिंह ने अंग्रेज पदाधिकारी को अभिवादन किया।

अंग्रेज पदाधिकारी ने दुल्हा सिंह के अभिवादन का उत्तर देते हुए उससे पूछा, 'तुम्हारी कितनी पीढ़ियों ने (वंश वालों ने) इस झाँसी में कार्य किया है?'

'हमारी चार पीढ़ियाँ, झाँसी राज्य में कार्य करती रही हैं।' दुल्हा-सिंह ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैं बहुत समय से झाँसी की सेना-टुकड़ी का नायक हूँ।'

'झाँसी राज्य में चार पीढ़ियों से तुम्हारे वंशज रहे, उनका निर्वाह

झाँसी राज्य ने किया, जिस भूमि से चार पीढ़ियों तक तुम्हारे वंशज पलते रहे, उसी भूमि से देश से तुमने विश्वासघात किया। अंग्रेज पदाधिकारी ने क्रोध से दुल्हासिंह भूलासिंह को घूरते हुए कहा, 'जब तुम अपने देश से विश्वासघात कर सकते हो, तब तुम हमारे हितैषी कैसे बन सकते हो?'

तुम्हें इसका इनाम भरपूर मिलेगा, कहते हुए पदाधिकारी ने दुल्हासिंह का सिर तलवार से धड़ से पृथक कर दिया। उसके परिवार वालों को भी बुलाकर मृत्यु की गोद सुला दिया।

झाँसी के हितैषियों ने जब यह समाचार सुना तो उनकी आँखों में आँसू छलछला आए। उन्होंने झाँसी के नागरिकों की ओर देखते हुए कहा, 'तुम सबने देशद्रोही, विश्वासघाती को क्या इनाम मिला, सुना। सुनो उस प्रभु के दरबार में देर है, अन्धेर नहीं।'

प्रभु ने उसके कार्य के अनुसार ही उसे पारितोषिक दिलाया, विश्वासघातियों में उसका नाम लिखा गया। देशप्रेमी उसके नाम को सुनकर थूकेंगे।

झाँसी प्रेमी अपने बच्चों को दुल्हासिंह के विश्वासघात की गाथा सुनाकर कहेंगे, 'याद रखो, देश से विश्वासघात करने वाले को कहीं चैन नहीं मिलता, देश प्रेमी अपने देश में ही नहीं, दूसरे देशों में भी मान, आदर पाते हैं।'

विश्वासघाती अपने देश में ही अपमान सहन करते बुरी मौत मरते हैं। यह प्रकृति का नियम है, अच्छे-बुरे कार्य का परिणाम भुगतना पड़ता है, जल्दी या देर से उस कार्य का निर्णय अवश्य होता है।

दुल्हासिंह भूलासिंह को तो झाँसी से विश्वासघात का फल मिल चुका था, पर उसके विश्वासघात का परिणाम देशप्रेमी झाँसी के नागरिकों को भी भुगतना पड़ रहा था।

उनकी रानी झाँसी छोड़कर जा रही थी (पाँच अप्रैल सन् १८५८) रात को रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी के किले से बाहर जाने का निर्णय कर लिया।

सायंकाल को रानी ने अपने कर्मचारियों को बुलाकर उन्हें इनाम दिया और उन्हें समझाते हुए विदा किया। कई कर्मचारी रानी का साथ

छोड़ने को तैयार नहीं हुए, उन्हें रानी लक्ष्मीबाई ने साथ चलने की आज्ञा दे दी।

सभी कर्मचारी आँसू भरे अपनी रानी को झाँसी से विदा लेते देख रहे थे।

रानी ने मर्दाना वेश धारण किया, सिर पर साफा बाँधा, अंगरखा और पाजामा पहना, दो पिस्तौलें और दो तलवारें दोनों ओर पेटी से लटका लीं। दामोदरराव को एक दुपट्टे से अपनी पीठ से बाँध लिया। और एक श्वेत घोड़े पर सवार होकर चलने को तैयार हो गई। रानी के पिता मोरोपन्त ताम्बे कई सरदारों सहित रानी के साथ चलने को तैयार हो गए।

कई बुन्देले ठाकुर और विलायती सैनिक भी उनके साथ थे। झाँसी के राजघराने की संपत्ति रत्न, मोहरें, आभूषण एक हाथी पर संभाल कर रख दिए गए।

हाथी के साथ कई वीर सैनिक उसकी रक्षा के लिए नियुक्त कर दिए गए।

रानी अपने श्वेत घोड़े पर सवार हो गई, उसके साथ ही दूसरे घोड़ों पर रानी लक्ष्मीबाई की अँगरक्षक प्रिय सखियाँ बैठ गईं। रानी ने आँखों में आँसू भरकर एक बार अपनी प्रिय झाँसी की ओर देखा और घोड़े की लगाम खींचकर सरपट घोड़ा दौड़ा दिया।

अन्धकार भरी रात्रि थी, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। घोड़ों की टापों का शब्द गूँजता हुआ टप-टप-टप-टप सुनाई दे रहा था।

भाण्डेर दरवाजे के समीप जब रानी का दल पहुँचा तब पहरे वालों ने पूछा, 'इस समय कौन जा रहा है?'

'टेहरी की सेना जा रही है।' कहते हुए रानी के साथी सैनिक आगे निकल गए। रानी ने एक बार मुड़कर फिर अपनी झाँसी को ओर देखा, और सरपट घोड़ा दौड़ा दिया।

घोड़ों के टपा-टप तेजी से दौड़ने के शब्द ने अंग्रेजी सैनिकों के मन में सन्देह उत्पन्न कर दिया। उन्होंने रानी के दल को रोकने का यत्न किया। रानी ने तेजी से घोड़े को भगाया।

रानी के साथी पीछे रह गए, रानी लक्ष्मीबई तेजी से घोड़ा दौड़ाते हुए, अंग्रेज सेना की पंक्ति को तोड़ते हुए उनके घिराव से बाहर निकल गई।

इस भाग दौड़ में रानी का दल बिखर गया। थोड़े से घुड़सवार और दासियों सहित रानी लक्ष्मीबाई काल्पी की ओर चल पड़ी।

अंग्रेजी सैनिक सावधान हो गए, लेफ्टिनेंट डाकर ने रानी को पकड़ने के लिए कई सैनिक साथ लिए और तेजी से घोड़ा दौड़ाता रानी लक्ष्मीबाई का पीछा करने लगा।

रानी के दल के बहुत से साथी तेजी से न भाग सके, अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। विलायती सैनिक बुन्देले ठाकुर मोरोपन्त ताम्बे सभी वीरों ने अंग्रेज सैनिकों का घेरा तोड़कर बाहर निकलने के लिए भीषण युद्ध किया।

विलायती सैनिक, बुन्देले ठाकुर, अंग्रेज सैनिकों से लोहा लेते हुए मृत्यु की गोद सो गए। मोरोपन्त ताम्बे घायल हो गए। उनकी जाँघ पर बड़ा घाव हो गया था।

वह किसी प्रकार दतिया पहुँचे और एक तमोली के यहाँ ठहर गए, भीरु तमोली ने दतिया के राजा को मोरोपन्त के ठहरने की सूचना दे दी।

घायल अवस्था में ही दतिया के राजा ने मोरोपन्त को बन्दी बनाकर, अंग्रेजी सैनिकों को सौंप दिया, अंग्रेजी सैनिक उन्हें झाँसी ले गए। ह्यूरोज ने रानी लक्ष्मीबाई के महल के सामने ही मोरोपन्त ताम्बे को फाँसी दे दी।

झाँसी के नागरिक चुपचाप आठ-आठ आँसू रोते रहे, उनके आँसू पोंछने वाले उनसे बिछुड़ते जा रहे थे।

२८

रानी लक्ष्मीबाई और उनके साथी लगातार चलते रहे। प्रातःकाल वे कालभाण्डेर जा पहुँचे, वहाँ नगर के प्रतिष्ठित नागरिक जवाहर सिंह के भतीजे बिरजू, मुल्ला काजी विलायत खाँ, फूल सिंह आदि रानी से मिलने आए।

झाँसी की घटनाओं को सुनकर सभी बहुत दुखी हुए। रानी लक्ष्मीबाई अपने साथियों सहित विश्राम कर रही थी, तभी सेवक ने सूचना दी, अंग्रेज घुड़सवार रानी का पीछा करते यहाँ आ पहुँचे हैं।

रानी लक्ष्मीबाई ने थोड़ा-सा दूध पिया और घोड़े पर सवार होकर वहां से चल पड़ी। लेफ्टिनेंट डाकर अपने साथियों सहित रानी के समीप आ पहुँचा।

रानी के साथियों ने भी तलवारें निकाल लीं, भयंकर युद्ध हुआ, रानी की तलवार से डाकर घायल हो गया। रानी की रक्षा करते हुए, विलायतखाँ को गोरे सैनिकों ने मृत्यु की गोद सुला दिया।

रानी को पकड़ने के लिए डाकर ने बहुत यत्न किया, पर रानी लक्ष्मीबाई उससे बचकर काल्पी की ओर चली गई। घायल डाकर को लेकर गोरे सैनिक झाँसी वापिस आ गए।

प्रातःकाल गोरे सैनिकों ने झाँसी के किले में प्रवेश किया और अपना ध्वज यूनियन जैक किले पर फहरा दिया। झाँसी पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

पर कई स्वतन्त्रता प्रेमी क्रान्तिकारी उनकी अधीनता को स्वीकार न कर सके, और गोरे सैनिकों से युद्ध करके मृत्यु की गोद सो गए।

अंग्रेज सैनिक रानी को झाँसी छोड़कर जाने की सूचना सुनकर प्रतिहिंसा में भर गए। वे नगर में घुसकर नगरवासियों को लूटने लगे।

जो नागरिक उनका विरोध करता, उसका मकान जलाकर निर्दयता से उसे परिवार सहित मार देते।

बहुत से नागरिक अंग्रेज सैनिकों के अत्याचारों से घबरा कर नगर छोड़कर दूसरे नगरों की ओर भाग गए।

अंग्रेज सैनिक सामान लूटते ओर नगरवासियों को मृत्यु की गोद सुलाकर, उनके मकानों में आग लगा देते। झाँसी नगरी धू-धू करके जल रही थी। ऊँची-ऊँची अग्नि की लपटें उठकर अपने वैभव को नष्ट होते देखकर, धुएँ के रूप में रोती हुई नगरी के नष्ट होने की कहानी कह रही थीं।

जिनके सम्बन्धी अंग्रेजों के अत्याचार के शिकार हो गए थे, वह उस प्रबल आघात को सहन न करके पागलों की तरह विलाप कर रहे थे।

जिनके घर-बार नष्ट हो गए थे, वह भूख से व्याकुल होकर एक रोटी के टुकड़े के लिए भटक रहे थे। पशु घास-पानी के लिए इधर-उधर छट-पटाते फिर रहे थे।

हलवाईपुरा में जहाँ कभी धनवानों के हर्ष-भरे स्वर गूंजते थे, उनके मकानों में आग की ऊँची लपटें उठकर उनके वैभव-ऐश्वर्य को भस्म करती हुई, चारों ओर फैल रही थीं।

कोई आग बुझाने वाला नहीं था। शत्रु आग लगाकर अपनी क्रूरता का परिचय खिलखिला कर हँसते हुए दे रहा था।

सात दिन तक शत्रुओं ने नगरवासियों की धन-सम्पत्ति, बरतन-वस्त्र तक लूट लिए, जब लूटने को कुछ न मिला, तब मकानों में आग लगा कर उन्हें खण्डहर बना दिया।

कल तक जो मनुष्य दूसरों का पालन करते थे, आज वे स्वयं एक रोटी को तरसने लगे, जिन्होंने सदैव दूसरों को दिया, वह दूसरों के आगे हाथ फैलाने पर विवश हो गए।

शत्रु ने धर्मशाला-मन्दिर तक की धन-सम्पत्ति लूट कर उनके पण्डे-पुजारी, चौकीदारों को मृत्यु की गोद सुला दिया।

उत्तर भारत में झाँसी का पुस्तकालय प्रसिद्ध था। झाँसी के शासक-कला और साहित्य के प्रेमी थे। वेदों की विभिन्न शाखाओं के भाष्यों का संग्रह, अनेक स्मृतियाँ, उन पर विभिन्न टीकाएँ, पुराण, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि अनेक विषयों के प्रसिद्ध दुर्लभ ग्रन्थों के कारण झाँसी का पुस्तकालय दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। काशी तक के विद्वान इन दुर्लभ ग्रन्थों को देखने के लिए आते थे।

ग्रन्थों को प्राचीन पद्धति के अनुसार लकड़ियों की तख्तियों और वस्त्रों से लपेट कर सुरक्षित रखा हुआ था। गोरे सैनिक लुटेरे पुस्तकालय में घुस गए, और ग्रन्थों की तख्तियों को उन पर बन्धे वस्त्रों को निकाल कर ग्रन्थों को फाड़ डाला और सड़क पर फेंक दिया।

झाँसी में रखा हुआ, अपूर्व ज्ञान का भण्डार अंग्रेज सैनिकों की असभ्यता के कारण सदैव के लिए नष्ट हो गया।

झाँसी नगर के मध्य में एक बाग था, जो भिड़े का बाग कहलाता था। झाँसी के हजारों नागरिक, गोरे सैनिकों की लूट-मार अत्याचार के के कारण बाग में जाकर छिप गए थे।

गोरे सैनिक वहाँ भी उन पर अत्याचार करने पहुँच गए, नागरिकों ने उनके सेना नायक से दया की भिक्षा मांगी, सेना नायक सहृदय था। उसने बाग के फाटक में ताला लगाकर उन झाँसी के नागरिकों पर पहरा बैठा दिया।

इस प्रकार उस गोरे सहृदय सेनानायक ने झाँसी के हजारों नागरिकों के जीवन बचाए।

रात-दिन लूट-मार, अत्याचार से जनता त्राहि-त्राहि पुकारने लगी, शान्ति व्यवस्था स्थापित करने के लिए गोरे पदाधिकारियों ने बचे हुए सैनिकों को बुलाया।

हलवाईपुरे में प्रबल आग लगी हुई थी, किसी प्रकार न बुझाई जा सकी, तब दमकलों से वहाँ की अग्नि बुझाई गई। नगर के चारों ओर मरे हुए जीव-जन्तु पशु मनुष्यों के शव पड़े हुए थे।

सैकड़ों बैल, ऊँट, कुत्ते, घोड़े, हाथी मरे पड़े थे। शहर के बाहर गड्ढे खुदवा कर सफाई कर्मचारियों द्वारा उन्हें गड्ढों में दबा दिया गया।

शवों को जला दिया गया, नगर की सफाई का प्रबन्ध करवा कर, खाने-पीने की आवश्यक सामग्री की दुकानें खोली गईं। झाँसी नगरी से लूट का माल एकत्र करके उसकी नीलामी बोली गई।

हाथी, घोड़े, ऊँट और युद्ध की सामग्री ग्वालियर के राजा ने सस्ते दामों में खरीद ली। मूल्यवान वस्तुएँ और राजाओं ने मोल ले लीं।

वस्त्रों और बरतनों को भी नीलाम किया गया। झाँसी की

लूट से अंग्रेज सरकार को बहुत लाभ हुआ।

झाँसी के नागरिकों को, उन्हीं के लूटे हुए वस्त्र-धन लेकर दे दिए गए। बरतन-सामग्री नागरिकों ने धन देकर खरीद लिए।

मन्दिरों की मूर्तियों को बड़े-बड़े पदाधिकारी अंग्रेज लूटकर अपने देश ले गए थे। बहुत सी मूर्तियाँ सोने-चाँदी की थीं। विष्णु, गणपति जी की मूर्तियाँ, विभिन्न धातुओं की बनी हुई थीं।

सोने-चाँदी के अलंकारों से सजी हुई मूर्तियाँ अंग्रेज सेनानायक लूट कर ले गए, साथ में रखे हुए अलंकार भी लूट कर ले गए।

बचे हुए झाँसी के नागरिक विष का-सा घूँट पीकर अपनी लुटी हुई नगरी को फिर से बसाने के लिए आठ-आठ आँसू रोते हुए आ गए।

रानी लक्ष्मीबाई अपनी नगरी की दुर्दशा सुनते हुए काल्पी की ओर चली जा रही थी। कानपुर में नाना साहब पेशवा की भी पराजय हो चुकी थी। उससे बड़ी भारी हानि हुई थी।

क्रान्तिकारियों की विशाल सेना छिन्न-भिन्न हो गई थी, उनके सैनिक इधर-उधर भटकते फिर रहे थे। कानपुर जैसा केन्द्र हाथ से निकल जाने से नाना साहब बहुत निराश हुए। वे ब्रह्मावर्त (बिठूर) से भाग कर अवध में फतेहपुर चौरासी में आश्रय लेने आ गए। पराजित क्रान्तिकारी नेता यहाँ एकत्र होकर आगे के कार्यक्रम पर विचार करने लगे।

कानपुर के पतन के पश्चात लखनऊ पर अंग्रेजों की दृष्टि थी। सभी यह अनुभव कर रहे थे कि अंग्रेज सेना अब लखनऊ पर आक्रमण करेगी।

लखनऊ की सुरक्षा के लिए अंग्रेजी सेना के मार्ग में अधिक से अधिक कठिनाई उत्पन्न की जाए, क्रान्तिकारी यह योजना बना रहे थे।

कानपुर के युद्ध को बन्द न किया जाए, ताकि अंग्रेजी सेना अवध की ओर न बढ़ सके। यह सुझाव सभी क्रान्तिकारियों को ठीक लगा।

नाना साहब ने कानपुर-लखनऊ मार्ग पर अंग्रेजी सेनाओं को रोकने का भार संभाला था। अंग्रेजी सेना को लखनऊ की ओर बढ़ने से उन्होंने बलपूर्वक रोका था।

अंग्रेजी सेना दो तीन बार प्रयत्न करने पर भी लखनऊ की ओर न बढ़ सकी थीं।

कानपुर पर आक्रमण करने का उत्तरदायित्व तात्या टोपे ने संभाला था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विचार-विमर्श किया गया, क्रान्ति की बिखरी शक्ति को एकत्रित कर कानपुर की अंग्रेजी सत्ता को फिर से चुनौती दी जाए।

यमुना के उस पार उन्हें काल्पी उपयुक्त स्थान प्रतीत हुआ, काल्पी नगरी कानपुर से छयालीस (४६) मील की दूरी पर यमुना के दक्षिण तट पर बसी हुई थी।

झाँसी से इस काल्पी नगरी की दूरी लगभग १०२ मील थी। पौराणिक काल में इसे वेदव्यास की जन्म-भूमि कहलाने का गौरव प्राप्त था।

उद्योगों का प्रसिद्ध केन्द्र, व्यापार का महत्त्वपूर्ण स्थान होने के कारण उत्तर भारत में समृद्धशाली नगरी मानी जाती थी।

काल्पी का किला दृढ़ माना जाता था। इसके तीन ओर सुरक्षा दीवार बनी हुई थी। चौथी दिशा में यमुना नदी उसकी रक्षा कर रही थी। स्थान-स्थान पर गोलियाँ बरसाने के छेद बने हुए थे।

दीवारों पर तोपें जमाने के स्थान थे। किले में कई भवन थे, जिनके नीचे तहखाने थे। भवन के बाहर खुला मैदान था।

तात्या टोपे ने आस-पास के क्रान्तिकारियों को एकत्र करके शक्तिशाली सैनिक शक्ति एकत्र कर ली।

प्रयाग, फतेहगढ़, काशी, कानपुर आदि की पराजय होने के पश्चात काल्पी क्रान्तिकारियों की आशा का केन्द्र बना हुआ था।

बांदा के नवाब अली बहादुर, फर्रुखाबाद के नवाब तफज्जुल हुसेन, बानपुर के राजा मर्दन सिंह, शाहपुरा के राजा बखतबली, नरवर के राजा मान सिंह आदि अनेक राजा नवाब, जमींदार तात्या टोपे के झंडे के नीचे एकत्रित हो गए।

ग्वालियर की शिक्षित सेना, विद्रोही बंगाल की सेना काल्पी की क्रान्तिकारी सेना के प्रमुख भाग थे। तात्या टोपे ने इन सिपाहियों को पृथक-पृथक दलों में संगठित करके अंग्रेजी सेना के विद्रोही अनुभवी पदाधिकारियों को इन सैनिक दलों को शिक्षित करने का कार्य सौंपा था।

प्रतिदिन अंग्रेजी रीति के अनुसार अंग्रेजी आज्ञाओं का प्रयोग किया जाता था। कवायद करवाकर युद्ध की शिक्षा दी जाती थी।

काल्पी में विशाल सेना अंग्रेजों के विरुद्ध तैयार की जा रही थी। तात्या टोपे ने नाना साहब पेशवा को सन्देश भेजा था। क्रान्ति केन्द्र के सैनिक दल का नेतृत्व संभालें।

नाना साहब इस समय अवध और लखनऊ की ओर बढ़ने वाली अंग्रेज सेना को रोकने के लिए क्रान्तिकारी सेना के संगठन में लगे हुए थे।

उन्होंने अपने भतीजे रावसाहब को काल्पी भेज दिया, उन्हीं के नाम से सभी कार्य होने लगे। बुन्देलखण्ड के राजा-जमींदार सभी के नाम रावसाहब की ओर से घोषणा पत्र भेज दिए गए।

वह काल्पी आकर तत्या टोपे की सेना में सम्मिलित हो गए। काल्पी क्रान्ति केन्द्र बनकर अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए शक्ति संचय कर रहा था।

अनेक स्थानों में तोपें ढालने, गोले-गोलियाँ और बारूद तैयार करने के कारखाने खुल गए थे।

कारखानों में रात-दिन कार्य हो रहा था। इधर-उधर के नगरों से पीतल, गन्धक, सीसा, लोहा आदि मंगवाया जा रहा था। अनेक स्थानों में लुहार-बढ़ई कार्य कर रहे थे।

कारखानों में कुशल कारीगरों द्वारा त्रुटिहीन, गोले-गोलियाँ बनाए जा रहे थे।

विभिन्न आकारों की गोलियाँ क्रम से रखी जा रही थीं। तात्या टोपे कानपुर पर आक्रमण करना चाहते थे, पर उसके लिए अनुभवी शिक्षित सेना की आवश्यकता थी।

ग्वालियर में दो प्रकार की सेना थी। एक ग्वालियर नरेश की निजी सेना थी, जिसका व्यय ग्वालियर सरकार देती थी।

दूसरी अंग्रेजी सरकार की थी। उसका व्यय भी ग्वालियर सरकार करती थी। मेरठ, दिल्ली, कानपुर, झाँसी आदि स्थानों में होने वाली क्रान्ति की घटनाओं के समाचार जब ग्वालियर पहुँचे, तब उनमें भी हल-चल मच गई।

ग्वालियर की सहायक सेना ने विद्रोह करके कई गोरे अधिकारी मार डाले, कई अंग्रेजों ने महाराजा की शरण ली, महाराजा ने उन्हें आगरा भेज दिया।

रेजीडेण्ट मेक फर्सन ग्वालियर ही रहना चाहता था। उसे भय था, ग्वालियर नरेश भी क्रान्तिकारियों में सम्मिलित न हो जाए।

महाराजा ने उन्हें समझाया, ग्वालियर में उनका रहना संकट से खाली नहीं, तब वह दिनकरराव के हाथ में ग्वालियर की राजनीति सौंप कर आगरा चला गया।

इस समय आगरा में थोड़ी सेना थी, ग्वालियर में अधिक सेना थी। अंग्रेजों को भय था, कहीं यह शक्तिशाली सेना आगरा पर आक्रमण करके अंग्रेजों को हानि न पहुँचाए।

इस कारण रेजिडेण्ट ने महाराजा को सुझाव दिया, विद्रोही सिपाहियों को मुरार छावनी भेज दिया जाए। वह वहाँ विद्रोह न कर दे, इसलिए उन्हें हर माह वेतन देते रहना चाहिए।

तात्या टोपे को गुप्तचरों द्वारा सूचना मिली, ग्वालियर सेना-टुकड़ी क्रान्तिकारियों से मिलना चाहती है। सूचना सुनते ही तात्याटोपे ग्वालियर पहुँचे और सेनानायक से मिलकर सेना को अपने पक्ष में करके काल्पी ले गए।

अंग्रेजी सेना कानपुर लखनऊ पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ी चली आ रही थी। तात्या टोपे ने अचानक ही कानपुर पर आक्रमण कर दिया।

सेनापति बडहम युद्ध में पराजित हो गया। तात्याटोपे ने बडहम को हराकर कानपुर ब्रह्मावर्त पर अधिकार कर लिया।

२९

वीर तात्या टोपे ने बडहम को हराकर कानपुर ब्राह्मावर्त पर अधिकार कर लिया था। युद्ध सामग्री भी उन्हें बहुत मिल गई थी, पर यह विजय

अधिक समय प्रसन्नता न दे सकी ।

सेनापति कैम्पवेल लखनऊ की रेजीडेन्सी में घिरे हुए अंग्रेजों को घेरे से निकालकर कानपुर की ओर आया ।

क्रान्तिकारियों ने विजय की प्रसन्नता में एक भयंकर भूल कर दी थी । गंगापुल नष्ट नहीं किया था । गंगा के पुल से कैम्पवेल की सेना कानपुर में पहुँच गई और क्रान्तिकारियों पर आक्रमण करके उनकी विजय पराजय में बदल दी ।

कानपूर पर फिर से अंग्रेजों का अधिकार हो गया। तात्याटोपे काल्पी आ गए और उन्होंने चरखारी पर अधिकार कर लिया ।

रावसाहब ने एक घोषणा पत्र जमींदार, व्यापारियों के नाम प्रकाशित किया, जो जामींदर-व्यापारी हमें इस समय सहयोग देंगे हम उनका आभार मानेंगे ।

राज्य को ऋण के रूप में जो रुपया देंगे, उस पर कर भी नहीं लगेगा । जो जमींदार अनाज, दाल, गोलियाँ-बारूद और सामान के साथ हमें सहायता देंगे, उन्हें दो वर्षों तक लगान न देने की छूट रहेगी ।

माल का रुपया जमींदारों के लगान के खाते में जमा कर दिया जाएगा । जो जमींदार-व्यापारी अंग्रेजों से सहानुभूति रखेंगें, उन्हें दण्ड दिया जाएगा ।

जिस जमींदार की जमींदारी में लूटमार या डाका पड़ेगा, उसके लिए वही जमींदार उत्तरादायी माना जाएगा ।

जो साहूकार हमारे खजाने में एक लाख रुपया जमा करेंगे, उन्हें प्रहिमास दो प्रतिशत ब्याज मिलेगा, उनसे जब तक कर नहीं लिया जाएगा, जब तक उनके रुपये उन्हें नहीं मिलते ।

जो राजे, नवाब, विधर्मियों अंग्रेजों को हराने में हमें सहयोग देंगे, उन वीरों को अपनी सरकार जागीरें पद तथा पदवियाँ प्रदान करेगी ।

समीप के सभी राज्यों में घोषणा पत्र पहुँच चके थे । रानी लक्ष्मीबाई की काल्पी आने की सूचना भी पहुँच गई थी ।

रानी ने झाँसी से चलकर भाण्डेर थोड़ी देर विश्राम किया था । वह लगातार एक सौ दो मील तक घोड़ा दौड़ाती रही थी ।

इतनी लम्बी लगातार दौड़ के कारण रानी का स्वामीभक्त घोड़ा थक कर चूर हो गया था, पर अपनी स्वामिनी को उसने सुरक्षित काल्पी पहुँचा दिया।

जैसे ही रानी लक्ष्मबाई घोड़े से उतरी, घोड़ा गिर पड़ा। उसका तुरन्त ही उपचार कराया गया। कई दिन तक लगातार मालिश होती रही, तब कहीं घोड़े में उठने की शक्ति आई।

(कई लिखते हैं, घोड़ा उसी समय मर गया।)

रानी लक्ष्मीबाई काल्पी आ गई हैं, यह सामाचार सुनते ही राव-साहब ने उनके रहने की, भोजन-विश्राम आदि की व्यवस्था करवा दी। विश्राम करके प्रातःकाल रानी लक्ष्मीबाई रावसाहब से मिलने पहुँची।

उनका मन भरा हुआ था, झाँसी के संकट के समय पेशवा उनकी सहायता को नहीं पहुँच थे, इसी कारण झाँसी पराजित हो गई थी। रानी का मन उदास था।

रानी के पूर्वजों को पेशवा द्वारा जो तलवार दी गई थी, रानी ने वह तलवार रावसाहब के सामने रखते हुए कहा आपके पूर्वजों ने यह नंगी तलवार हमें दी थी।

हमारे पूर्वजों ने और मैंने, आपके प्रताप से इसका उचित उपयोग किया, अब आपकी कृपा और सहायता हमें प्राप्त नहीं है, अतः यह तलवार मैं आपको वापिस करती हूँ।

'बाई साहिबा, जिस समय आपको हमारी सहायता की आवश्यकता थी, उस समय मेरी सेना आपकी सहायता न कर सकी, इसका मुझे खेद है। रावसाहब ने रानी की ओर देखते हुए कहा, 'आपने जिस शूरवीरता से अंग्रेजी सेना से युद्ध किया, उसकी सभी प्रशंसा कर रहे हैं। हमें आपकी शूरवीरता पर गर्व है।'

हमारे सरदार आपकी तरह स्वाभिमानी और शूरवीर बन जाएँ तो हमारे उद्देश्य के सफल होने में कोई बाधा न आए। आप यह तलवार स्वीकार करें और पहले की तरह सहयोग देती रहें।

रानी ने तलवार ले ली, और अपने विश्राम-स्थल पर वापिस आ गई। रानी लक्ष्मीबाई झाँसी से काल्पी आ गई है, यह सूचना सुनते ही

क्रान्तिकारियों में उत्साह भर गया।

यह झाँसी की वीर रानी हमें सहयोग देने आई है जिसने बारह दिन तक लगातार अपनी शक्ति के बल पर शक्तिशाली अंग्रेजों से लोहा लिया था। सारे क्रान्तिकारी हर्ष में भर गए थे, उनके आत्मविश्वास को रानी के आने से और बल मिला था।

इस समय कालपी में विशाल सेना थी, आवश्यक युद्ध सामग्री थी। पर सर्वमान्य सर्वप्रिय नेता की कमी थी, जिसे क्रान्ति के सभी नेताओं का विश्वास प्राप्त हो।

इस समय काल्पी में दो ऐसे नेता थे, जो शक्तिशाली क्रान्ति केन्द्र का नेतृत्व कर सकते थे। एक रानी लक्ष्मीबाई और दूसरे तात्याटोपे।

रानी लक्ष्मीबाई स्त्री थीं, इस कारण स्वाभिमानी क्रान्तिकारी रानी को अपना नेता मानने को तैयार नहीं थे। तात्याटोपे वीर थे, उनमें संगठन की शक्ति थी। पर वह राजकुल के नहीं थे, इस कारण राजा नवाब उन्हें अपना नेता मानने को तैयार नहीं थे।

इस दुविधा, आपस के मतभेद, व्यर्थ के झगड़े ने रावसाहब को ही नेता बना दिया, पर रावसाहब में वह गुण विद्यमान नहीं थे, जो सर्व-गुण सम्पन्न नेता में होने चाहिए।

रानी लक्ष्मीबाई और तात्याटोपे साधारण सनिक अधिकारी बनाए गए, यह दोनों समय-समय पर रावसाहब को उचित परामर्श देते थे। पर अन्तिम निर्णय रावसाहब ही देते थे। जिसका परिणाम असफलता होता था।

काल्पी पहुँचते ही रानी लक्ष्मीबाई ने रावसाहब से प्रार्थना की थी, आप मुझे बड़ी सेना दे दें, ताकि झाँसी का युद्ध मैं जारी रखूँ। राव साहब ने रानी की शूरवीरता की प्रशंसा की, पर उन्हें शक्तिशाली बड़ी सेना नहीं दी।

रावसाहब अपने को अधिक ही बुद्धिमान समझते थे, इसी भ्रम ने राज्य का पासा क्या पलटा, इतिहास ही पलट दिया।

रावसाहब सैनिक कमान स्वयं ही अपने अधिकार में रखना चाहते थे। उन्होंने अपनी शक्तिशाली सेना की परेड कराई, सलामी ली,

उत्साहवर्धक भाषण दिया ।

और अंग्रेजों से युद्ध करने के लिए तात्याटोपे को, सैनिकों को तैयार करने का आदेश दिया । तात्याटोपे आदेश का पालन करके अंग्रेजों से लोहा लेने की तयारी करने लगे ।

झाँसी पर विजय प्राप्त करके ह्यू रोज शासन व्यवस्था संभालने में लगा था । तभी उसे सूचना मिली, क्रान्तिकारियों की विशाल सेना काल्पी में एकत्र हो गई है ।

गुप्तचरों द्वारा यह समाचार सुनकर ह्यू रोज को चिन्ता हुई, क्रान्ति कारी एकत्र होकर फिर से ह्यू रोज के विजय किए प्रान्त फिर से न ले लें ।

उसने झाँसी की शासन व्यवस्था कर्नल लिडेल को सौंपी और स्वयं पच्चीस अप्रैल सन १८५८ ईसवी को बड़ी भारी सेना लेकर काल्पी की ओर चल पड़ा ।

मार्ग में गुप्तचरों ने सूचना दी, शाहगढ़ और बानपुर के राजा भी काल्पी की ओर ही जा रहे हैं । उसने अपने मेजर को शाहगढ़, बानपुर के राजाओं को काल्पी जाने से रोकने लिए सेना देकर भेज दिया ।

ह्यू रोज की अंग्रेजी सेना, और बानपुर शाहगढ़ के राजाओं की सेना में भी भीषण युद्ध हुआ । जिनकी के राजा ने भी अंग्रेज के विरुद्ध बानपुर शाहगढ़ के राजाओं को सहयोग दिया ।

ह्यू रोज के सैनिक हार कर पीठ दिखाकर भाग गए । विजयी होकर शाहगढ़, बानपुर के राजा अपनी सेना सहित काल्पी पहुँच गए ।

ह्यू रोज मार्ग की बाधायें हटाता आगे की ओर बढ़ता चला जा रहा था । कोंच से दस मील दूर, लाहौरी किले के समीप ह्यू रोज पहुँच गया ।

क्रान्तिकारियों ने देखा, अंग्रेजी सेना काल्पी की ओर आ रही है, तब उन्होंने काल्पी के पश्चिम की ओर कोंच नामक स्थान पर उनका सामना करने का निर्णय किया ।

पूँछ और कोंच के बीच लगभग चौदह मील का अन्तर था । इस भाग में कई छोटे-छोटे किले व गढ़ी थीं । उन पर तात्याटोपे के सैनिकों का अधिकार था । तात्याटोपे ने पूंछ और कोंच के बीच के किले खाली करके कोंच में सारी सेना एकत्र करके वहीं मोरचे बना लिए, यह स्थान

युद्ध की दृष्टि से बहुत अच्छा था। यह तीन ओर जंगल से घिरा हुआ था।

बीच में कई मन्दिर थे, जो ऊंची-ऊँची दीवारों से घिरे हुए थे। क्रान्तिकारी सेना के लिए यह ऊँची दीवारें दृढ़ कोट का काम देती थीं।

इस युद्ध का संचालन, रावसाहब, बाँदा के नवाब, अली बहादुर ने किया था। तात्याटोपे उनकी आज्ञा पालन करने वाले सहायक की तरह थे।

ह्यू रोज ने क्रान्तिकारियों के दृढ़ मोर्चे देखकर चतुराईपूर्ण योजना बनाई, अपनी सेना को चार भागों में बाँट दिया, एक सैनिक दल जंगलों में छिपे क्रान्तिकारियों से मुठभेड़ के लिए भेजा।

दूसरा सैनिक दल मन्दिर में छिपे हुए क्रान्तिकारियों पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया। तीसरे दल को चौदह मील के चक्करदार मार्ग से जाकर क्रान्तिकारियों के पिछले भाग पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया।

चौथे सैनिक दल को अपने साथ लेकर ह्यू रोज क्रान्तिकारियों से लोहा लेने चल पड़ा। जंगल, मन्दिरों के सामने के मोर्चों पर युद्ध हुआ।

पहले अंग्रेज सैनिकों ने क्रान्तिकारियों पर आक्रमण करके उनके मोर्चों पर अधिकार कर लिया। पर उसी समय पेशवा की सेना क्रान्तिकारियों की सहायता के लिए पहुँच गई।

भयंकर युद्ध हुआ, क्रान्तिकारियों ने अंग्रेज सैनिकों को हराकर उनसे अपने मोर्चे छीन लिए।

उसी समय चौथे दल के मेजर ओर ने क्रान्तिकारी सेना के पीछे से अचानक आक्रमण कर दिया। चारों ओर से क्रान्तिकारी सैनिकों पर आक्रमण होने लगा।

क्रान्तिकारी पीछे हटने लगे, अंग्रेजी सेना आगे तो न बढ़ सकी, पर क्रान्तिकारियों की चार तोपें उसके हाथ आ गईं।

कोंच में क्रान्तिकारियों की हार हुई, उससे सेना के संगठन में गहरा धक्का लगा। घुड़सवार सैनिक और दूसरे सैनिक कोंच की हार का आरोप एक दूसरे पर लगाने लगे। तात्याटोपे पर भी गंभीर आरोप लगाए गए।

पर वास्तव में हार का असली कारण रावसाहब की अनुभवहीनता

थी। उनमें दूरदर्शिता का अभाव था। रानी लक्ष्मीबाई और तात्याटोपे उस युद्ध में साधारण सैनिक पदाधिकारी थे।

कोंच की हार के पश्चात क्रान्तिकारियों में आपसी कलह आरम्भ हो गई थी। वह हार का कारण एक दूसरे को बताकर झगड़ रहे थे।

तात्याटोपे इस व्यर्थ के गृह कलह से बहुत दुखी हुए और काल्पी से रवाना होकर वहाँ से चार मील दूर चुरखी नामक स्थान पर पहुँचे।

उनके माता-पिता-भाई परिवार के सदस्य एक सम्बन्धी के यहाँ ठहरे हुए थे। उन सबसे मिलकर तात्याटोपे ग्वालियर जा पहुँचे। वहाँ गुप्तरूप से ग्वालियर महाराज के सैनिक पदाधिकारियों से मिल कर उन्हें अपने पक्ष में करके वह वहाँ से वापिस चले गए।

क्रान्तिकारियों की आपस की कलह से रानी लक्ष्मीबाई भी दुखी थीं, जब उन्होंने सुना, तात्याटोपे भी इस गृह कलह के कारण काल्पी से चले गए, तब तो रानी को बहुत आघात पहुँचा।

काल्पी की रक्षा के लिए तात्याटोपे जैसे अनुभवी सेनापति की आवश्यकता थी। रानी ने रावसाहब को भी समझाया।

कोंच में हार का कारण अनुभवहीनता थी, सेना का संचालन जब तक योग्य अनुभवी पदाधिकारियों को नहीं सौंपा जाएगा, विजय की आशा करना व्यर्थ है।

रावसाहब ने रानी लक्ष्मीबाई की बातें सुनी, पर युद्ध के संचालन का अधिकार रानी लक्ष्मीबाई या तात्याटोपे को देने को तैयार न थे।

तात्याटोपे के चले जाने के पश्चात उन्होंने प्रधान सेनापति का भी उत्तरदायित्व अपने हाथों में ले लिया।

अपने नेताओं की फूट के कारण सैनिक भी निराशा से भर गए।

रावसाहब ने सेना के अधिकारियों की एक सभा की, उसमें धर्म-रक्षा के लिए अंग्रेजों से युद्ध के लिए आग्रह किया।

सेना के अधिकारियों के हाथों में यमुना जल देकर शपथ दिलाई, अँग्रेजों से काल्पी की रक्षा के लिए वे अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे।

ह्यूरोज के पास भी काल्पी के नेताओं की आपस की फूट के समाचार पहुँच चुके थे। कोंच की हार के पश्चात क्रान्तिकारियों में जो

ढीलापन आ गया था, वह उससे पूरा लाभ उठाना चाहता था।

पर रावसाहब भी सावधान होकर युद्ध की तैयारी में लगे हुए थे। कोंच से सीधी सड़क पर एक हजार पैदल सिपाही, चार तोप, छः सौ घुड़सवारों के साथ अंग्रेजी सेना से लोहा लेने रावसाहब तैयार खड़े थे।

जलालपुर से आने वाली सड़क पर, रावसाहब ने दो तोपों के साथ एक सेना नियुक्त कर दी थी। जालौन होकर आने वाली सड़क पर सात सौ विलायती सैनिक, एक तोप के साथ तैनात थे।

काल्पी नगर की रक्षा के लिए, ग्वालियर की सेना के दो हजार सिपाही नियुक्त किए गए थे।

ह्यूरोज के गुप्तचर सब सूचना उसे पहुँचाते रहते थे। उसने उन सड़कों पर आगे बढ़ने से संकट अनुभव किया और काल्पी से छः मील की दूरी पर गलौली नामक स्थान पर अंग्रेगी सेना का पड़ाव डाला।

समीप ही ग्वालियर की सेना का पड़ाव था। अंग्रेजी सेना ने गलौली नामक स्थान पर पड़ाव डाला है, सुनते ही ग्वालियर के क्रान्तिकारी सैनिकों ने छापे मारने आरम्भ कर दिए। अंग्रेज सैनिक घबराने लगे।

क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी सेना के यातायात मार्गों में भी बाधा डालने का यत्न किया, पर सफलता नहीं मिली।

३०

गलौली का युद्ध काल्पी के भाग्य का निर्णय करने वाला था। दोनों सेनाओं के वीर बड़े उत्साह से उसमें भाग लेने की तैयारी कर रहे थे।

जिन कारणों से पहले हार हुई थी, उनको ध्यान में रखकर क्रान्तिकारी नेताओं ने युद्ध का संचालन अत्यन्त योग्यता से किया।

क्रान्तिकारी नेताओं ने योजना बनाई, पहले अंग्रेजी सेना के बाएँ भाग पर प्रबल आक्रमण किया जाए, जिससे उसकी रक्षा को दाहिनी ओर की सेना को, अपना स्थान छोड़कर शीघ्रता से आना पड़े।

दूसरी सेना की टुकड़ी, उसी अवसर पर दाहिने भाग पर जोरदार

आक्रमण करके उसे हरा दे।

बाएँ भाग पर आक्रमण करने का भार रावसाहब, और बाँदा के नवाब ने अपने ऊपर लिया। दाहिने भाग पर आक्रमण करने का उत्तरदायित्व रानी लक्ष्मीबाई को दिया गया।

ह्यूरोज भी समझ गया था, काल्पी का यह युद्ध अधिक भयंकर होगा, उसने भी अपनी सहायता के लिए मैबसवेल को सेना सहित आने को लिख दिया।

प्रातःकाल आठ बजते ही रावसाहब, और बाँदा के नवाब ने योजना के अनुसार अंग्रेजी सेना के बाएँ भाग पर प्रबल आक्रमण कर दिया।

अंग्रेजी सैनिकों ने वीरता से उसका उत्तर दिया, पर अनेक शूर-बीर मृत्यु की गोद में सोने लगे, तब उनका प्रत्याक्रमण धीमा पड़ गया।

अंग्रेजी सेना के दाहिने भाग के सैनिकों को उनकी रक्षा के लिए आना पड़ा।

दस बजते ही रानी लक्ष्मीबाई अपनी योजनानुसार पैदल और घुड़-सवार सैनिकों को लेकर युद्ध स्थल पर आ गई।

गर्मी के कारण, अंग्रेज सैनिक व्याकुल हो गए। रानी के लाल वेष-भूषा पहने सैनिकों ने अंग्रेज सैनिकों पर जोरदार आक्रमण कर दिया।

उनकी तलवारें अंग्रेज सैनिकों को मृत्यु की गोद सुलाने लगीं। अंग्रेजी तोपखाने ने रानी के सैनिकों पर गोले बरसाने आरम्भ कर दिए।

गोलाबारी से रानी के कई वीर सैनिक मृत्यु की गोद सो गए, रानी लक्ष्मीबाई क्रोध में भर अपने घुड़सवार सैनिकों सहित तोपखाने गई।

अंग्रेज सैनिकों ने मार्ग में ही उन्हें रोकने का यत्न किया, पर रानी लक्ष्मीबाई घोड़े की लगाम अपने मुँह में दबाए अपने दोनों हाथों में तलवार लिए मार्ग रोकने वाले अंग्रेज सैनिकों को गाजर मूली की तरह काटती तोपखाने की ओर चली जा रही थी।

बिजली की गीत से रानी तोपखाने पर पहुँच गई और रोकने वालों को यमपुर पहुँचाने लगी। उनके रौद्र रूप और भयानक प्रहार से घबरा कर अंग्रेज सैनिक भागने लगे।

तोपखाने के गोरे तोपची अपनी तोपों को छोड़ कर भागने लगे। ऐसा प्रतीत होता था, अंग्रेजी सेना रानी का सामना न कर सकेगी। ह्यू रोज अपने सैनिकों को भागते देखकर घबरा गया।

उसने तुरन्त ही मैक्सवेल को सहायता लिए कहलाया, मैक्सवेल ने सूचना पाते ही तेज चाल वाली वीर ऊँट सैनिकों की सेना भेज दी।

ऊँट सैनिकों के आते ही पासा पलट गया, ऊँट सैनिकों ने थकी हुई क्रान्तिकारी सेना पर जोरदार आक्रमण किया, इससे जीती बाजी उनके हाथ से निकल गई।

थकी हुई क्रान्तिकारी सेना ऊँट सैनिकों के प्रबल आक्रमण को सहन न कर सकी और भागने लगी।

डेढ़ सौ ऊँट सवारों ने आकर, क्रान्तिकारियों की जीती हुई बाजी पराजय में बदल दी। इसका क्रान्तिकारियों को बहुत दुःख था।

काल्पी नगर में जब यह सूचना पहुँची, क्रान्तिकारी हार गए, तब दुष्ट मनुष्यों ने घरों में घुस कर लूटना आरम्भ कर दिया। अंग्रेजी सेना मोरचे जीत कर नगर में घुस आई।

साहूकारों को मारपीट कर लूट लिया गया, अनाथ स्त्रियों की दुर्दशा की गई, क्रान्तिकारी सेना के भागने से काल्पी पर संकट आ गया।

अंग्रेजों ने भागती हुई क्रान्तिकारी सेना का पीछा करके, आठ तोपें छीन लीं, किले में पन्द्रह तोपें मिलीं, एक तोप ग्वालियर सहायक सेना की मिली, जो आठ पौण्ड का गोला फेंकती थी।

काल्पी के किले में अंग्रेजों को बड़ा भारी शस्त्र भण्डार मिला, तीन सौ पीपे बारूद, नौ हजार गोलियाँ, बन्दूकों की पेटियाँ, अनेक प्रकार के नए पुराने औजार, नए पुराने खेमे, अनेक प्रकार की युद्ध सामग्री मिली।

नगर में तोपें ढालने के चार कारखाने भी मिले, तीन पीतल की तोपें यहाँ मिली, जो इन्हीं कारखानों में बनाई गई थीं।

काल्पी में दो लाख रुपयों के लगभग का सामान अंग्रेज सैनिकों को मिला। एक गोरे सैनिक को एक पेटी मिली, जिसमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का महत्त्वपूर्ण पत्र व्यवहार रखा हुआ था।

गलौली की पराजय ने क्रान्तिकारियों के मनोबल को तोड़ दिया।

क्रान्तिकारी रातोंरात, दो-दो-चार की टोलियों में काल्पी छोड़ गए।

प्रातःकाल अंग्रेजों को पता लगा उन्हें आश्चर्य हुआ क्रान्तिकारी चुपचाप किस मार्ग से चले गए, गुप्तचरों को भेजा गया, तब पता लगा क्रान्तिकारी जालौन मार्ग से चले गए हैं।

अंग्रेजी सेना ने उनका पीछा करने का यत्न किया, पर क्रान्तिकारी पकड़े नहीं जा सके। रानी लक्ष्मीबाई भी रात को ही रावसाहब के साथ काल्पी छोड़ कर चली गई थीं।

जालौन होते हुए वह चुर्खी पहुँची, यहाँ वह तात्याटोपे से मिलने के लिए आई थी।

तात्याटोपे और उनका परिवार वहाँ से पहले ही चला गया था। रानी, रावसाहब, गोपालपुर की ओर चल पड़े। काल्पी से निकलने से पहले बचे हुए क्रान्तिकारियों ने गोपालपुर में एकत्र होने की योजना बना ली थी।

रानी लक्ष्मीबाई और रावसाहब के पहुँचते ही बाँदा के नवाब भी अपने परिवार सहित गोपालपुर पहुँच गए। अनेक क्रान्तिकारी सैनिक व तात्याटोपे भी वहाँ आ गए।

क्रान्तिकारियों के लिए यह समय बहुत ही संकटपूर्ण था। भारत के सभी महत्त्वपूर्ण केन्द्र उनके हाथ से निकल चुके थे।

दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, झाँसी तो पहले ही अंग्रेजों के अधिकार में आ चुके थे। क्रान्तिकारियों का काल्पी केन्द्र भी उनसे छिन चुका था।

मध्यभारत, बुन्देलखण्ड, दोआब, सागर, नर्मदा विभाग, अवध, रुहेलखण्ड, दिल्ली आदि स्थानों पर अंग्रेजी सेनाओं का अधिकार हो चुका था।

अब उनके पास न युद्ध सामग्री थी न विशाल सेना, तात्याटोपे की बड़े यत्न से संग्रह की गई, युद्ध सामग्री, काल्पी में अंग्रेजों के हाथ लग चुकी थी।

अब ऐसा भी कोई स्थान नहीं था, जहाँ वे सुरक्षा और निश्चिन्तता से रह सकें।

ह्यूरोज अंग्रेजी सेनाओं को लेकर क्रान्तिकारियों को नष्ट करने पर लगा था। राजपूताने से एक सेना ह्यूरोज की सहायता के लिए आ गई।

विटलाक, बाँदा को विजय कर कर्वी के पेशवाओं को लूटकर काल्पी आ पहुंचा था।

सभी क्रान्तिकरी चिन्तित थे, रावसाहब ने गोपालपुर एकत्र हुए सभी क्रान्तिकारी नेताओं की एक सभा बुलाई···इस सभा में रानी लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे, ब्रह्मावर्त का पूर्व थानेदार मोहम्मद इशहाक, ग्वालियर के मोरोपन्त रामराव देशमुख, प्रत्येक विद्रोही सेना का एक प्रतिनिधि, दिल्ली की सेना के ब्रिगेडियर जनरल गौरीशंकर पाँचवी सेना के वर्दी मेजर आदि उपस्थित थे। कई सभासदों ने राय दी, हमें बुन्देलखण्ड जाना चाहिए, वहाँ फिर से क्रान्ति की ज्वाला को फैलाना चाहिए। इस सुझाव का कई क्रान्तिकारियों ने विरोध किया।

उन्होंने कहा, 'बुन्देलखण्ड क्रान्तिकारियों के लिए सुरक्षित स्थान नहीं रहा है। वहाँ अंग्रेजी सत्ता स्थापित हो चुकी है। चारों ओर अंग्रेजी सेनाओं की टुकड़ियाँ फैली हुई हैं। बुन्देलखण्ड के ठाकुर भी अब उनका साथ देने को तैयार होंगे या नहीं, यह भी सन्देह है।

कइयों का विश्वास था दक्षिण की ओर बढ़ा जाए, महाराष्ट्र पहुँच कर पेशवा के नाम पर क्रान्तिकारियों को एकत्र किया जाए, पर दक्षिण पहुँचना सरल काम नहीं था।

उसके लिए युद्ध सामग्री तथा विशाल सेना की आवश्यकता थी। अंग्रेज सैनिक सावधान थे, वह मार्ग में बाधा अवश्य डालते।

रानी लक्ष्मीबाई ध्यान से सबके सुझाव सुन रही थी। उसने सभी सभासदों, क्रान्तिकारियों की ओर देखते हुए कहा, 'मैं आप सबको ग्वालियर चलने का सुझाव देती हूँ, ग्वालियर पर अधिकार करके, हमें सेना अस्त्र शस्त्र और धन भी मिल सकेगा, उससे हम फिर से शक्ति संग्रह करके अंग्रेजों से लोहा ले सकेंगे।

रावसाहब ने उस सुझाव को स्वीकार करते हुए सभी क्रान्तिकारियों से आगह किया, हम सबको तुरंत ही ग्वालियर पहुँच जाना चाहिए। वहाँ सिंधिया के सैनिकों की धार्मिक देशप्रेम भावनाओं को जगाना चहिए।

यदि ग्वालियर नरेश इस कार्य को सहन न कर सके, तब हमें बलपूर्वक राजधानी पर अधिकार करके, ग्वालियर की ऊँची पहाड़ी से अंग्रेजी

सत्ता से लोहा लेने की योजना बनानी चाहिए।

सारे सभासद क्रान्तिकारी रानी लक्ष्मीबाई के सुझाव को मान चुके थे, वे रावसाहब के साथ ग्वालियर चलने को तैयार हो गए। निराश मन में आशा का संचार हो गया।

उस समय ग्वालियर की गद्दी पर जयाजीराव शिन्दे थे।

जयाजीराव बालिग नहीं थे। उनकी माता बायजाबाई और दीवान दिनकरराव राज्य की व्यवस्था संभाल रहे थे।

जयाजीराव को दीवान दिनकरराव के नियन्त्रण में रहना पड़ता था। जयाजीराव जब नाबालिग थे, दिनकरराव का नियन्त्रण सहन कर रहे थे। बड़े होते ही उनमें भी स्वतन्त्रता की ललक जाग उठी।

राष्ट्र को स्वतन्त्र करने के लिए क्रान्तिकारी तन-मन-धन की भेंट चढ़ा रहे थे। जयाजीराव भी रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब पेशवा की वीरगाथा, देशप्रेम, स्वतन्त्रता के लिए सुख ऐश्वर्य तथा जीवन की भेंट चढ़ाने की गाथाएँ सुन चुके थे।

उनके तरुण हृदय में भी, नानासाहब पेशवा, रानी लक्ष्मीबाई की तरह क्रान्ति का पक्ष लेकर अंग्रेजी राज्य को मिटा देने की प्रबल इच्छा थी। पर दीवान दिनकरराव पूर्णरूप से अंग्रेजों के समर्थक थे। वह महाराजा जयाजीराव को भी अंग्रेजों का साथ देने को कहते थे।

उनका विश्वास था, अंग्रेज शक्तिशाली हैं। क्रान्तिकारी इनसे विजयी नहीं हो सकते, यदि हम क्रान्तिकारियों को सहयोग देंगे तब हम भी संकट में फँस जाएँगे।

जयाजीराव सोचते रह जाते, क्रान्तिकारियों के साथ दें···या नहीं, ग्वालियर के कई सरदार दिनकरराव के विचारों से सहमत थे। बाबा-साहब माहुरकर, बाबा बलवन्तराव जिन्सी वाले।

गोपालपुर से चलकर क्रान्तिकारी सेना दबोह नामक गाँव पहुँच गई। रावसाहब ने एक पत्र महाराजा जयाजीराव को लिखा और दूसरा पत्र उनकी माता बायजाबाई के नाम भेजा।

रावसाहब महाराजा से मित्रता रखना चाहते थे। और स्वतन्त्रता की भावना से पूर्ण पत्र उन्होंने इसी कारण महाराजा और राजमाता को

भेज कर, मित्रता के लिए हाथ बढ़ाया था।

दूत पत्र लेकर महाराजा के पास पहुँचा, उन्होंने पत्र लेने से इन्कार कर दिया, राजमाता बायजाबाई ने भी पत्र नहीं लिया। दूत दोनों पत्र वापिस लेकर आ गया।

रावसाहब का दल सियौली नामक गाँव के निकट पहुँचा और तम्बू डेरे डाल कर विश्राम करने लगा। उसी समय ग्वालियर राज्य के सूबेदार बिहारीलाल रावसाहब के समीप आया, और प्रणाम करके बोला, 'महाराजा की आज्ञा है···आप सब शीघ्र ही यहाँ से चले जाएँ, वरना हमारी सेना आप पर आकमण कर देगी।'

'पर हम तो दक्षिण जाने के लिए इधर आए हैं' रावसाहब ने सूबेदार की ओर देखते हुए कहा, 'आपके महाराजा को इससे क्या कठिनाई होगी।'

'दक्षिण जाने का मार्ग इधर से नहीं है पेशवा साहब···' सूबेदार बिहारी लाल ने रावसाहब से कहा, 'दक्षिण जाने का दूसरी ओर से मार्ग है।'

'हमें मालूम है सूबेदार साहब', रावसाहब व्यंग्य से उसकी ओर देखते हुए बोले, 'इस समय हमें युद्ध सामग्री धन, और वस्त्रों की आवश्यकता है, हम मुरार में रुक कर आगे फूल बाग की ओर चले जाएंगे।'

आप फूलबाग क्या उसका एक पेड़ भी न देख पाएंगे क्योंकि हमारी सेना इधर आ रही है, पेशवा साहब।'

'सूबेदार साहब, यह धमकी किसी और को देना', रावसाहब क्रोध से घूरते हुए सूबेदार बिहारी लाल से बोले, 'फूलबाग मेरा है, राज्य और सेना भी मेरी है, महाराजा, उनका दीवान या चार-पाँच सरदार हमारा क्या बिगाड़ लेंगे, प्रातःकाल हम यहाँ से जाएंगे।'

सूबेदार चला गया, रावसाहब ने महाराजा जयाजीराव और राज-माता को फिर पत्र लिखे, 'मैं बारह बजे यहाँ पहुँच गया हूँ, अमीन गाँव से सांडनी सवार द्वारा आपको पत्र भेजे मैं ग्वालियर आ पहुँचा, पर पत्रों के उत्तर नहीं मिले।

मेरे पास २०,००० सेना है। हमें अभी तक रसद नहीं मिली। आपके कर्मचारी ने रसद देने से मना कर दिया। जिससे हमें बड़ी कठिनाई हो रही है। मैं कल ग्वालियर आकर आपसे मिलूँगा।'

पत्रों का उत्तर उन्हें नहीं मिला, सियोली गांव में रावसाहब ने अपनी सेना की परेड की, पाँच सौ घुड़सवार, पच्चीस सौ पैदल सवार, एक हजार बिलायती सैनिक थे। महाराजा ने अपने भाषण में कहा—"हम लोग ग्वालियर जा रहे हैं, किसी को लश्कर में नहीं घुसना है। सम्भव है ग्वालियर के सैनिकों से आपका झगड़ा हो जाए।

३१

ग्वालियर से छः मील दूर, बड़ा गाँव, क्रान्तिकारी सेना पहुँच गई। यह सूचना मिलते ही महाराजा जयाजीराव ने क्रान्तिकारी सेना के शक्ति-बल जानने के लिए अपने कर्मचारी पुरुषोत्तमराव और कामराज को भेजा।

वे रावसाहब से मिले, रावसाहब ने उन्हें बताया हम यहाँ लड़ने के लिए नहीं आए हैं, थोड़े दिन आराम करेंगे, फिर रसद और धन लेकर दक्षिण की ओर चले जाएंगे, हमारे पास ग्वालियर से दो सौ पत्र हमें बुलाने के लिए भेजे गए थे।

पुरुषोत्तम राव रावसाहब से बातें करके महाराजा साहब को रावसाहब और उनकी सेना के विषय में बताने को रात्रि के समय पहुँचे।

महाराजा, दीवान, और पदाधिकारियों की बैठक समाप्त हो चुकी थी। दिनकर राव तथा उनके साथियों का सुझाव था अंग्रेजों को सूचना भेज दी जाए, जब तक अंग्रेजी सेना काल्पी से यहाँ हमारी सहायता को आए, उस समय तक रावसाहब को धन, रसद देकर कुछ समय तक उलझाए रखना चाहिए।

मुरार के आगे मोरचे बना लेने चाहिए, ताकि रावसाहब की सेना को आगे बढ़ने से रोका जा सके।

पुरुषोत्तम राव जिस समय महाराजा से मिलने पहुँचे, वह दीवान और पदाधिकारियों के बताए सुझाव पर सोच रहे थे।

पुरुषोत्तमराव ने रावसाहब की सेना शक्ति कम बताते हुए कहा, रावसाहब की सेना दुर्बल है, हमारे थोड़े से सैनिक उन्हें भगा सकते हैं।

महाराजा ने सोचते हुए रावसाहब की सेना से टक्कर लेने का निर्णय कर लिया। दो हजार घुड़सवार, पाँच हजार पैदल सैनिक लेकर महाराजा जयाजीराव, रावसाहब से मुठभेड़ करने चल पड़े।

मुरार से दो मील आगे बढ़कर, जयाजीराव ने मोरचे बनाए, मोरचे मध्यभाग का दाहिना भाग अप्पा शिन्दे, केशवराव लग्गर, वायां भाग बापू पवार की अधीनता में था।

मोरचे के पीछे महाराजा जयाजीराव वहाँ उपस्थित रहकर सारा संचालन कर रहे थे। रावसाहब को यह सूचना मिली, महाराजा जयाजीराव उनसे लोहा लेने आए हैं, तब उन्हें विश्वास नहीं हुआ, तोपों से गोले छूटे, तब भी वह यह समझे, ग्वालियर की सेना उनके स्वागत में सलामी दे रही है।

थोड़ी देर में ही उनकी सेना पर गोले बरसने लगे। रानी लक्ष्मीबाई संकट काल को समझ गई, गोलों के छूटने से कई सैनिक घायल हो गए और कई घबराकर इधर-उधर भागने लगे।

सारी सेना में हलचल मच गई, रानी लक्ष्मीबाई अपने घोड़े पर सवार होकर, अपने वीर सैनिकों को लेकर तोपचालकों की ओर चल पड़ी।

तोपों के गोले अडडडधम, फटाफट शब्द करते हुए आग उगल रहे थे। बहुत से सैनिक घायल होकर छटपटा रहे थे। पर वीर रानी लक्ष्मीबाई तोपों के गोलों की चिन्ता न करते हुए आगे बढ़ी जा रही थी।

उसने आगे बढ़कर तोपचियों पर आक्रमण कर दिया, महाराजा के तोपची (गोलन्दाज) रानी की वीरता से घबराकर तोपें छोड़कर भाग गए। रानी ने उन तोपों पर अधिकार कर लिया।

महाराजा की अंगरक्षक मराठी सेना, रानी से लोहा लेने आगे बढ़ी। रानी ने वीरता से सामना किया, मराठी सेना पीठ मोड़कर भाग गई।

महाराजा की सेना के मध्य और वाएँ भाग के सैनिक अधिकतर अवध के रहने वाले थे। रानी की सेना जैसे ही उनसे लोहा लेने आगे बढ़ी, तब दोनों ओर की सेनाओं ने नारे लगाए और हाथ मिलकर गले मिले।

महाराजा जयाजीराव यह दृश्य देखकर घबरा गए और मैदान छोड़

कर भाग गए। ग्वालियर उनके लिए अब सुरक्षित नही रह गया था। अपने कई कर्मचारियों को अपने साथ लेकर जयाजीराव धौलपुर पहुँच गए।

फिर कुछ सोचकर आगरा अंग्रेज पदाधिकारियों के पास चले गए। दीवान दिनकरराव अपने कई सरदारों को साथ लेकर आगरा आ गए।

क्रान्तिकारियों ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। रावसाहब बड़ी धूम-धाम से ग्वालियर पहुँचे।

ग्वालियर की सेना ने तोपों की सलामी दी। ग्वालियर की जनता ने सड़क के दोनों ओर खड़े होकर जयघोष करते हुए रावसाहब का स्वागत किया।

रावसाहब महाराजा के महल में रहने लगे। रानी लक्ष्मीबाई लश्कर के पास नवलखा बाग में रहने लगी। बाँदा के नवाब ने अपने रहने के लिए दिनकरराव राजवाड़े का बाड़ा पसन्द किया।

तात्याटोपे नगर में नहीं रहे, वह अपनी सेना के साथ कंपू में ही रहने लगे। ग्वालियर में प्रवेश करते ही क्रान्तिकारियों ने रेजीडेन्सी पर आक्रमण करके उसे लूट लिया, फिर उसमें आग लगा दी।

अंग्रेजों के पक्षपाती माहुरकर और बलवंतराय आदि सरदारों के मकान लूट कर आग लगा दी। लूटमार की सूचना सुनकर रावसाहब ने आदेश दिया।

'नगर में कोई लूटमार नहीं करेगा, यदि किसी ने यह आदेश नहीं माना तो उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा।' कई स्थानों पर पहरे बैठा दिए गए। जिसके कारण ग्वालियर में लूटमार नही हुई।

कई क्रान्तिकारी बन्दीखाने पहुँच गए। बन्दीखाने के फाटक खोलकर सारे बन्दियों को मुक्त कर दिया।

महाराजा जयाजीराव ने शेखरवारा के खरगजीतसिंह, डुंगरसिंहशाह बख्तावरसिंह आदि को विद्रोह के अपराध में बन्दी बना दिया था।

क्रान्तिकारियों ने उन्हें मुक्त करके सेना में उच्चपदाधिकारी बनवा दिया। किले पर अधिकार करने के लिए तात्याटोपे ने सेना की एक टुकड़ी भेजी, किले की रक्षक सेना क्रान्तिकारियों की पक्षपाती थी।

किले के सूबेदार बलदेवसिंह, नायब सूबेदार अनंतराम ने क्रान्तिकारी सेना के आते ही फाटक खोलकर उनका स्वागत किया।

ग्वालियर के कई मनुष्यों ने पत्र लिखकर ग्वालियर की घटनाएँ, सूचनाएँ, महाराजा और अंग्रेजों को आगरे भेजने का प्रयत्न किया, पर सफल न हो सके। क्योंकि क्रान्तिकारियों ने विभिन्न मार्गों पर पहरेदार नियुक्त कर रखे थे, जो ग्वालियर से बाहर जाने वाले विभिन्न मार्गों पर जाने वाले मनुष्यों पर निगाह रखते थे।

पहरेदारों ने महाराजा और अंग्रेजों को लिखे हुए पत्र-वाहकों को पकड़ लिया। जिन नागरिकों ने यह पत्र लिखे थे, उन्हें मृत्यु दण्ड दिया।

रावसाहब ने महाराजा जयाजीराव और राजमाता वायजाबाई से मित्रता का सम्बन्ध रखना चाहा, पर उन्होंने विदेशी अंग्रेजों से मित्रता स्वीकार की, अपने देशवासी स्वतन्त्रता धर्म प्रेमी रावसाहब का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।

महाराजा जयाजीराव शिन्दे के शासन काल में जैसा शासन प्रबन्ध था, रावसाहब ने उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया। जो पुराने अधिकारी रावसाहब पेशवा की अधीनता में कार्य करने को तैयार हुए, उन्हें उनके उसी पद पर रहने दिया।

कई अधिकारियों के ग्वालियर से भाग जाने के कारण उनके स्थान रिक्त हो गए थे, रावसाहब ने उन स्थानों पर नए पदाधिकारियों की नियुक्ति कर दी।

दीवान दिनकर राव के रिक्त स्थान पर रामराव गोविन्द देशमुख दीवान पद पर नियुक्त किए गए। तात्याटोपे सेनापति बनाए गए।

अमरचन्द भाटिया कोषाध्यक्ष नियुक्त किए गए। मोरोपन्त सहायक कोषाध्यक्ष बनाये गए।

जयाजीराव के सम्बन्धी रामराव पवार ने पेशवा की अधीनता में काम करना स्वीकार कर लिया। उन्हें रसद विभाग का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया गया।

ग्वालियर पर अधिकार होते ही तात्याटोपे ने सेना का पुनर्संगठन आरम्भ कर दिया। जयाजीराव शिन्दे के जो सैनिक अधिकारी क्रान्ति

सेना में काम करने को तैयार थे, उन्हें सेना में उच्च पद दे दिए गए।

महाराजा जयाजीराव के विश्वसनीय भाऊ गायकवाड, चिमणराव को सेना में उत्तरदायित्वपूर्ण पद दिए गए।

इन्हीं की सहायता से तात्याटोपे ने सेना में नई भरती आरम्भ की। गावों में सैनिक भरती करने के लिए कर्मचारियों को भेजा गया।

प्रत्येक जागीरदार को आदेश दिया गया। वह कम से कम पच्चीस जवानों को सेना के लिए भेजे। इस प्रकार तात्याटोपे ने थोड़े समय में ही एक बड़ी सेना तैयार कर ली।

विद्रोही सेना के शिक्षित पदाधिकारियों को नए भरती किए जवानों को सैनिक शिक्षा देने का और कवायद कराने का काम सौंपा गया।

जयाजीराव शिन्दे सरकार के कोषाध्यक्ष अमरचन्द भाटिया ने ग्वालियर राज्य का सारा खजाना रावसाहब को सौंप दिया।

रावसाहब पेशवा को सेना, उनके साथियों के रहने की तथा रसद व अन्य आवश्यक सामग्री की व्यवस्था का भार भी सौंपा गया।

खजाना मिलते ही रावसाहब ने सबसे पहले ग्वालियर की सेना के सिपाहियों को तीन-तीन मास का वेतन दे दिया और प्रत्येक सिपाही को दो-दो मास का वेतन परितोषिक रूप में दिया गया।

सेना के वेतन और पारितोषिक में लगभग नौ लाख रुपये खर्च हो गए। साढ़े सात लाख रुपया रावसाहब ने अपनी सेना में बाँट दिया।

बीस हजार रुपये रानी लक्ष्मीबाई को दिए गए। साठ हजार रुपये बाँदा के नवाब को भेंट किए गए।

शिन्दे राज परिवार की महिलाओं के पाँच सौ छत्तीस रत्न, शिन्दे पायगा (घुड़साल) से अठारह बढ़िया घोड़े, ग्यारह हाथी, कई ऊँट रावसाहब ने अपने लिए ले लिए।

जो सरदार महाराजा जयाजीराव या बायजाबाई के साथ भाग गए थे, उनकी संपत्ति जब्त कर ली गई।

तीन जून सन् १८५८ ईसवी को रावसाहब ने महाराजा जयाजीराव के महल में शानदार दरबार किया।

रावसाहब के सहायक सरदार, राजनीतिज्ञ और पदाधिकारी आदि

अपने योग्य स्थानों पर खड़े हुए।

तात्याटोपे, सैनिक पदाधिकारी, सैनिक वेश धारण कर दरबार में उपस्थित हुए। रावसाहब पेशवा राजसी पोशाक पहन कर सिर पर सिरपेच और कलगी लगाकर कानों में मोतियों के चौकड़े (कुण्डल)' गले में मोतियों के रत्नों के हार पहन कर चोबदार और बन्दीजनों की मंगल-ध्वनि के साथ दरबार में पधारे।

अधिकारियों के मुजरे स्वीकार करते हुए वह पेशवा के सिंहासन पर विराजमान हुए। सरदारों और जागीरदारों ने रावसाहब पेशवा को नजराने (भेंट) दिए।

रावसाहब ने वस्त्र पोशाक देकर उन सबका यथायोग्य सम्मान किया, सेनापति तात्याटोपे को एक रत्नजटित तलवार भेंट की गई।

नगर में उत्सव मनाए जाने लगे, नाच-गाने के जलसे होने लगे। ब्राह्मणों को भोजन कराकर खूब दक्षिणा दी जाने लगी।

ग्वालियर नगरी में चारों ओर आनन्द, उल्लास, राग-रंग छा गया। रावसाहब उसमें मग्न हो गए। रानी लक्ष्मीबाई और तात्याटोपे राव-साहब को व्यर्थ के उत्सवों में समय नष्ट करते देखकर चिन्तित हुए।

वह जानते थे, अंग्रेज शक्ति संग्रह करके ग्वालियर पर शीघ्र ही आक्रमण करेंगे, यह समय रावसाहब को उत्सवों में, नाच रंग में नहीं खोना चाहिए, शक्ति संग्रह में समय लगाना चाहिए।

रावसाहब से ऐसी बातें कहने का साहस रानी लक्ष्मीबाई ही कर सकीं, उन्होंने रावसाहब से कहा, 'पेशवा साहब, अब आप इन उत्सवों को समाप्त करके युद्ध की तैयारी कीजिए, शत्रु असावधान नहीं है।

पर रावसाहब तो अपने नाच रंग में मग्न थे, आने वाले संकट को उन्होंने तनिक भी नहीं सोचा, रानी लक्ष्मीबाई रावसाहब के इन कार्यों से दुखी थीं, उन्हें संकट सामने दिखाई दे रहा था।

ग्वालियर में क्रान्तिकारियों के हाथों में सभी युद्ध के साधन आ गए थे। ग्वालियर की सहायक सेना शिन्दे की शिक्षित सेना कुल मिलाकर बीस हजार सैनिक थे।

तोपें, बन्दूक, गोले, गोलियाँ, शस्त्रादि अधिक मात्रा में थे। धन की

कमी नहीं थी। युद्ध सामग्री इतनी थी, जिससे वर्षों युद्ध करने पर भी वे समाप्त नहीं होती। आवश्यकता थी, इन सब मिले हुए साधनों का ठीक समय पर सदुपयोग करने की, पर रावसाहब इन साधनों का, अवसर का ठीक समय पर सदुपयोग न कर सके, जिसका परिणाम सफल क्रांतिकारियों को भी भुगतना पड़ा।

ऐसे अच्छे साधन यदि उस समय रानी लक्ष्मीबाई या तात्याटोपे को मिल जाते, सर्वाधिकार इनके हाथों में होता, तो घटनाएँ और ही होतीं।

रानी का अनूठा साहस वीरता, तात्याटोपे की संगठन शक्ति वीरता, अंग्रेजी शासकों के लिए बड़ा भारी संकट बन सकती थीं। रावसाहब अपने उत्सवों में मग्न किसी की बात पर ध्यान नहीं दे रहे थे।

उधर अंग्रेजों में ग्वालियर पर क्रान्तिकारियों के अधिकार से तहलका मचा हुआ था, अंग्रेजी सत्ता डगमगा रही थी। ह्यू रोज कालपी पर विजय प्राप्त करते ही अवकाश लेकर बम्बई की ओर जाने वाला था। मध्य-भारत की सेनापति के पद से वह त्यागपत्र भी दे चुका था।

उसने सुना, ग्वालियर जैसे सभी साधन सम्पन्न राज्य पर क्रान्ति-कारियों ने अधिकार कर लिया है। तब वह बहुत घबराया। क्रान्ति-कारियों का ग्वालियर पर अधिकार जमाना अंग्रेजों के लिए बड़ा भारी संकट है। यह ह्यू रोज समझ चुका था।

उसने त्यागपत्र वापिस ले लिया। गवर्नर-जनरल और प्रधान सेना-पति को तार दिए, ग्वालियर पर आक्रमण करने का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा जाए।

अभी प्रधान सेनापति की आज्ञा उसे नहीं मिली थी, तब भी ह्यू रोज पाँच जून को सेना लेकर ग्वालियर की ओर चल पड़ा।

ग्वालियर पर शीघ्र विजय प्राप्त करने के लिए ह्यू रोज ने ग्वालियर पर एक साथ चारों ओर से आक्रमण की योजना बना ली।

३२

ह्यू रोज बारह जून को अपनी सेना सहित इन्दूर नामक गाँव के निकट पहुँच गया। वहाँ से चलकर उसने पहुज नदी पार की। आगे का मार्ग पहाड़ी था। सैनिकों को आगे बढ़ने में बहुत कठिनाई हुई।

जनरल नेपियर अपनी सेना सहित अवध से आकर इसी स्थान पर ह्यू रोज से मिला।

ह्यू रोज को गुप्तचरों ने सूचना दी, क्रान्तिकारी सेना मुरार के समीप उसकी सेना से लोहा लेने की तैयारी कर रही है। सूचना सुनते ही ह्यू रोज ने तुरन्त ही वहाँ के महत्त्वपूर्ण स्थानों पर अधिकार कर लिया।

जब ह्यू रोज की सेना मुरार के निकट पहुँची, तब रावसाहब को इसका पता लगा। वह अभी तक आनन्दोत्सव में लगे हुए थे। इस सूचना को सुनकर घबरा गए, अंग्रेज सेना मुरार के समीप पहुँच चुकी है।

उन्होंने तुरन्त ही सेनापति तात्याटोपे को बुलाया और अंग्रेज सेना पर आक्रमण करने की आज्ञा दी।

तात्याटोपे मुरार के समीप मोरचेबन्दी करके युद्ध की तैयारी करने लगे। उन्हें दुख था, रावसाहब पहले से यदि युद्ध की ठीक तैयारी कराते तो उन्हें कोई हरा नहीं सकता था।

ह्यू रोज ने एक ओर से घुड़सवार सेना को दूसरी ओर से तोपखाना और अपनी सेना को बढ़ने की आज्ञा दे दी।

अंग्रेज सेना जैसे ही आगे बढ़ी, क्रान्तिकारियों ने उन पर बन्दूकों से गोलियों की बौछार कर दी।

अंग्रेज सैनिकों में हलचल मच गई। उनकी तोपें भी आग बरसाने लगीं। तात्याटोपे के बहुत से वीर सैनिक मारे गए। उसकी सेना पीछे हटने लगी।

अंग्रेज सैनिकों ने उनका पीछा किया, नाले के समीप पहुँचकर क्रान्तिकारी सेना अंग्रेज सैनिकों पर टूट पड़ी। दोनों ओर के सैनिक एक दूसरे पर भयंकर आक्रमण करने लगे। बहुत से वीर मृत्यु की गोद सो गए। लेफ्टिनेंट नीव युद्ध करते-करते घायल होकर मर गया।

अंग्रेज सैनिक घबरा कर पीछे हटने लगे। इसी समय लेफ्टिनेंट रोज एक दल के साथ उनकी रक्षा करने को आ गया, भीषण युद्ध हुआ, क्रान्तिकारियों के बहुत से वीर मृत्युशय्या पर सो गए।

अंग्रेज सेना ने आगे बढ़कर, मुरार की छावनी पर अधिकार कर लिया, और जीत का हर्ष मनाने लगे।

रावसाहब का अब आनन्दोत्सव का नशा उतरा···। मुरार की हार ने उनकी आँखें खोल दीं। घोड़े पर सवार होकर, अब रावसाहब विभिन्न मोरचों का निरीक्षण करने लगे।

विभिन्न मार्गों पर तोपों के मोर्चे तैयार किए जाने लगे। क्रान्तिकारी दल भी जोरदार तैयारी करने लगा।

रानी लक्ष्मीबाई का सुझाव रावसाहब ने नहीं माना था। युद्ध की इसी कारण तैयारी नहीं हो सकी थी; मुरार में हार हो चुकी थी।

रानी लक्ष्मीबाई यह सोचकर बहुत दुखी थी, उन्हें ऐसा अनुभव हो रहा था कि अब अंग्रेजों को पराजित करना बहुत कठिन है। हमारी सेना उनका सामना न कर सकेगी।

तात्याटोपे रानी लक्ष्मीबाई के समीप पहुँचे, और उनसे सेना की व्यवस्था के विषय में राय माँगी, और युद्ध में सहयोग देने की प्रार्थना की।

रानी लक्ष्मीबाई ने उदास होकर तात्याटोपे से कहा, 'हमने उन्हें उचित परामर्श दिया था। पर अपनी हठ के कारण, रावसाहब ने हमारा परामर्श नहीं माना।'

अंग्रेज सेना सिर पर आ पहुँची है। हमारी सेना का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया। ऐसी दशा में अंग्रेजों को हरा कर विजय की आशा करना व्यर्थ है। फिर भी हमें अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। चारों ओर वीर सरदारों को नियुक्त करके अंग्रेज सैनिकों को आगे बढ़ने से रोकें···मैं भी अपना कर्तव्य पूरा करने को तैयार हूँ।

'आपके सुझाव के अनुसार मैं अनुभवी वीर सरदारों को भेज कर अंग्रेज सैनिकों को आगे बढ़ने से रोकने का प्रबन्ध कराता हूँ, तात्याटोपे ने नम्रता से कहा, 'आप ग्वालियर का पूर्वी मोर्चा सभालें।'

'मैं आपके कहे अनुसार पूर्वी मोर्चा संभाल लूंगी' रानी ने लम्बी साँस लेकर तात्याटोपे की ओर देखते हुए कहा, 'मैं अपनी सेना को तैयार करती हूँ, आप भी अपनी सेनाओं को भली प्रकार तैयार करें। अब हमें धीरज नहीं छोड़ना चाहिए, ऐसा लगता है अब यह युद्ध हमारे जीवन का अन्तिम युद्ध होगा।

'ऐसा न कहें रानी साहिबा, हम सब आप से ही प्रेरणा लेकर आगे बढ़ रहे हैं, प्रभु रक्षा करेंगे।'

रानी लक्ष्मीबाई ने तुरत ही सुदृढ़ मोर्चे बनवाए, और सैनिक वेश-भूषा धारण कर हाथ में रत्न जटित तलवार लेकर, घोड़े पर सवार हो, अपने सैनिकों सहित युद्ध भूमि की ओर चल पड़ीं।

रानी लक्ष्मीबाई को देखकर सेना में दोगुना उत्साह जोश भर गया, वे रानी के संकेत पर जीवन न्यौछावर करने को तैयार हो गए।

पहले स्मिथ को रानी लक्ष्मीबाई की सेना से युद्ध करने को भेजा गया, मेजर ओर का दल आँतरी में उससे आकर मिल गया।

सत्तरह (१७) जून को स्मिथ अपने दलबल सहित कोटा की सराय जा पहुँचा, वहाँ से यह स्थान ग्वालियर से लगभग पाँच मील था।

दूर से ही उसे घुड़सवार और पैदल सैनिक दिखाई देने लगे।

रानी ने बहुत चतुराई से अपने व्यूह की रचना की थी। स्थानीय परिस्थितियों का ध्यान रखकर रानी ने मोर्चे बनाए थे। आसपास की पहाड़ियों पर तोपें लगवाई थीं।

स्थान-स्थान पर बन्दूकधारी सैनिक नियुक्त किये थे। सबसे आगे रानी की वीर सेना थी, उनके पीछे घोड़ों के रिसाले और पैदल सेना थी।

स्मिथ ने रानी के दृढ़ मोर्चों को देखा, उसके सामने आगे बढ़ने में कठिनाई थी, ऊँची नीची भूमि, कहीं नाले मार्ग में रुकावट बने हुए थे।

स्मिथ ने थोड़ी देर सोचा, और रानी की सेना पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा, स्मिथ की सेना को देखते ही रानी के तोपखानों ने उन पर गोले बरसाने आरम्भ कर दिए।

अनेक अंग्रेज सैनिक मारे गए, उसी समय कर्नल रेन्स ने नाला पार करके रानी की सेना के पिछले भाग पर आक्रमण कर दिया। स्मिथ सामने से आक्रमण कर रहा था।

रानी लक्ष्मीबाई की सेना पर दोनों ओर से आक्रमण होने लगा, तब सेना पीछे हटी।

सेना के पीछे हटते ही स्मिथ के घुड़सवार शत्रु सेना को चीरते हुए आगे बढ़ने लगे। रानी हाथ में नंगी तलवार लिए, सेना के अगले भाग में आ पहुँची, और शत्रु सेना पर टूट पड़ी।

क्रान्तिकारी सैनिकों का रानी की वीरता देखकर दोगुना उत्साह बढ़ा,

वह भी शत्रु से लोहा लेने लगे।

स्मिथ ने सैकड़ों सैनिक मोर्चे पर भेज दिए, भयंकर युद्ध हुआ। रानी बिजली की गति से शत्रु सैनिकों को तलवार के घाट उतारने लगी।

दोनों ओर के अनेक सैनिक मृत्यु की गोद में सो गए। अंग्रेज सैनिक पीछे हटने लगे।

मुरार के मोर्चे पर तात्याटोपे और रावसाहब अंग्रेजी सेना का सामना कर रहे थे। अंग्रेजों ने अपने साथ महाराजा जयाजी राव शिन्दे को रखा था। अपने झंडे के साथ, महाराजा का झंडा भी लगाया था।

तात्याटोपे के साथ, जो ग्वालियर की सेना थी, उन्होंने अपने महाराजा को देखते ही तात्याटोपे के कहने से भी उन पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया, कई सैनिक महाराजा जयाजीराव की ओर चले गए।

बड़ी भारी गड़बड़ी फैल गई, मुरार का मोर्चा अंग्रेजों ने अपने अधिकार में कर लिया।

रानी ने सुना तो उसने अंग्रेज सैनिकों पर आक्रमण करने की और भी जोरदार तैयारी कर दी। रानी ने सिर पर चन्देरी साफा, शरीर पर अँगरखा, पैरों में पाजामा पहना, और शानदार घोड़े पर सवार होकर नंगी तलवार हाथ में लेकर उसके साथ-साथ चल पड़ी।

अंग्रेजी सेना प्रबल आक्रमण कर रही थी। रानी ने भी अपने दल सहित उनके आक्रमण का उत्तर दिया।

स्मिथ के तोपखाने रानी की सेना पर गोले बरसाने लगे। इससे बहुत से वीर सैनिक मृत्यु शैया पर सो गए।

रानी की सेना पीछे हटने लगी, अंग्रेजी सैनिकों ने आगे बढ़ कर रानी की दो तोपों और युद्ध सामग्री पर अधिकार कर लिया और रानी की सेना का पीछा करते हुए, रानी के डेरे के समीप पहुँच गए।

रानी थोड़ा विश्राम कर रही थी, थके हुए शरीर को थोड़ा विश्राम भी नहीं मिला, अंग्रेज सैनिक उसके डेरे के समीप आ पहुँचे।

रानी को प्यास लग रही थी, एक प्याला शरबत पीकर दूसरा पीना ही चाहती थी तभी शत्रु के घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई दिया।

रानी ने दामोदरराव को पीठ से बाँधा, हाथों में नंगी तलवार लेकर

घोड़े की रास मुँह से पकड़कर घोड़े को तेज दौड़ा दिया। उसकी सखियाँ और थोड़े से सैनिक रानी के साथ चले, बाकी सैनिक पीठ दिखाकर भाग गए।

रानी लक्ष्मीबाई वीरता से शत्रु सैनिकों से लोहा लेती, घोड़ा दौड़ाती आगे बढ़ी जा रही थी। अंग्रेज सैनिक उनका घिराव करना चाहते थे।

उनकी सखियाँ शत्रु सैनिकों को मृत्यु के घाट उतारती हुई उनके साथ-साथ चल रही थीं।

एक अंग्रेज सैनिक ने मुन्दर पर तलवार से जोरदार प्रहार किया, वह घोड़े से गिर कर स्वर्ग सिधारी, रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज सैनिक पर प्रबल प्रहार करके उसे भी मृत्यु शैया पर सुला दिया।

रानी दोनों हाथों से शत्रुओं पर तलवार से प्रहार करके घोड़ा आगे दौड़ाती जा रही थी। रास्ते में नाला था। रानी ने बहुत यत्न किया, घोड़ा नाले को पार कर जाए।

पर घोड़ा वहीं अड़कर खड़ा हो गया, अंग्रेज सैनिक समीप आ गए, रानी ने कई शत्रु सैनिकों को मृत्यु के घाट उतार दिया। एक अंग्रेज सैनिक ने रानी पर पीछे से प्रहार किया, जिससे रानी का आधा मस्तक कटकर एक आँख बाहर निकल आई। ऐसे कष्ट में भी रानी ने अंग्रेज सैनिक को, तलवार के वार से यमलोक पहुँचा दिया। स्वामीभक्त रामराव देशमुख घायल रानी को उठाकर गंगादास बाबा की कुटिया में ले आया। और रानी को गंगाजल पिलाया···।

रानी लक्ष्मीबाई ने एक बार अपने दत्तक पुत्र दामोदरराव की ओर देखा, और सदैव के लिए सो गईं।

कुटिया के निकट चिता तैयार करके स्वतन्त्रता प्रेमी वीर रानी को उस चिता में रख दिया गया। धू-धू करके ऊँची ऊँची लपटें उठ रही थीं। जो स्वतन्त्रता प्रेमियों को सन्देशा देती प्रतीत होती थीं।

'स्वतन्त्रता के लिए सुख ऐश्वर्य पर ठोकर मारकर जीवन की बलि दे देना। पर पराधीनता स्वीकार न करना।'

रावसाहब, तात्याटोपे, रानी को श्रद्धान्जलि देते हुए रो पड़े। 'रानी झाँसी तुम हमें क्यों छोड़ गईं, हमारी क्रान्ति ज्वाला बुझ गई। गोपाल-

पुर में क्रान्तिकारियों की बनाई योजना असफल हो गई।' पर शत्रु अंग्रेज ह्यूरोज भी रानी की मृत्यु का समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया। उसने अपने साथियों से कहा, 'रानी की शूरवीरता का सिक्का हम मान गए।'

विद्रोहियों में रानी लक्ष्मीबाई, सबसे महान सर्वश्रेष्ठ वीर थीं।

रानी की अन्तिम इच्छा थी, उसके शरीर को शत्रु स्पर्श न करें, और दामोदरराव का लालन-पालन भली प्रकार किया जाए।

वह इच्छा रामराव ने पूरी की, रानी लक्ष्मीबाई का अन्तिम संस्कार करके, रामराव देशमुख, वर्षों तक छिपकर गुप्त रूप से दामोदरराव का पालन-पोषण करते रहे।

दामोदरराव बड़े हुए, तब उन्होंने अपने पिता गंगाधरराव की सम्पत्ति जो छः लाख रुपये थी, अंग्रेज सरकार से दिलवा देने की प्रार्थना की, जो स्वीकार नहीं हुई। ५७ वर्ष की आयु में दामोदरराव २८ मई, १९०६ को स्वर्ग सिधारे···। उनके पश्चात दामोदरराव की जो पेन्शन अंग्रेज सरकार ने बान्धी थी, उनके पुत्र लक्ष्मणराव को सौ रुपये मासिक दी गई।

स्वतन्त्र राष्ट्र, इन स्वतन्त्रता प्रेमी, देश प्रेमियों को श्रद्धान्जली देते हुए उनके शहीद स्मारकों पर पुष्पांजली अर्पण कर, नतमस्तक होता रहेगा, जिन्होंने उसकी स्वतन्त्रता के लिए हँसते-हँसते अपनी बलि चढ़ा दी।

ग्वालियर नगर में स्टेशन के समीप रानी लक्ष्मीबाई की समाधि स्वतन्त्रता प्रेमियों को प्रेरणा दे रही है।

"स्वतन्त्रता के दीवाने, कब संकट से घबराए,
अपने हाथों से ही, हँस हँस के शीश चढ़ाए।"